

राष्ट्रीय नवीन मेल

ज्योत्स कृष्ण पक्ष 12, संवत् 2081

जलटनगंज (मेदिनीनगर), बुधवार, 05 जून 2024, वर्ष-30, अंक-227, पृष्ठ-24

₹3.00

रजिस्ट्रेशन नं: आरएनआई. 61316/94

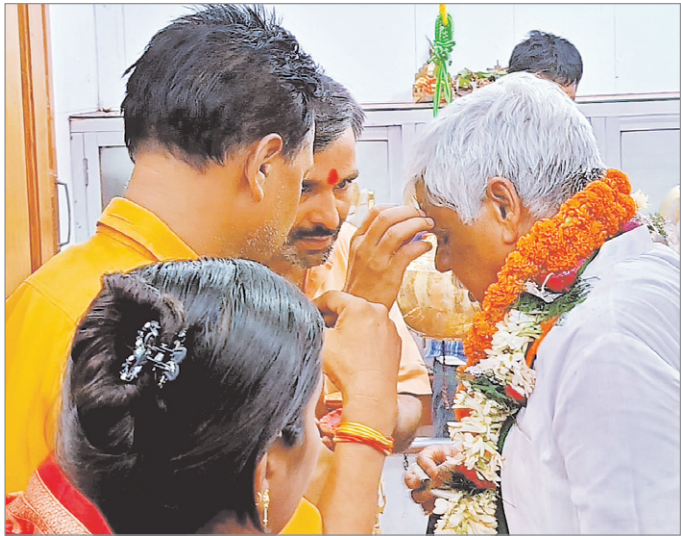
www.rastriyanaveenmail.com

हिंदोरा पीट रहे...

400 पार के नारे के साथ



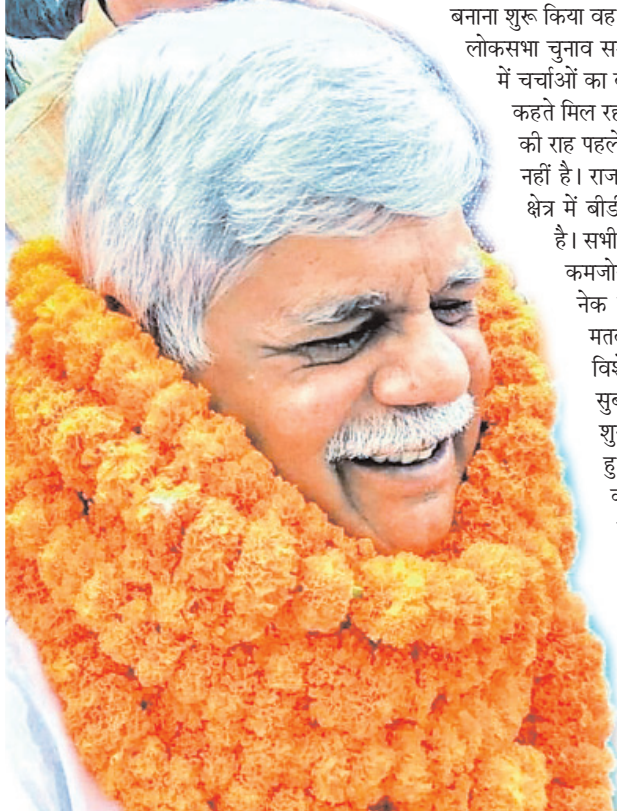
वीडी राम का निकला भव्य जुलूस विभिन्न मंदिरों में टेका माथा



मेदिनीनगर। भाजपा प्रत्याशी विष्णु दयाल राम की जीत पर भाजपा समर्थकों ने विशाल विजय जुलूस निकाला। वीडी राम ने जुलूस के साथ पूरे शहर का भ्रमण कर लोगों का अभार व्यक्त किया। जुलूस में भाजपा कार्यकर्ता एक दूसरे को अबीर गुलाल लगाकर जीत का जश्न मना रहे थे। इस दौरान डीजे के धुन पर भाजपा कार्यकर्ता जमकर थिरके। विजय जुलूस के दौरान रास्ते में जितने भी मंदिर व पूजा स्थल मिला सभी जगहों पर वीडी राम ने पूजा अर्चना कर आशीर्वाद लिया।

विजयी जुलूस के रेड्मा चंद्रेश्वर आजाद चौक पर पहुंचने पर स्थानीय लोगों ने भव्य स्वागत किया। विजय जुलूस में विधायक आलोक चौरसिया, जिलाध्यक्ष अमित तिवारी, श्याम नारायण दुबे, भाजपा के प्रदेश मंत्री मनोज सिंह, पूर्व जिला परिषद उपाध्यक्ष विनोद सिंह, अविनाश वर्मा, शिव कुमार मिश्र, सत्यवान तिवारी, नगर मंडल अध्यक्ष छोटू सिन्हा, महिला मोर्चा जिला अध्यक्ष सीटू गुप्ता, पंकी विश्वकर्मा काफी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद थे।

भाजपा प्रत्याशी वीडी राम का हैट्रिक



नवीन मेल संवाददाता
मेदिनीनगर। पलामू संसदीय क्षेत्र में सारे अनुमानों को ध्वस्त बताते हुए भाजपा प्रत्याशी विष्णुदयाल राम (वीडी राम) ने मतगणना के पहले चक्र से जो बढ़त

बनाना शुरू किया वह अंतिम चक्र तक जारी रहा। लोकसभा चुनाव समाप्त होने के बाद से पलामू में चर्चाओं का बाजार गर्म था। हर कोई यह कहते मिल रहा था कि इस बार वीडी राम की राह पहले दो चुनाव की तरह आसान नहीं है। राजद प्रत्याशी ममता भुइयां हर क्षेत्र में वीडी राम को जोरदार टक्कर दी है। सभी मुंह से भाजपा प्रत्याशी को कमजोर बनाने के साथ मुकाबला नेक टू नेक बताया जा रहा है। मतदान के बाद भाजपा के अंदर विशेष उत्साह था। मंगलवार की सुबह जैसे ही मतगणना के बाद शुरूआती रुझान आना शुरू हुआ वैसे ही भाजपा कार्यकर्ताओं का चेहरा खिलना शुरू हो गया। इसके बाद तो जैसे भाजपा कार्यकर्ताओं में एक नया उत्साह का संचार हो गया। हर चक्र की मतगणना की सामांति के बाद जैसे ही भाजपा प्रत्याशी की आगे होने की घोषणा होती वैसे ही भाजपा समर्थक

वीडी राम जिंदबाद का नारे लगाना शुरू कर देते। इसके विपरीत जैसे जैसे मतगणना में राजद प्रत्याशी पिछती जाती उनके समर्थकों को निराशा छा जाती। मतगणना शुरू होने के बाद कुछ देर तक राजद

कार्यकर्ताओं की मेहनत की जीत : वीडी राम

काउंटिंग हॉल में राष्ट्रीय नवीन मेल से बातचीत में नव निर्वाचित सांसद ने कहा कि यह उनकी नहीं कार्यकर्ताओं की मेहनत की जीत है। कार्यकर्ताओं की मेहनत से ही लगातार तीसरी बार जीतने में सफल रहे हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि एक बार फिर से देश में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में मजबूत सरकार का गठन होगा।

समर्थकों को उम्मीद था कि ममता भुइयां आगे होंगी, लेकिन मतगणना का परिणाम में पिछड़े चले जाने के बाद राजद व इंडिया गठबंधन के सहयोगी दलों का धैर्य भी धीरे-धीरे जवाब देने लगा। तीसरे चक्र की समाप्ति के बाद तो जीएलए कॉलेज के बाहर मौजूद इंडिया गठबंधन की के समर्थक हार मानते हुए वहां से निकलना शुरू कर दिए।

वीडी राम को 770362 वोट ममता को मिले 481555



मेदिनीनगर। पलामू लोकसभा अनुसूचित जाति सुरक्षित सीट पर भाजपा प्रत्याशी विष्णु दयाल राम ने अपने निकटतक प्रतिद्वंदी इंडिया गठबंधन सह राजद प्रत्याशी ममता भुइयां को 288807 वोट से हरा कर जीत का सेहरा बांध लिया। वीडी राम की यह लगातार तीसरी जीत है। वह हैट्रिक लगाने में सफल रहे। वीडी राम कुल 770362 मत मिला, जबकि राजद प्रत्याशी ममता भुइयां को कुल 481555 मत मिला। पोस्टल बैलेट मतों की संख्या 18298 थी।



सुखदेव भगत ने जीत का परचम लहराया

नवीन मेल संवाददाता
गुमला। लोहरदगा (अजजा) लोकसभा क्षेत्र से प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष सह इंडिया गठबंधन के प्रत्याशी सुखदेव भगत ने भाजपा प्रत्याशी समीर उरांव को 139138 मतों से हरा दिया। चुनाव में सुखदेव भगत को कुल 483038 मत मिला, जबकि समीर उरांव को कुल 343900 मत मिला। लोकसभा चुनाव 2024 में कुल 15 प्रत्याशी अपनी किशमत आजमा के साथ अपने-अपने जीत का दावा कर रहे थे। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सह इंडिया गठबंधन के प्रत्याशी सुखदेव भगत



ने अपने व्यवहार कुशलता के कारण चुनाव जीतने में सफलता प्राप्त की। सुखदेव भगत की

पहचान अपने क्षेत्र में सरल, सहज उपलब्धता की रही है। भाजपा ने सिटिंग कैडिडेट सुदर्शन भगत को हटाकर समीर उरांव पर दांव खेल था जो गलत साबित हुआ। भाजपा समर्थकों में लोहरदगा लोकसभा सीट से पूर्व सांसद को प्रत्याशी नहीं बनने को लेकर अंदर खाने में काफी रोष था। भाजपा में आंतरिक विरोध का लाभ सुखदेव भगत को मिला। इस चुनाव में निर्दलीय प्रत्याशी चमरा लिंडा ने 45998 मत मिला। कांग्रेस प्रत्याशी सुखदेव भगत के विजय होने पर जगह-जगह पर मिठाइयां बांटी गईं। इस दौरान जमकर आतिशबाजी भी की गई।

कालीचरण सिंह के सिर बंधा जीत का सेहरा

नवीन मेल संवाददाता
मेदिनीनगर। भाजपा प्रत्याशी कालीचरण सिंह ने लोकसभा चुनाव में शानदार जीत दर्ज कर पहली बार संसद में पहुंचे। कालीचरण सिंह ने कांग्रेस प्रत्याशी कृष्णानंद त्रिपाठी को 220959 मतों से हराया। कालीचरण सिंह को 574556 मत मिला। जबकि उनके निकटतम प्रतिद्वंदी कृष्णानंद त्रिपाठी को 353597 मत मिला। तीसरे नंबर पर निर्दलीय प्रत्याशी अमित कुमार सिंह को 31991 मत मिला। जिला निर्वाचन पदाधिकारी रमेश चोलप ने भाजपा के विजयी प्रत्याशी कालीचरण सिंह को जीत के बाद प्रमाण पत्र सौंपा।



इंडिया

सरकार बदलने या मजबूत विपक्ष के लिए चुनाव परिणाम ?



सुनील बादल

एग्जिट पोल के चंद हजार सैपल सर्वे पर आधारित अनुमानों को नकार कर चुनाव परिणाम से इवोएम के माध्यम से चुनाव आयोग ने अपनी विश्वसनीयता बनाए रखी और एंडी एलायंस के अतिआत्मविश्वास को तोड़कर इंडी एलायंस ने मजबूत विपक्ष का संदेश दिया। मोटे तौर पर यह खरगोश और कछुए की दौड़ की कहानी है जिसमें चुनाव पूर्व से ही विशेष रूप से भाजपा के नेताओं के अतिआत्मविश्वास भरे बयानों को विपक्ष को एकजुट किया और रणनीति बनाकर उन्होंने अपने सर्वाधिक मतधिकार का प्रयोग किया जबकि भाजपा बूथ मैनेजमेंट के इस पुराने फागुल्ले पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाई सुत्रों के अनुसार यूपी में अनेक भाजपा समर्थक वोट डालने में उतने तत्पर नहीं थे जितना विपक्ष था। एक बड़ी चुक भाजपा से टिकट बंटवारे को लेकर हुई सबका साथ सबका विकास के नारे के विपरीत अनेक समूहों और समर्पित कार्यकर्ताओं की उपेक्षा हुई। यह विवरण आने के बाद स्पष्ट होगा पर ठाकुर और अल्पसंख्यक टिकट बंटवारे से नाराज थे जिसे दूसरे दलों ने अनेक राज्यों में भुनाया। जनता ने सत्ता परिवर्तन के लिए नहीं, बल्कि मजबूत विपक्ष के लिए जनादेश दिया है, जो एक नई बात है। क्योंकि चाहे 2014 का जनादेश हो या 2019 का, लोगों ने मुख्य विपक्षी पार्टी कांग्रेस को लोकसभा की



कुल सीटों में से 10 प्रतिशत सीटों का भी जनादेश नहीं दिया था, जिससे दोनों लोकसभा में उसका कोई वैधानिक नेता प्रतिपक्ष तक नहीं बन पाया। क्योंकि नेता प्रतिपक्ष बनने के लिए लोकसभा की कुल सीटों में से 10 प्रतिशत सीटें जीतना अनिवार्य होता है। हालांकि, इस बार प्रतीत हो रहा है कि जनता विपक्ष पर भी मेहरबान है और उसे मजबूत बनाने के संकित दे दिए हैं, ताकि वह मजबूती पूर्वक सरकार की पहरेदारी कर सके। चर्चा आम है कि लोगों को मोदी सरकार की संतुष्टिकरण वाली नीतियां तो पसंद हैं, लेकिन कतिपय राजनीतिक व प्रशासनिक मामलों में उनकी मनमानी नापसंद भी है। इसलिए उन्हें थोड़ा कमजोर करते हुए उनके

सामने एक मजबूत विपक्ष देने की कोशिश की है, ताकि दूरगामी व्यापक जनहित की रक्षा की जा सके। स्पष्ट करेंगे तो जनता की यह कतई पसंद नहीं है कि उनके वोट से बनने वाली सरकार सुधार के नाम पर सेना, सरकारी नौकरी और पेंशन योजना पर रोक लगाए। चुनाव के नतीजे कांग्रेस और भाजपा दोनों को यह स्पष्ट संदेश दे रहे हैं कि भारतीय राजनीति में उन्हें यदि प्रासंगिक बने रहना है तो अपनी नीति रीति में व्यापक बदलाव करने होंगे, अन्यथा लोग क्षेत्रीय दलों को आगे बढ़ाएंगे जो कि उनके अरमानों के सच्चे और अच्छे प्रतिबिंब होते हैं। यही वजह है कि पिछले दो लोकसभा चुनावों में मृतप्राय हो चले क्षेत्रीय दल इस बार के लोकसभा चुनाव में पूरी मजबूती

के साथ उभरे हैं और जहां-जहां पर वो कांग्रेस या भाजपा के साथ रहे, वहां पर उन्होंने उन्हें लाभान्वित भी किया है। यह बात एनडीए से ज्यादा इंडिया गठबंधन पर लागू होती है। मोदी का करिश्मा है कि इतने संगठित विरोध के बावजूद वाजपेयी सरकार के साइनिंग इंडिया की तरह उन्हें नकारा नहीं गया बल्कि सीख दी गई। भारत को ऐतिहासिक ऊंचाई पर पहुंचाने वाले मोदी ने बंगाल और दक्षिण भारत में कमल खिलाने का इतिहास रचा है। अभी अविश्वसनीय नीतीश कुमार को इंडी गठबंधन डिप्टी पीएम का ऑफर दे चुका है जिसके बाद तेलगु देशम के पाले में गंद जा सकती है पर नरेंद्र मोदी की सरकार के लगातार तीसरी बार सत्तारूढ़ होते ही वो देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के लगातार तीसरी बार सरकार बनाने के रिकॉर्ड की बराबरी करके इतिहास रच देंगे। कांग्रेस के बाद भाजपा के लिए भी यह बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। यदि इंडी गठबंधन सरकार बनाती है तो उन्हें अपने कठिन चुनावी वायदों को पूरा करने की होगी। अब देखना शेष है कि पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था को तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने के लिए कड़े आर्थिक सुधार जारी रहेंगे या आगामी विधानसभा चुनाव को ध्यान में रखकर मुफ्त पास, मुफ्त अनाज, मुफ्त बिजली जैसी रेवडियां पहले की तरह बांटी जाती रहेंगी।

सरना कोड की आवाज बुलंद करूंगा : सुखदेव भगत

लोहरदगा। संसदीय चुनाव में सुखदेव भगत रिकॉर्ड तोड़ चुनाव जीत कर सांसद बनने का गौरव प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर गुमला काउंटिंग केंद्र में सुखदेव भगत ने बताया कि जनता ने बड़ी जिम्मेदारी मेरे कंधों पर दी है। उन्होंने कहा कि सांसद बन कर सर्वप्रथम सरना कोड की आवाज बुलंद करूंगा। उन्होंने कहा कि मेरी जीत का श्रेय राहुल गांधी के भारत जोड़ो यात्रा और लोकतंत्र बचाने आरक्षण और संविधान बचाने के साथ मोदी शाह की तानाशाही के खिलाफ जाता है। उन्होंने ये भी कहा की राहुल गांधी के सिसई मे आने से कार्यकर्ताओं में अपार उत्साह का संचार हुआ। सरना कोड देने का आश्वासन के कारण भी आदिवासी मूलनिवासी का रुझान कांग्रेस की ओर बढ़ा है। जिसका परिणाम आज मुझे सांसद बनने का गौरव प्राप्त हुआ है। उन्होंने चमरा लिंडा के बारे बताया कि वे आदिवासी समाज के साथ साथ जेएमएम पार्टी के साथ धोखा दिया है। मेरे छोटे भाई हैं लेकिन उन्होंने मर्यादा का



उल्लंघन किया है, जिसकी सजा आम जनता ने सुनाया है और वे अपनी जमानत भी नहीं बचा पाए हैं। इसलिए जहां बहुसंख्यक आदिवासी की अस्मिता और अस्तित्व की बात होती है। वहां कुछ कुबार्नी देना चाहिए था। मैं भी आदिवासी की हितैषी हूं। कांग्रेस भी आदिवासी, पिछड़ा वर्ग तथा अनुसूचित जाति को आरक्षण देकर आगे बढ़ाने हेतु डॉ. भीमराव अम्बेडकर की अध्यक्षता में संविधान बनाया गया था। जिसे बीजेपी वाले 400 सीट लाकर बदलना और आरक्षण समाप्त करना चाहते थे। जिसे यहां की जनता ने नकार दिया है और जुमले वालों को हराने का कार्य किया है।

UDISE Code:- 20020106705 Affiliation No: 3430393 School Code:-66596 | www.stmariams.com



ST. MARIAM'S SCHOOL

शून्य से शिखर तक

Chairman
Avinash Dev

HOSTEL FACILITY AVAILABLE

ST. MARIAM'S SCHOOL
Affiliated to CBSE, New Delhi

A Co-Educational English Medium School 10+2
(In the memory of Sumitra Devi)
Run & Managed by Sumitra Foundation, Registration No. :- 934/24/2012

ADMISSION OPEN for class XI

ADMISSION
+ Form Available

Daltonganj, Palamu, Jharkhand-822101, Contact:- 06562-796343, 9955865321, 9955865193

ST. MARIAM'S SCHOOL

In The Memory of Sumitra Devi | Run & managed by Sumitra Foundation

A Co-Educational English Medium School | Affiliated to C.B.S.E. New Delhi

Our Toppers : 2023 -24 (Class-Xth)

Anshu raj 96.8%	priyatam kumari 94.8%	prashant kumar 94%	Aryan Raj 93.4%
Shailvi Kumari 92.8%	Payal Kri. Gupta 92.4%	Ankit Kumar 92.2%	Ayush Kumar 91.8%
Abhimanyu kr 91.2%	Rohini Kumari 90.8%	Abhay Pd. Gupta 90.8%	Khushboo Soni 90.6%
Yuvraj Singh 90.6%	Ayush Agarwal 90.2%	Subham Kr 90.2%	Pallavi Kri. 90%
			Shubham Gupta 90%

Our Toppers : 2023 -24 (Class-Xiith)

Ankit Raj 93.4%	Sujal Kr. Gupta 92.6%	Rashmi Kri. 84.2%	Aayush Rajan 83.8%	Kishlay Kaushal 82.4%	Divyansh Amrit 80.6%
--------------------	--------------------------	----------------------	-----------------------	--------------------------	-------------------------

SCIENCE (MATH)

Angad Singh 88%	Abhijit Soni 83.2%	Rishikesh Verma 80.4%
--------------------	-----------------------	--------------------------

SCIENCE (Biology)

Anjali Singh 95%	Akanisha Bharti 93.4%	Pratiksha Kri. 92.8%	Priya Kumari 85%	Anshu Kri. 86.8%	Jhalak Raj 82%
---------------------	--------------------------	-------------------------	---------------------	---------------------	-------------------

COMMERCE

Amrit Gupta 91.2%	Ruchi Kri. 85.6%
----------------------	---------------------



विधायक ने गले मिलकर सांसद को दी बधाई

नवीन मेल संवाददाता
मेदिनीनगर। स्थानीय भाजपा विधायक आलोक चौरसिया ने अपने विधानसभा क्षेत्र के लोगों के साथ निर्वतमान सांसद विष्णु दयाल राम को जीत की बधाई दी। पलामू लोकसभा क्षेत्र के भाजपा प्रत्याशी विष्णु दयाल राम तीसरी बार लोकसभा के सांसद के रूप में निर्वाचित होने पर विधायक हर्ष व्यक्त की है। उन्होंने कहा कि विष्णु दयाल राम का कार्य प्रणाली सुलभ जनहित साच रहा है। साथ प्रधानमंत्री

नरेंद्र मोदी के जनहित, जनकल्याण कार्य योजनाओं को देखते हुए पलामू वासीयों ने फिर से देश में नरेंद्र मोदी सरकार की वापसी की ठानी है। उन्होंने कहा कि पूरे पलामू में सबसे ज्यादा मत उनके विधानसभा क्षेत्र से भाजपा को मिला है। भाजपा को वोट पड़ा है। जिसके लिए हम अपने क्षेत्र वासीयों का शुक्रगुजार हैं। यह सिर्फ और सिर्फ केंद्र सरकार को जनकल्याण योजना एवं हमारे सांसद विष्णु दयाल राम के दूर दृष्टि सोच से हुआ है।

यह जीत लोकतंत्र की जीत है : अमित कुमार तिवारी

नवीन मेल संवाददाता
मेदिनीनगर। पलामू भाजपा के जिला अध्यक्ष अमित कुमार तिवारी ने भाजपा प्रत्याशी के जीत पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि यह जीत लोकतंत्र की जीत है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार की जन उपयोगी योजना कार्यकर्ताओं का और जो किया गया प्रयास और समर्थनों के आशीर्वाद के कारण प्रचंड जीत संभव हो पाई है। कार्यकर्ता, समर्थक व मतदाताओं का आभार जिनके स्नेह व आशीर्वाद से पलामू लोकसभा चुनाव बड़ी मार्जिन से भारतीय

जनता पार्टी प्रत्याशी विष्णु दयाल राम तीसरी बार जीत रहे हैं। पलामू लोकसभा चुनाव मतगणना केंद्र के पास मतगणना परिणाम के क्रम में मेदिनीनगर जीएलए कॉलेज के पास लोकप्रिय सांसद विष्णु दयाल राम को सम्मानित किया। इस अवसर पर प्रदेश महामंत्री मनोज कुमार सिंह, डाल्टनगंज विधायक आलोक कुमार चौरसिया, श्याम नारायण दुबे, विनोद कुमार सिंह, विपिन बिहारी सिंह, विनय लाल, अलखनाथ पांडे सहित बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता समर्थक उपस्थित रहे।

कांग्रेस ने भी पलामू सीट पर छह बार जीत का परचम लहरा चुकी है

बीडी राम का हैट्रिक, भाजपा का सिकसर

कुंदन सिन्हा
मेदिनीनगर। भाजपा प्रत्याशी विष्णु दयाल राम ने लोकसभा चुनाव 2024 का चुनाव जीत कर इतिहास रच दिया। इस जीत के साथ बीडी राम 2014, 2019, 2024 में जीत दर्ज कर हैट्रिक लगाने में सफल रहे। उन्होंने अपने पार्टी के ही पूर्व सांसद ब्रजमोहन राम के रिकार्ड की बराबरी कर ली है। इससे पूर्व ब्रजमोहन राम ने भी 1996, 1998, 1999 में लगातार तीन बार जीत दर्ज कर हैट्रिक लगायी



कांग्रेस की बराबरी कर ली। इससे पूर्व कांग्रेस भी छह बार इस सीट से विजयी पताका फहरा चुकी है। भाजपा आजादी के बाद से अब तक हुए चुनाव में सबसे अधिक छह बार चुनाव जीतने में सफल रही। पलामू संसदीय क्षेत्र झारखंड में अनुसूचित जाति के लिए एकमात्र आरक्षित सीट है। बिहार व छत्तीसगढ़ की सीमा से सटे पलामू लोकसभा सीट पिछले कई दशकों से नक्सल प्रभावित क्षेत्र रहा है। हालांकि पिछले कुछ महीनों से बूढ़ा पहाड़ व अन्य क्षेत्रों में माओवादियों का प्रभाव कम हुआ है।

बीडी राम व ब्रजमोहन राम के तीन-तीन बार चुनाव जीतने के साथ भाजपा के खाते में छह चुनाव जीतने का रिकार्ड दर्ज हो गया। भाजपा अब

पलामू में अब तक जीते दल

पलामू लोकसभा क्षेत्र 1952 में अस्तित्व में आया था। यहां पहले कांग्रेस का दबदबा रहा, लेकिन 1991 से भाजपा का प्रभाव बढ़ा और 2004 व 2007 को छोड़कर हर चुनाव में जीत भाजपा के खाते में गई। भाजपा ने पलामू सीट पर छह बार (1991, 1996, 1998, 1999, 2014, 2019, 2024) जीत हासिल की। कांग्रेस (1952, 1957, 1967, 1971, 1980, 1984) जीत मिली। झामुमो को एक बार (2009), राजद दो बार (2004, 2007) में जीत मिली। 1962 में स्वतंत्र पार्टी उम्मीदवार ने सफलता हासिल की। पलामू लोकसभा सीट में 60 प्रतिशत ग्रामीण व 40 प्रतिशत शहरी मतदाता हैं। वहीं अनुसूचित जाति 14 प्रतिशत व अनुसूचित जनजाति 25 प्रतिशत हैं। अन्य महत्वपूर्ण समुदायों में यादव, कुर्मी, भूमिहार, ब्राह्मण और मुस्लिम शामिल हैं।

पलामू लोकसभा सीट में 60 प्रतिशत ग्रामीण व 40 प्रतिशत शहरी मतदाता हैं। वहीं अनुसूचित जाति 14 प्रतिशत व अनुसूचित जनजाति 25 प्रतिशत हैं।

नवीन मेल की कैमरे ने देखी मतगणना का दृश्य



मतगणना स्थल पर सुरक्षा का जायजा लेती पलामू एसपी रीष्मा रमेशन



मतगणना स्थल पर उपस्थित मतगणनाकर्मी



मतगणना के दौरान एजिट पोल पर नजर बनाए भाजपा पदाधिकारी



स्ट्रांग रूम से इवीएम ले जाते मतगणना कर्मी



मतगणना स्थल पर कर्मियों की जांच करते पुलिस के जवान

एक नज़र

रक्त पट्ट संग्रह फाइलेरिया कार्यक्रम की हुई शुरुआत बरवाडीह। रात्रि फाइलेरिया मरीजों के ब्लड सर्वे कार्य का शुभारंभ किया गया।जिसमे प्रखंड क्षेत्र के आदर्शनगर में गढ़वाटाड़ मे लगभग 150 लोगों का ब्लड सैम्पल लिया गया। इस सम्बंध में चिकित्सा पदाधिकारी डॉ। जयवंत लकड़ा ने बताया कि रात्रि रक्त पट्ट संग्रह एनबीएस फाइलेरिया कार्यक्रम का आयोजन एक जून से 10 जून तक बरवाडीह प्रखण्ड क्षेत्र के सेंट्रीमेंट साइट रेंडम साइट पर किया जाना है। इसके अंतर्गत 20 वर्ष से ऊपर आयु के लोगों का रक्त संग्रह रात्रि आठ बजे से बारह बजे तक होना है। इसके आधार पर लोगों में फाइलेरिया के माइक्रो फाइलेरिया का पता किया जा सकेगा। जिससे प्रखंड स्तर पर विशेष उपचार एवं लोगों में फैल रही बीमारी की रोकथाम में विभाग को विशेष लाभ मिलेगा।वही मौके पर एमटीएस रविकांत सिंह, ड्रेसर राजेश चन्द्र सिन्हा उर्फ बबलू ,सोएचओ आभा कुमारी एमपीडब्ल्यू युवराज सिंह,गुलाम सरवर,दिलकेश्वर राम बीटीटी श्याम सुंदर यादव,एलटी मनोरंजन कुमार स्वेता कुमारी सहिया लालमुनी देवी बिमला देवी मौजूद रहे।

बारेसाढ़ में 15 बोरी बीड़ी पता जल्ल, चार पर मामला दर्ज

गारू (लातेहार)। गारू प्रखंड के बोरसाढ़ वन क्षेत्र अंतर्गत तिसिया जंगल से 15 बोरा अवैध बीड़ी पत्ता वन विभाग ने सोमवार को जब्त किया। वहीं अवैध बीड़ी पत्ता कारोबार में शामिल बोरसाढ़ वन विभाग के टेकर गाई बलराम यादव समेत चार लोगों पर वन अधिनियम के तहत मामला दर्ज की गई। इस संबंध में रंजर तरुण कुमार सिंह ने बताया कि वन विभाग का टेकर गाई अवैध रूप से बीड़ी पत्ता कारोबार में सल्लिप पाया गया। इसी के आधार पर वन अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर कार्रवाई की गई है। उन्होंने कहा कि बीड़ी पत्ता कारोबार करने वाले वन माफिया को चिह्नित कर कार्रवाई की जाएगी।

पानी में डूबने से बच्चा हुआ बेहोश



चंदवा। थाना क्षेत्र के जमीरा पंचायत के डुरू गांव के नदी में मामा के साथ नहाने के क्रम में टूटू कुमार नामक बच्चा गहरे पानी में चला गया और डूबने लगा। बच्चे के मामा गोवर्धन गंडू ने बच्चे को पानी से निकाला, तब तक वह बेहोश हो चुका था। आनन-फानन में परिजनों ने उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चंदवा लाया। जहां चिकित्सकों ने बच्चे का प्राथमिक इलाज के बाद रिस्स रेफर कर दिया। परिजनों ने बताया कि बच्चा अभी स्वस्थ है।

लाखों की पैतृक भूसंपदा रेलवे व सीसीएल को देकर दाने-दाने को मोहताज आदिवासी परिवार

भोलेपन व निरक्षरता का फायदा उठाकर बिचौलियों ने की ठगी, ना राशन ना पेंशन, दीवार की ओट में कैसे कटेगी इस बरसात में जिंदगी

नवीन मेल संवाददाता। टंडवा (चतरा)

देश के विकास में अरबों रुपए के राजस्व का योगदान देने वाले विरोधाभासी चतरा जिले की कथित औद्योगिक नगरी टंडवा में निचले पायदान पर रहने वाले वैसे तो दर्जनों लोगों की हालात अब भी बद से बदतर दिखाई देती है। जिनमें ऐसे लोग भी मिलते हैं जिन्हें राज्य सरकार के बहुचर्चित आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम में उनके दरखास्त और फरियादों की अबतक सुध किसी ने नहीं लिया जिससे वैसे जरूरतमंद तंगहाली में गुजर बसर करते दिखाई देते हैं। ऐसे ही



एक फरियादी प्रखंड क्षेत्र के शिवपुर के रहने वाले माधो गंडू पिता झोतर गंडू व उसके भाई तुलेश्वर गंडू की दास्तान से हम आपको रुबर करायेगे, जिसको सुनकर मेरा दावा है आप यहां की स्थिति जानकर घोर विस्मय में पड़ जायेंगे!

लोगों की मानें तो मजदूरी और खेतीबारी से कभी स्वाभिमान की जिंदगी जीनेवाला व्यक्ति लाखों रुपए की अपनी पैतृक भू-संपदा सीसीएल और रेलवे को देकर भी अब दो जून की रोटी के लिए मोहताज है। गुप्तनामी व तंगहाली में वो किसी तरह

जीर्ण-शीर्ण बगैर खपड़ा वाले मिट्टी के दीवार की ओट में गुजर- बसर कर रहा है। बरसात के दिनों में उसका दिन कैसे कटेगा इस सवाल का जबाब वो भगवान के भरोसे टाल देता है। ना सरकारी पेंशन और ना ही मिलता है उसे राशन! एक

बेटी है जिसका विवाह हो जाने के बाद वो भूल बिसर सी गई है। कहता है दो साल पहले ही पत्नी की असामयिक मौत हो गई।बचपन से पूरी जवानी वो मेहनत मजदूरी के लिए दूर- दूर कई राज्यों में प्रवासी श्रमिक बनकर रहा, अब शरीर उसका साथ नहीं देता। बताया जाता है कि जमीन के बदले मिलने वाले लाखों रुपए को उसके निरक्षरता और भोलेपन का फायदा उठाकर कुछ बिचौलियों ने उड़ा लिये।इसकी बेटी भी उसके हालातों को नहीं समझती वो मिले मुआवजे के पैसों की मांग करती है।दरद, दास्तान के हकीकत को वो झूठ समझने से उसे भूल बिसर गई है। यहां तक की सीसीएल, रेलवे व प्रखंड के सरकारी बाबू तथा जनप्रतिनिधि तक उसकी सुध नहीं लेते। उसकी बदतर हालात कोई कुछ दे जाता है।शिवपुर पिकेट में रहने वाले सीआइएसएफ के सुरक्षाबलों ने उसकी सुध लेते हुवे भूख लाने पर खाना देने का भरोसा देकर गये हैं।

आत्महत्या करने वाली युवती का हुआ अंतिम संस्कार

परिजनों ने हत्या कर शव को रेलवे लाइन पर फेंकने का लगाया आरोप

नवीन मेल संवाददाता। बरवाडीह

बरवाडीह। थाना क्षेत्र के खुरा बस्ती के समीप एक युवती सोमवार शाम रेलवे ट्रेक से गुजर रही मालगाड़ी के सामने आकर अपनी जान दे दी। युवती की पहचान खुरा निवासी दिनेश प्रसाद की पुत्री सिपा कुमारी (उम्र 19वर्ष लगभग) के रूप में हुई है। घटना के संबंध में मिली जानकारी के अनुसार सिपा कुमारी का गांव के ही कुंदन यादव के साथ प्रेम प्रसंग था।लगभग डेढ़ वर्ष पूर्व कुंदन यादव उक्त युवती को प्रेम प्रसंग



में गांव से भागा कर ले गया था। इस घटना के बाद नाबालिग के पिता दिनेश प्रसाद ने कुंदन यादव को अपनी बेटी को भागने का मामला दर्ज कराया था। जिसके बाद पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था।आरोपी के जेल से छूटने के बाद प्रेम प्रसंग में सिपा कुमारी

अपना घर छोड़ कर कुंदन यादव के साथ ही रह रही थी। कुंदन यादव का घर खुरा में ही रेलवे लाइन के किनारे है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार घटना के कुछ समय पहले तक मृत युवती सिपा कुमारी अपने प्रेमी कुंदन यादव के घर पर ही थी। लेकिन किसी बात को लेकर वह

अपनी प्रेमिका का घर से सटे रेलवे लाइन से सोमवार शाम गुजर रही मालगाड़ी के सामने आकर अपनी जान दे दी। घटना की सूचना पर बरवाडीह पुलिस घटनास्थल पहुंचकर आवश्यक करवाई करते हुई शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के उपरांत शव मंगलवार को युवती के परिजनों को भी सौंप दिया।पुलिस को घटना स्थल से एक सुसाइड नोट भी बरामद हुआ है।वही इस संबंध में बरवाडीह थाना प्रभारी राधेश्याम कुमार ने बताया कि मृत युवती के माता बबिता देवी ने पुलिस

को लिखित शिकायत देते हुई अपनी बेटी को कुंदन यादव व उनके अन्य परिजनों द्वारा हत्या कर शव को रेलवे लाइन में फेकने का आरोप लगाया है। मामले में अनुसंधान किया जा रहा है,और सभी पहलुओं पर जांच किया जा रहा है।वही शव का पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मामले से पर्दा उठ पाएगा।इस बीच पुलिस द्वारा पोस्टमार्टम के उपरांत उसके शव को परिजनों को सौंप जाने के बाद मृत युवती का अंतिम संस्कार मंगलवार को खुरा शमशान घाट में किया गया।

पारा गिरा, गर्मी से राहत

बरवाडीह। बरवाडीह में मौसम का मिजाज बदलने से तापमान में गिरावट आई है। सोमवार को बरवाडीह का पारा 37 डिग्री सेल्सियस था। इससे लोगों को भीषण गर्मी से कुछ राहत मिली है। रविवार की रात से ही मौसम कुछ ठंडा हुआ है। हालांकि बारिश नहीं हुई है, लेकिन आसमान में बादल छाने और लू में कमी आने से लोगों को कुछ राहत मिला है। पिछले कई दिनों से शरीर को झुलसाने वाली धूप और लू चलने से लोग त्राहि-त्राहि कर रहे थे। लगभग 10 डिग्री पारा गिरने से सोमवार की दोपहर में भी लोग घर से निकलकर जरूरी कामों का निबटारा किया।

वन विभाग ने मंदिर परिसर में चलाया स्वच्छता अभियान

बरवाडीह। बरवाडीह वन विभाग के रंजर अजय टोप्पो के नेतृत्व में वनकर्मियों ने सोमवार को मंदिर परिसर में स्वच्छता अभियान चलाया। वनकर्मियों की टीम ने पहाड़ी शिव-पार्वती मंदिर के अलावे पहाड़ी मां काली मंदिर परिसर में फैले गंदगी की सफाई की। मौके पर रंजर ने कहा कि मंदिर परिसर में सफाई करना पुण्य का काम है। इसी तरह आगे भी स्वच्छता अभियान चलाया जाएगा।



चुनाव परिणाम को लेकर बाजार में रहा सन्नाटा, टीवी-मोबाइल पर चिपके रहे लोग



नवीन मेल संवाददाता। चंदवा

लोकसभा चुनाव मतगणना का परिणाम जानने के लिए सुबह होते ही लोग टीवी व मोबाइल स्क्रीन से चिपके रहे। फल-फल की जानकारी लेने के लिए टीवी के सामने बैठे रहे। चंदवा के विभिन्न प्रतिष्ठानों पर टीवी स्क्रीन पर चल रही खबर को देखने के लिए लोगों की भीड़ जमा रही। इस दौरान लोग चुनाव के संभावित परिणामों को लेकर चर्चा भी करते रहे। विगत दिनों से चले आ रहे चुनाव की खुमारी मंगलवार को परिणाम आने के साथ ही उतरने लगी है। मतदान के बाद जीत-हार के गणित में दिमाग लगा रहे, मतदाताओं के कयासों को भी अब विराम लग गया। लोकसभा चुनावों के परिणामों को लेकर हर वर्ग के लोगों में उत्साह देखा गया। मंगलवार सुबह आठ बजे से ही लोग अपनी टीवी स्क्रीन और मोबाइलों पर चिपके रहे। सबको ताजा रुझानों से सबसे पहले अपडेट होने की उत्सुकता रही। बाजार में अन्य दिनों की अपेक्षा दिन में कोई खास रौनक देखने को नहीं मिली।

कार्डधारियों को दस महीनों से नहीं मिला है राशन

बरवाडीह। बरवाडीह में ग्रीन कार्डधारियों का करीब दस महीने से राशन बाकी चल रहा है। कार्डधारियों को उस राशन के लिए तस्सना पड़ रहा है। राशन वितरण की व्यवस्था इस कदर चरमरा गई है कि कार्डधारियों को एक महीने का राशन लेने के लिए इंतजार करना पड़ रहा है। ऐसी स्थिति कब तक रहेगी, यह कहना मुश्किल सा लग रहा है। विभागीय रिपोर्ट के अनुसार अगस्त 2023 का राशन 2024 मई महीने में ग्रीन कार्डधारियों के बीच वितरण हुआ है। इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि राशन वितरण की कैसी स्थिति है। सितंबर 2023 से राशन वितरण अब तक बाकी चल रहा है। करीब दस महीने का राशन कहां है। यह सोचने का विषय है। बता दें कि सरकार द्वारा जरूरतमंद लोगों को ग्रीन कार्ड बनाने के लिए पूरा तामझाम दिखाया जा रहा है।

न्यूज बॉक्स

नगर पंचायत ने बरगद की टहनियों को हटाया



लातेहार। विगत दिनों आये तेज आंधी व बारिश में शहर के गुरुद्वारा रोड में एक विशालकाय बरगद के पेड़ की टहनियां चबूतरे पर गिर गयी थीं. इसी चबूतरे में सावित्री वट पूजा की जाती है। आगामी छह जून को सावित्री वट पूजा है। नगर पंचायत के नगर प्रशासक राजीव रंजन के निर्देश पर क्षेत्र पर्ववैश्वक रंधीर कपूर मौके पर पहुंचे और मजदूरों से बरगद पेड़ की टहनियों को हटवाया। मौके पर निवर्तमान वार्ड पार्षद संयुक्ता कुंवर भी मौजूद थीं। नगर पंचायत के इस कार्रवाई पर स्थानीय महिलाओं ने नगर पंचायत कर्मियों की प्रशंसा की।

लोहसिंघना गांव में तीन माह से जला है ट्रांसफार्मर, फूटा गुस्सा

प्रतापपुर। प्रखंड को डुमरवार पंचायत के लोहसिंघना गांव में तीन माह से ट्रांसफार्मर जला पड़ा है, जिससे शाम होते ही गांव में अंधेरा छा जाता है. बिजली के अभाव में लोगों को कई तरह की समस्याओं से जूझना पड़ रहा है। भीषण गर्मी में लोगों का हाल बेहाल है। सोमवार को गांव के लोगों ने ट्रांसफार्मर के पास पहुंच कर प्रदर्शन किया और अविलंब ट्रांसफार्मर बदल कर बिजली बहाल करने की मांग की। मौके पर तौहद मियां, सरफराज मियां, मोदी मियां, फूलचंद यादव, काशिफ मियां, तसरिफन बीबी, इनामुल बीबी ने बताया कि ट्रांसफार्मर जलने की जानकारी कई बार बिजली विभाग को दी गयी, लेकिन कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। अविलंब ट्रांसफार्मर नहीं बदले पर उग्र आंदोलन करने की चेतावनी दी। गांव में 200 की आबादी है। इस संबंध में जेई अनिल कुमार ने बताया कि गांव में बिजली कर्मियों को भेजा गया है। जल्द ही नया ट्रांसफार्मर लगा कर बिजली बहाल की जायेगी।

इंडिया गठबंधन से कांग्रेस प्रत्याशी ने जश्न की आड़ में भाजपा कार्यकर्ताओं पर लगाया फायरिंग का आरोप



चतरा। लोकसभा चुनाव 2024 में चतरा लोकसभा सीट से मतगणना के दौरान भाजपा के निर्णायक बृहत के बाद कार्यकर्ताओं द्वारा जश्न मनाने का दौर प्रारंभ हुआ। वहीं इंडिया गठबंधन से कांग्रेस प्रत्याशी केएन त्रिपाठी मतगणना केंद्र में पत्रकारों से बात करते हुए ईवीएम के सील खुले होने आदि का आरोप लगाते हुए कहा कि अभी मतगणना जारी है, जीत जाएं उसके बाद नियमपूर्वक जश्न मनाएं, लेकिन बीजेपी की बृहत पर ही पार्टी कार्यकर्ता जश्न मनाने के साथ फायरिंग की है। जो अच्छा संकेत नहीं है आने वाले समय के लिए। श्री त्रिपाठी ने कहा की इस मामले की शिकायत उपायुक्त से की गयी है।

भाजपाइस्यों ने निकाला विजय जुलूस

चतरा। मंगलवार को चतरा जिला मुख्यालय के अलावे विभिन्न प्रखंडों में पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बीजेपी प्रत्याशी काली चरण सिंह की जीत पर जश्न मनाया। इस दौरान कार्यकर्ताओं में जोश देखते ही बन रहा था। कार्यकर्ता भारत माता की जय, प्रत्याशी के जीतबाद के नारे लगाते हुए जीत की खुशी में एक दुसरे को अबीर गुलाल लगाकर एवं मीठाई खिलाकर खुशी मनाए। इस अवसर पर पार्टी समर्थक सहोत भारी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद थे।

मतगणना केंद्र से पहले काली चरण सिंह पहुंचे मां भद्रकाली के दरबार, की साधना



इटखोरी(चतरा)। मतगणना केंद्र पहुंचने से पूर्व भाजपा प्रत्याशी काली चरण सिंह अपने समर्थकों के साथ इटखोरी माता भद्रकाली मंदिर प्रांगण पहुंचे। यहां वे मंदिर परिवर घंटों जमे रहे। इसके बाद जैसे ही अजेय बढ़त की जानकारी मिली तो श्री सिंह माता रानी के दरबार में पूजा अर्चना कर सीधे चतरा मतगणना केंद्र चतरा कॉलेज चतरा के लिए रवाना हुए। इस दौरान समर्थकों ने श्री सिंह को बधाई दी, तो प्रत्याशी ने भी सभी का अभिवादन किया। मौके पर बड़ी संख्या में बीजेपी कार्यकर्ता व समर्थक मौजूद थे।

वैष्णव दुर्गा मंदिर में स्थायी शीतल प्याऊ का उद्घाटन

लातेहार। शहर के श्री वैष्णव दुर्गा मंदिर में शीतल जल स्थायी प्याऊ (अमृत धारा) का उदघाटन मंदिर समिति के संरक्षक अभिनंदन प्रसाद, विनोद कुमार साहु व अध्यक्ष राजेश कुमार गुप्ता (भोला) समेत अन्य लोगों ने संयुक्त रूप से किया. मंदिर समिति के सचिव आशीष टैगोर ने बताया कि उक्त स्थायी प्याऊ झालदा निवासी स्व विश्वनाथ लोहारीवाला एवं सरवती देवी लोहारीवाला के पुण्य स्मृति में उनकी पुत्री राजेश्वरी देवी महलका (लातेहार) के द्वारा मंदिर समिति को प्रदान किया गया है। मौक पर वैदिक मंत्रोच्चारण पुजारी त्रिभुवन पांडेय व रामेश्वर पांडेय ने किया। मंदिर समिति ने इस पुनित कार्य के लिए लोहारीवाला एवं महलका परिवार के प्रति आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि किसी को पानी पिलाना बहुत ही पुण्य का कार्य है। इस अवसर पर मंदिर समिति के उपाध्यक्ष कन्हई प्रसाद अग्रवाल, बद्री प्रसाद, अशोक दास, सह सचिव रंजीत कुमार व रविंद्र प्रजापति, कोपाध्यक्ष राजू प्रसाद, राजीव कुमार साहू (घंटी), ओमप्रकाश प्रसाद, पिंटू कुमार, सतीष कुमार, आकाश कुमार जायसवाल, निधि कुमारी, समृद्धि कुमारी, मुकेश कुमार, परितोष ठाकुर समेत कई लोग मौजूद थे।

चुनाव परिणाम के पूर्व शांति व्यवस्था बनाने को लेकर पुलिस प्रशासन मुस्तैद

नवीन मेल संवाददाता सेन्हा/लोहरदगा। लोकसभा निर्वाचन आम चुनाव सम्पन्न होने के पश्चात 4 जून मंगलवार को लोहरदगा लोकसभा चुनाव का मतगणना को लेकर सेन्हा थाना क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनाने के लिये जिला प्रशासन के निर्देश पर जगह जगह सुरक्षा व्यवस्था का पुख्ता इन्तिजाम किया गया था। सेन्हा थाना क्षेत्र अन्तर्गत विभिन्न चौक चौराहों पर चुनाव परिणाम के दौरान उपद्रवियों तथा शरारती तत्वों से निपटने के लिए झारखंड पुलिस बल के जवान और गृह रक्षा के जवानों को अरु, सेन्हा, बक्सरीडीपा, कंडरा भड़गांव, कल्लेपाट सहित विभिन्न जगहों पर सुरक्षा व्यवस्था के मद्देनजर तैनात किया गया है। वहीं बताया जाता है कि लोकसभा चुनाव का परिणाम आने के उपरांत तथा मतगणना के क्रम में किसी तरह का हंगामा या



उपद्रव न हो और शांति व्यवस्था कायम रहे। वहीं मतगणना के दौरान सभी लोग अपने अपने घरों में दूरदर्शन और मोबाइल से लोकसभा चुनाव का परिणाम जानने के लिए व्यस्त रहे। लोहरदगा लोकसभा क्षेत्र

से कांग्रेस का परिणाम अच्छा देख विपक्षी पार्टी के कार्यकर्ता सदमे में है और काफी चिंतित हो रहे है। लेकिन अभी भी उम्मीद जताया जा रहा है कि मत वापसी होने की संभावना है। जीत के जश्न में शरारती तत्वों द्वारा शांति भंग न हो जिसको लेकर उपायुक्त डॉ. वाघमारे प्रसाद कृष्ण और पुलिस अधीक्षक हारिश बिन जमा के निर्देश पर सेन्हा थाना क्षेत्र में जगह जगह पर सुरक्षा व्यवस्था का पुख्ता इन्तिजाम किया गया है। जबकि आदेशानुसार प्रशिक्षु एसपी सह थाना प्रभारी वेदांत शंकर सुरक्षा बल के साथ क्षेत्र का भ्रमण कर तैनात पुलिस पदाधिकारी से जायजा लेते हुए आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया।

बड़े भाई ने छोटे भाई पर किया जानलेवा हमला
लोहरदगा। लोहरदगा किस्को थाना क्षेत्र के परहेपाट पंचायत अंतर्गत छतर टोली गांव में बरसात के पानी निकासी को लेकर दो भाइयों के बीच झगड़ा इतना बढ़ गया कि बड़े भाई ने छोटे भाई पर धारदार हथियार से वार कर घायल कर दिया। छोटे भाई सुनील साहू को गंभीर चोट लगी है। इसने आरोप लगाया है कि छतर टोली निवासी उसके बड़े भाई मनोज साहू, उनकी पत्नी रेणु देवी, पुत्र सूरज साहू, सोनू साहू और पुत्री चांदनी देवी ने धारदार हथियार से मारकर उसे घायल कर दिया। सुनील साहू के सिर और दांत में गंभीर चोट लगी है। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र किस्को में इसका इलाज किया गया। जान मारने की नीयत से हमला करने के आरोप में सुनील द्वारा किस्को थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई गई है।

न्यूज बॉक्स

गुरुकुल में पेंटिंग प्रतियोगिता



लोहरदगा। हिंडालको इंडस्ट्रीज लिमिटेड खान प्रभाग द्वारा लोहरदगा स्थित गुरुकुल शांति आश्रम में अस्थिरत ब्रम्हचारियों के बीच विश्व पर्यावरण दिवस 2024 पर पर्यावरणीय पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कुल 62 बच्चों ने प्रतियोगिता में शामिल होकर अनुकरणीय एवं सुंदर प्रस्तुति के साथ पर्यावरण संरक्षण पर पेंटिंग बनाएं। मौके पर हिंडालको पर्यावरण विभाग के अधिकारी आनंद तिवारी एवं अभिलाषा सिंह एवं गुरुकुल के आचार्य मौजूद रहे। श्रेष्ठ पेंटिंग के साथ सभी शामिल प्रतियोगियों को पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया गया। साथ ही पर्यावरण के प्रति सभी बच्चों को जागरूक भी किया गया।

लोहरदगा में फिलपकार्ट के डिलीवरी बॉय ने की हड़ताल



लोहरदगा। ऑनलाइन शॉपिंग प्लेटफॉर्म फिलपकार्ट के डिलीवरी पाटर्नर ने डिलीवरी रेट कम करने के खिलाफ मंगलवार को हड़ताल कर दी। आक्रोशित कर्मचारियों ने लोहरदगा बीआईडी छतर बगीचा गुमला रोड स्थित ई कार्ट कार्यालय के समक्ष धरना देकर सुबह में विरोध जताया। कर्मचारियों ने कहा कि दूसरी कंपनी में कर्मचारियों का वेतन और कमीशन बढ़ाने का नियम है। जबकि फिलपकार्ट डिलीवरी का रेट कम कर रहा है। बढ़ाने की बजाय लगातार घट रहे हैं डिलीवरी रेट लॉकडौन से पहले प्रति पार्सल डिलीवरी करने में उन्हें 17-18 रुपये मिलते थे। बाद में इसे घटाकर 14 रुपये कर दिया गया, और अब डिलीवरी का रेट 07 से 10 रुपये हो गया है, जो कर्मचारियों के साथ अन्याय है। कर्मचारियों ने कहा कि कई वर्षों से काम कर रहे हैं। डिलीवरी रेट बढ़ाने की जगह और घटायी जा रहा है। प्रबंधन द्वारा नया रेट वापस नहीं लेने तक हड़ताल जारी रहेगी। बताया जाता है कि अभी फिलपकार्ट कार्यालय से डिलीवरी कार्य में 40 युवक जुड़े हैं। युवकों ने बताया कर्मचारियों को पेट्रोल भी खुद से भरवाना पड़ता है। मौके पर अश्विनी देव, आकाश कुमार, सुमन कुमार, संतोष कुमार, भगीरथ कुमार, दीपक राम, शुभम, रोहित, सोनू, सद्दाम, मुन्ताजिर, निरंजन, सद्दाम अंसारी, फैजल, फैज, शंकर उरांव, रिजवान, आरिफ, अताउल्लाह, वीरेंद्र, राज खत्री, सूरज मुंडा, सूरज कुजूर समेत अन्य मौजूद थे।

डिलीवरी रेट कम करने से चल रहे थे नाराज, ई-कार्ट कार्यालय के समक्ष दिया धरना

पर्यावरण संरक्षण हम सभी की जिम्मेदारी : राजेश रंजन



पर्यावरणीय जागरूकता के तहत जूट बैग का वितरण

नवीन मेल संवाददाता लोहरदगा। हिंडालको इंडस्ट्रीज लिमिटेड खान प्रभाग द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस पर पर्यावरणीय जागरूकता के तहत लोहरदगा के मैना बगीचा एवं बिशनपुर स्थित साप्ताहिक बाजार में आम जनों के बीच जूट बैग का वितरण किया गया। मौके पर लोहरदगा कलस्टर के महाप्रबंधक राजेश रंजन अंबस्था, अकाउंट हेड अमिताभ चक्रवर्ती, पर्यावरण विभाग की सहायक प्रबंधक अभिलाषा सिंह मुख्य रूप से उपस्थित रहे। मौके

पर महाप्रबंधक राजेश रंजन ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण हम सभी की जिम्मेदारी है। सिंगल यूज प्लास्टिक के थैले के स्थान पर जूट या कपड़े से बने थैले का प्रयोग करें। जूट से बने थैले का वितरण सैकड़ों लोगों के बीच किया गया। इसी तरह दूसरी गठित टीम द्वारा भी बिशनपुर में ग्रामीणों के बीच किया गया। मौके पर प्रबंधक (पर्यावरण विभाग) आनंद तिवारी, विशाल सिंह (लीगल), अजीत सिंह (एचआर), राकेश तिवारी (सीएसआर), देव ज्योति आदि मुख्य रूप से शामिल हुए।

दुष्कर्म का आरोपी गिरफ्तार भेजा गया जेल

गुमला। जिला अंतर्गत स्थित सिसई थाना क्षेत्र के बोंडो पकरीयो गांव निवासी सीताराम प्रधान (47) को सिसई पुलिस ने गिरफ्तार कर मंगलवार को जेल भेज दिया। इस बाबत थानेदार संदीप कुमार यादव ने बताया कि सीताराम प्रधान दुष्कर्म के आरोपी है। इसके विरुद्ध प्रखण्ड के एक युवती ने 2014 में दुष्कर्म का केस दर्ज कराई थी। कोर्ट में इसके विरुद्ध सजा सुनाई थी, सजा के बाद वह फरार चल रहा था,



कोर्ट सीताराम के विरुद्ध कोर्ट ने वारंट जारी किया था। गुप्त सूचना सोमवार को उसे उसके घर में गिरफ्तार किया गया, और जेल भेज दिया गया।

एक नज़र

तमिलनाडु में ले जायी जा रही चार लड़कियों का रेस्क्यू

लोहरदगा। लोहरदगा रेलवे स्टेशन से आरपीएफ ने तमिलनाडु में काम करने के लिए जा रहे चार बालिकाओं का रेस्क्यू किया है। चारों बालिकाओं को रविवार को बाल कल्याण समिति लोहरदगा में प्रस्तुत कर होप संस्था कार्यालय परिसर स्थित बालिका गृह छतर बगीचा में रखा गया। सोमवार को चारों बालिकाओं को चाइल्ड हेलपलाइन के द्वारा बाल कल्याण समिति में प्रस्तुत किया गया। बाल कल्याण समिति के सदस्यों के द्वारा बालिकाओं की काउंसिलिंग की गई। इस दौरान बालिकाओं ने अपनी वास्तान सुनाई। बचिचाय घाघरा प्रखंड के गुमला जिला के रहने वाली हैं। बाल कल्याण समिति के निधमानुसार बालिकाओं को चाइल्ड हेलपलाइन के साथ गुमला बाल कल्याण समिति को ट्रांसफर कर दिया गया। इनको आगे की पढ़ाई करने और भविष्य संवारने के लिए प्रेरित किया गया। इसमें बाल कल्याण समिति की सदस्य मनोरमा मिंज, सुशीला कुमारी, पूजा कुमारी, बबोता कश्यप, अतु थाना प्रभारी, चाइल्ड हेलपलाइन, लोहरदगा ग्राम स्वराज संस्थान के संयुक्त प्रयास से बाल व्यापार रोकने में सफलता प्राप्त हुई। गौरतलब है कि लोहरदगा के ग्रामीण क्षेत्रों से गरीब और कम शिक्षित परिवारों की बालिकाओं को फुसलाकर नौकरी-काम दिवाने के बहाने इन्हें दूसरे प्रदेशों में ले जाने का काम सुनियोजित तरीके से हो रहा है। ट्रैफिकिंग एजेंट सक्रिय हैं।

समर क्रिकेट टूर्नामेंट में पेशरार की टीम ने 49 रनों से जीता

नवीन मेल संवाददाता

लोहरदगा। क्रिकेट ट्रेनिंग सेंटर के तत्वाधान में समर क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन बीएस कॉलेज क्रिकेट स्टेडियम में किया गया। जिसमें दो मैच खेला गया। पहला मैच पेसरार एवं लोहरदगा के बीच खेला गया। जिसमें पेसरार की टीम टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी। निर्धारित 25 ओवर में पेसरार की टीम 7 विकेट खोकर 190 रन बने। टीम के तरफ से सबसे अधिक कप्तान सुशांत ने 80 रन तथा मनजीत ने 21 और दानिश ने 17 रन बनाए। वहीं लोहरदगा टीम के तरफ से बॉलिंग में मनीष ने 5 विकेट तथा अनस और कृष्णा ने एक-एक विकेट लिए। जवाबी पारी खेलने उतरी लोहरदगा की टीम 20.2 बाल में 10 विकेट होकर 141 रन ही बना सकी। टीम के तरफ से सबसे



ज्यादा अर्जुन ने 45 मिथलेश ने 17 तथा वारिस ने 13 रन बनाए वही पेसरार टीम के तरफ से बोलिंग में सदान ने 4 विकेट शीर्ष ने 3 विकेट लिए। इस मैच को

आसानी से पेसरार की टीम ने 49 रनों से जीत लिया। उसके बाद वही पेसरार टीम के तरफ से बोलिंग में सदान ने 4 विकेट शीर्ष ने 3 विकेट लिए। इस मैच को

फील्डिंग करने का फैसला किया। कैरो की टीम निर्धारित 20 ओवर में 5 विकेट खोकर कर 162 रन बनाए टीम के तरफ से नयन ने 62 नीतीश ने 42 तथा रिजवान ने 15

अचानक आई आंधी ने उजाड़ा गरीबों का आशियाना

नवीन मेल संवाददाता

गुमला। बिशुनपुर प्रखंड अंतर्गत सेरका पंचायत के गढ़वा के केचकी गांव में मंगलवार दोपहर 3:30 बजे अचानक आई तेज आंधी पानी ने उक्त गांव निवासी किसान हरि उरांव एवं राजू खेरवार के घर में लगे एसबेस्टस को उड़ा कर जमीन पर पटक दिया। जिससे एसबेस्टस पूरी तरह चकनाचूर हो गया। इस दौरान घर के सदस्य घर में ही थे हालांकि किसी को इस घटना से चोट नहीं लगा। परंतु घर में रखे खाद्य सामग्री एवं कई आवश्यक चीज पूरी तरह भीगकर



तहस नहस हो गई। इधर पीड़ित हरि उरांव एवं राजू खेरवार ने बताया कि मंगलवार दोपहर 3:30 बजे के एकाएक अचानक आसपास के क्षेत्रों में मौसम का भिजाज बदला और हम लोग बर्बाद हो गए।

लू लगने से मासूम बच्ची की मौत

पोस्टमार्टम के बाद उक्त शव को परिजनों को सौंप दिया गया

नवीन मेल संवाददाता

गुमला। जिला अंतर्गत स्थित पालकोट थाना क्षेत्र के डहुपानी पंचायत के तेतर टोली नवा टोली गांव की 14 वर्षीय तमना कुमारी पिता संजय नायक की पुत्री को लू लगने से मौत हो गई। बाद में ग्रामीणों ने एक सौ आठ एंबुलेंस को गांव बुलाकर इलाज के लिए पाल के सामुदायिक उप स्वास्थ्य केंद्र लाया गया। जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मृतक बच्ची लोटला हाई स्कूल वर्ग 9 वीं की छात्रा थी। मृतक बच्ची की दादी



ने बताया कि बिते दो दिन पूर्व ही उसे लू लगा था। जिसका गांव में इलाज किया गया था। लेकिन आज मंगलवार को दोपहर तमना कुमारी ठंडा पानी में नहाने गयी थीं। उसी समय इसका तबियत खराब हुआ और एकाएक उसकी स्थिति काफी गंभीर हो गई, 108 एंबुलेंस को फोन कर बुलाया गया और उसे

पालकोट सामुदायिक उप स्वास्थ्य केंद्र इलाज के लिए ले जाया गया जहां अस्पताल के चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। इधर पालकोट थाना प्रभारी मो. जहांगीर पालकोट अस्पताल पहुंच कर यूडी केस दर्ज करते हुए उक्त शव को पोस्टमार्टम हेतु गुमला सदर अस्पताल स्थित पोस्टमार्टम हाउस

आस्था

मनोकामना सिद्धि दुर्गा मंदिर का द्वितीय वर्षगांठ

भव्य कलश यात्रा निकाली, श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी

नवीन मेल संवाददाता

लोहरदगा। शहरी क्षेत्र के बरवा टोली स्थित मनोकामना सिद्धि दुर्गा मंदिर के द्वितीय वर्षगांठ के अवसर पर भव्य कलश यात्रा निकाली गई। कलश यात्रा सिटियो कोयल नदी से शुरू हुई जहाँ नदी तट पर सैकड़ों की संख्या में महिलाएं और किशोरियों ने कलश में जल लेकर पैदल लगभग 5 किमी तक चलकर मंदिर परिसर पहुंची। इस दौरान भक्ति गीतों और जयकारों से परिवेश गुंजता रहा। काफी संख्या में भक्त कलश यात्रा के साथ चल रहे थे। पुरोहित जयशंकर मिश्रा, उत्तम शास्त्री सहित अन्य पुजारियों द्वारा विधिवत पूजा अर्चना कर कलश यात्रा प्रारंभ कराया गया। कलश यात्रा सिटियो कोयल नदी से शुरू होकर सरेंगहातु होते हुए मंदिर परिसर तक श्रद्धालु पहुंची। सीटियो कोयल नदी से मंदिर परिसर तक भगवा झंडे से सजाया गया था। लोग हाथों में भगवा ध्वज लिए चल रहे थे वहीं पुरोहितों के लिए अलग से जीप वाहन की व्यवस्था की गई थी। मंदिर कमेटी की ओर से ग्रामीण क्षेत्रों से आनेवाले श्रद्धालुओं के लिए वाहनों की भी व्यवस्था की गई थी। श्रद्धालुओं की हर सुविधा का ध्यान मंदिर कमेटी ने रखा था। मंदिर पहुंचने के उपरांत शर्बत, पानी, फल आदि की व्यवस्था की गई थी। वहीं श्रद्धालुओं की सुरक्षा को लेकर कमेटी की ओर से विशेष तैयारियां किया गया था। सड़क किनारे दोनो ओर कमेटी के लोग घेरा बनाये चल रहे थे। इधर मंदिर समिति अध्यक्ष रमेश साहू ने बताया कि मंदिर का



द्वितीय वार्षिकोत्सव भव्य और ऐतिहासिक हो रहा है। इसकी तैयारियों को लेकर समिति के पदाधिकारी, संरक्षक व सदस्य दिन रात जुटे हुए थे। कहा कि पूरे विश्व मे एक मात्र प्राचीनतम धर्म कोई है तो वह है सनातन धर्म। इस धर्म को आत्मिक



पूजन करने वाला कोई देश है तो वह है एकमात्र भारत देश। यह कहना तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं होगी कि अपना देश व धर्म की रक्षा हेतु सनातन समाज काफी मे एक मात्र प्राचीनतम धर्म कोई है तो वह है सनातन धर्म। इस धर्म को आत्मिक



कलश यात्रा में उमड़ी भीड़ को देखते हुए सुरक्षा व्यवस्था को लेकर पुलिस प्रशासन मुस्तैद दिखाई दिए। हर चौक चौराहों पर पुलिस के जवान मौजूद थे। सुरक्षा व्यवस्था चाक चौबंद थी। गौरतलब है कि लोहरदगा जिला में विगत कुछ समय से

सनातन समाज में धर्म को लेकर जो समर्पण और गम्भीरता देखने को मिली है, वह केवल लोहरदगा जिला ही नहीं सम्पूर्ण देश में यह मिशाल के रूप में प्रस्तुत करने योग्य बात है। आज लोहरदगा जिला के सनातन समाज को केवल इतना जानकारी हो जाना चाहिए कि आज किसी स्थान या मुहल्ले में मंदिर का नवनिर्माण करने हेतु सहयोग की जरूरत है या फिर जीर्णोद्धार की आवश्यकता, सनातन समाज बिना एक पल गवांप तुरंत सहयोग हेतु अपना तन, मन व धन के साथ आगे आ जाती है। उदाहरण स्वरूप मुक्तिधाम का जीर्णोद्धार, मनोकामना शिव मंदिर का नवनिर्माण व धूम धाम के साथ भव्य तरीके से प्राण प्रतिष्ठा होना है। लोहरदगा जिला के सनातनों की सक्रियता की अलग ही कहानी परिलक्षित कर रही है।

पहली चुनौती में आयरलैंड को मात देने उतरेगा भारत



एजेंसी। न्यूयॉर्क टी20 विश्व कप 2024 में भारत का पहला मैच आयरलैंड के खिलाफ बुधवार को न्यूयॉर्क में होगा। यह मैच भारतीय समयानुसार शाम आठ बजे शुरू होगा। यह दोनों टीमों के बीच कुल नौवां मुकाबला होगा। अब तक हुए आठ भारत-आयरलैंड मुकाबलों में भारत ने सात मुकाबले जीते हैं, जबकि एक मैच रद्द रहा है। वहीं टी20 विश्व कप में दोनों टीमों एक बार भिड़ी हैं, जिसमें भारत को ही जीत मिली है। भारतीय टीम एक बार 2007 में टी20 विश्व कप जीत चुकी है, वहीं आयरलैंड की टीम 2009 में सुपर-8 में पहुंची थी। टी20 विश्व कप 2022 में भारतीय टीम को सेमीफाइनल में हार मिली थी, जबकि आयरलैंड की टीम सुपर-12 में बाहर हो गई थी।

हालिया फॉर्म

भारतीय टीम ने इस साल की शुरूआत में आखिरी बार कोई टी20 मैच सीरीज खेली थी, जिसमें भारतीय टीम ने

अफगानिस्तान को 3-0 से हराया था। हालांकि भारत के सभी खिलाड़ी दो महीने का आईपीएल खेल कर आ रहे हैं और फिलहाल टी20 की लय में हैं। भारत ने विश्व कप से पहले एकमात्र अभ्यास मैच में बांग्लादेश को 60 रन से हराया था। वहीं आयरलैंड की बात की जाए तो आयरलैंड ने मई 2024 में स्कॉटलैंड और आयरलैंड के खिलाफ एक त्रिकोणीय सीरीज खेली थी, जिसमें वह चार मैचों में अजेय होते हुए विजेता बनी थी। इसके पहले उन्होंने पाकिस्तान को भी तीन मैचों की सीरीज के दौरान एक मैच में हराया था। हालांकि यह सीरीज पाकिस्तान ने 2-1 से जीती थी।

प्रमुख खिलाड़ी

विराट कोहली टी20 विश्व कप के सबसे सफल बल्लेबाज रहे हैं। उन्होंने 25 विश्व कप पारियों में सर्वाधिक 1141 रन बनाए हैं। इस दौरान उनका औसत भी 81.5 का रहा है, जो कि टूर्नामेंट के इतिहास में कम से कम 400 रन बनाने वाले बल्लेबाजों में

टी20 विश्व कप होगा द्रविड़ का टीम इंडिया के साथ अंतिम कार्यकाल

न्यूयॉर्क। भारतीय टीम के मौजूदा मुख्य कोच राहुल द्रविड़ ने यह साफ कर दिया है कि वो टी20 विश्व कप के बाद इस पद को अलविदा कह देंगे। अब सवाल ये है कि राहुल द्रविड़ को रिप्लेस कौन करेगा?, जिसका जवाब मेगा-इवेंट के बाद मिल सकता है। भारत के मुख्य कोच के रूप में राहुल द्रविड़ का कार्यकाल नवंबर में टी20 विश्व कप 2021 के बाद शुरू हुआ था और वनडे विश्व कप 2023 के साथ समाप्त हुआ था। लेकिन उनके कार्यकाल को अगले छह महीने यानी टी20 विश्व कप तक बढ़ा दिया गया। 13 मई को बोसीसीआई ने आधिकारिक तौर पर अगले भारतीय पुरुष टीम के मुख्य कोच के पद के लिए आवेदन आमंत्रित किए और 27 मई तक आवेदन की अंतिम तिथि तय की। नए भारतीय पुरुष मुख्य कोच को जुलाई 2024 से दिसंबर 2027 तक तीनों प्रारूपों के लिए नियुक्त किया जाएगा।



सर्वाधिक है। इसके अलावा उनके नाम 25 पारियों में 14 विश्व कप अर्धशतक हैं, जो कि फिर से विश्व में सर्वाधिक है। हालांकि यह देखना दिलचस्प होगा कि विराट कहां बल्लेबाजी करेंगे। हाल ही में संपन्न हुए आईपीएल में वह आरसीबी की तरफ से ओपनिंग करते हुए नजर आए थे, जहां पर वह टूर्नामेंट में सर्वाधिक रन बनाकर ऑरेंज कैप विजेता बने थे। टी20 अंतर्राष्ट्रीय मैचों की बात करें तो कोहली ने नौ टी20 अंतर्राष्ट्रीय मैचों में ओपनिंग की है, जिसमें वह 57 की औसत और 161 के स्ट्राइक रेट से रन बनाते हैं। इसमें दो अर्धशतक और एक शतक भी शामिल है। लेकिन कोहली ने टी20 में अधिकतर तीन नंबर पर

बल्लेबाजी की है, जहां वह 54 की औसत से 3000 से अधिक रन बना चुके हैं। वहीं आयरलैंड की बात करें तो जॉश लिटिल की अगुआई में उनके तेज गेंदबाज उनके प्रमुख हथियार होंगे, जहां स्पिनर्स जॉर्ज डॉकरेल और गैरेथ डेलनी उनका सहयोग करेंगे। पिछले टी20 विश्व कप के बाद से आयरलैंड की 70 फीसदी गेंदबाजी तेज गेंदबाजों ने की है वहीं स्पिनर्स डॉकरेल और डेलनी की खास बात है कि वे लोग गेंदबाजी के साथ-साथ गेंद के अच्छे स्ट्राइकर भी हैं। डेलनी पिछले विश्व कप के बाद से 155 के स्ट्राइक रेट से रन बना रहे हैं, वहीं डॉकरेल मध्य ओवरों में स्पिनरों के खिलाफ 154 के स्ट्राइक रेट से रन बनाते हैं।

धोनी के अंदाज में केदार जाधव ने लिया क्रिकेट के सभी प्रारूपों से संन्यास

एजेंसी। नई दिल्ली भारतीय क्रिकेट टीम के बल्लेबाजी ऑलराउंडर केदार जाधव ने सभी प्रारूपों से संन्यास लेने का ऐलान किया है। इसकी जानकारी उन्होंने सोशल मीडिया के जरिए दी। 39 वर्षीय केदार जाधव ने अपने फैसले की घोषणा करने के लिए सोशल मीडिया का सहारा लिया। उन्होंने एक वीडियो शेयर किया है, जिसमें किशोर कुमार का गाना 'जिंदगी के सफर में' बैकग्राउंड में सुनाई दे रहा है। इस पोस्ट में उन्होंने अपने करियर यादगार लम्हे शेयर किए। केदार ने दोपहर 3 बजे के करीब संन्यास का ऐलान किया। इस दौरान केदार जाधव ने सभी फैंस का धन्यवाद किया। केदार जाधव ने अपने इंस्टाग्राम पर लिखा, मुझे मेरे करियर में प्यार और सपोर्ट देने के लिए आप सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद। आज 3 बजे के बाद क्रिकेट के हर फॉर्मेट से मुझे रिटायर समझा जाए। जाधव ने 16 नवंबर, 2014 को श्रीलंका के खिलाफ भारत के लिए अपना वनडे डेब्यू किया और 17 जुलाई, 2015 को जिम्बाब्वे के खिलाफ अपना पहला टी20 मैच खेला। 2019 विश्व कप का हिस्सा रहे बल्लेबाजी ऑलराउंडर ने 73 वनडे मैचों में 1389 रन बनाए और 27 विकेट लिए। उन्होंने 9 टी20 मैच खेले, जिसमें उन्होंने 122 रन बनाए और इस दौरान उनका बेस्ट स्कोर 58 रहा। केदार जाधव पिछले कुछ समय से क्रिकेट से दूर थे। न केवल टीम इंडिया बल्कि वो आईपीएल में भी नजर नहीं आए। फिटनेस और खराब फॉर्म के कारण टीम से बाहर रहे इस खिलाड़ी ने कई बार वापसी का प्रयास भी किया लेकिन वो इसमें सफल नहीं हुए। दिलचस्प बात यह है कि जाधव का सोशल मीडिया पोस्ट एमएस धोनी के इंस्टाग्राम पर रिटायरमेंट नोट से काफी मिलता-जुलता है। पूर्व भारतीय कप्तान ने अपने करियर की तस्वीरों का एक स्लाइड शो शेयर किया था, जिसमें बैकग्राउंड में मशहूर बॉलीवुड गाना 'मैं पल दो पल का शायर हूँ' सुनाई दे रहा था।



प्राग्नानंदा ने विश्व चैंपियन डिंग लिरेन को हराकर एक और अपसेट किया



एजेंसी। स्टॉवेंजर (नॉर्वे) भारत के प्रतिभाशाली खिलाड़ी आर प्राग्नानंदा ने सोमवार को नॉर्वे शतरंज टूर्नामेंट में विश्व चैंपियन डिंग लिरेन को हराकर एक और बड़ा उलटफेर किया। यह टूर्नामेंट में उच्च रैंक वाले खिलाड़ियों के खिलाफ प्राग्नानंदा की तीसरी जीत थी। इससे पहले, उन्होंने मैग्नस कार्लसन और फैबियानो कारुआना को हराया था।

नॉर्वे शतरंज ने इस मौके पर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, जीएम प्राग्नानंदा ने विश्व नंबर 1 मैग्नस कार्लसन और विश्व नंबर 2 फैबियानो कारुआना को उनके क्लासिकल गेम में हराया और अब उन्होंने विश्व चैंपियन डिंग लिरेन को उनके आमिगडन गेम में हराया। अन्य क्लासिकल बाजियों में, मैग्नस कार्लसन को हिकारू

नाकामुरा के खिलाफ अपना आमिगडन गेम गंवाना पड़ा। दूसरी ओर, फैबियानो कारुआना और अलरींजा फिरोजा ने अपना आमिगडन गेम ड्रॉ किया। सातवें राउंड के बाद, कार्लसन 13 अंकों के साथ शीर्ष पर बने हुए हैं। वहीं नाकामुरा 12 अंकों के साथ दूसरे स्थान पर हैं, जबकि प्राग्नानंदा 11 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर हैं। प्राग्नानंदा 8वें राउंड में लीडर कार्लसन से भिड़ेंगे। इस बीच, वैशाली 11 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर बनी हुई हैं। अन्ना मुजिचुक 12 अंकों के साथ शीर्ष पर हैं, जबकि जू वेनजुन 11.5 अंकों के साथ दूसरे स्थान पर हैं।

एजेंसी। पेरिस

वर्ल्ड नंबर-4 एलेक्जेंडर ज्वेरे ने सोमवार को वर्ल्ड नंबर-13 होलगर रूण की कड़ी चुनौती को चार घंटे और 11 मिनट में पार कर फ्रेंच ओपन के क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। जर्मन खिलाड़ी ने शुरूआती मुकाबले में पिछड़ने के बाद कमबैक करते हुए 21 वर्षीय डेन को रोला गैरो में लगातार तीसरे क्वार्टर फाइनल में पहुंचने से रोका और मंगलवार को स्थानीय समयानुसार सुबह 1.40 बजे (भारतीय समयानुसार सुबह 5:10 बजे) मैच में 4-6, 6-1, 5-7, 7-6(2), 6-2 से जीत दर्ज की।



ज्वेरे ने लगातार तीन सेट जीतकर पेरिस क्वार्टर फाइनल में लगातार चौथे और पिछले सात वर्षों में छठी बार जगह बनाई।

जीत के बाद ज्वेरे ने कहा, मुझे क्वार्टर फाइनल में पहुंचकर गर्व है। मैंने पिछले तीन दिनों में कुल साढ़े आठ घंटे खेले हैं, इसलिए मुझे एक ब्रेक की जरूरत है। मुझे क्वार्टर फाइनल मैच के लिए तैयार होने के लिए हर संभव प्रयास करना होगा, क्योंकि टूर्नामेंट अभी खत्म नहीं हुआ है और मैं इसे जारी रखना चाहता हूँ। 10 मैचों की जीत की लय में अब उनका अगला मुकाबला ऑस्ट्रेलिया के नंबर 11 सीड एलेक्स डी मिनौर से होगा, जिन्होंने सोमवार को पांचवीं सीड डेनियल मेदेवेदेव को 4-6, 6-2, 6-1, 6-3 से हराया था। इससे पहले सोमवार को लगातार तीसरे साल, कैस्पेर रूड ने टेलर को 7-6(6), 3-6, 6-4, 6-2 से हराकर रोलां-गैरो के क्वार्टर

फाइनल में जगह बनाई।



लोकसभा चुनाव की मतगणना के बीच शेयर बाजार में भारी गिरावट



संसेक्स 2,713 अंक फिसला

एजेंसी। मुंबई

आमतौर पर शुभ माना जाने वाला मंगलवार चार जून को शेयर बाजार के निवेशकों के लिए अशुभ साबित हुआ। इस दिन शेयर बाजार में चार साल की सबसे बड़ी गिरावट दर्ज की गई। इससे निवेशकों ने एक ही सत्र में करीब 30 लाख करोड़ रुपये गंवा दिए। बीएसई बेंचमार्क संसेक्स 1,544 अंक या 2.02 प्रतिशत और एनएसई निफ्टी 491 अंक या 2.11 प्रतिशत की गिरावट के साथ खुला। सुबह 9:30 बजे तक संसेक्स 2,713 अंक या 3.55 प्रतिशत गिरकर 73,755 अंक और निफ्टी 838 अंक या 3.65

प्रतिशत फिसलकर 22,414 अंक पर था। निफ्टी मिडकैप 100 इंडेक्स 1,466 अंक या 2.75 प्रतिशत गिरावट के साथ 51,816 अंक और निफ्टी स्मॉलकैप 100 इंडेक्स 542 अंक या 3.18 प्रतिशत की गिरावट के साथ 16,555 अंक पर था। इंडिया विक्स में काफी तेजी देखने को मिल रही है और यह 14 प्रतिशत ऊपर बढ़कर 23.91 अंक पर है। बाजार के सभी इंडेक्स लाल निशान में कारोबार कर रहे हैं। ऑटो, आईटी, पीएसयू इंडेक्स, फिन सर्विस, फार्मा, रिल्ट्यटी, मेटल, एनर्जी, इन्फ्रा, पीएसई और कमोडिटी इंडेक्स 7 प्रतिशत तक फिसल गए हैं। संसेक्स के 30 में से 29 शेयर लाल निशान में कारोबार कर रहे हैं। एनटीपीसी, एस्सीआई, पावर ग्रिड, एलएंडटी, एक्सिस बैंक और एचसीएल टेक टॉप लूजर्स हैं। केवल सन फार्मा का शेयर ही हरे निशान में है।

फिआ की कैरेस ने भारत में महज 27 महीनों में 1.5 लाख कारों की बिक्री का आंकड़ा किया पार

एजेंसी। नई दिल्ली फिआ इंडिया ने भारतीय बाजार में खुद को अच्छी तरह से स्थापित कर लिया है। सेल्टॉस के साथ ही सोनेट के बाद कंपनी की पाँचपुनर 7 सीटर कार कैरेन्स ने महज 27 महीनों में भारत में 1.5 लाख बिक्री का आंकड़ा पार किया है। दिलचस्प बात यह है कि फिआ कैरेन्स के 50 पर्सेंट बायर्स मिड और टॉप ट्रिप्स को पसंद करते हैं, जिनमें सनरूफ, मल्टी ड्राइव मोड्स, वेंटिलेटेड सीट्स और फिआ कनेक्ट समेत काफी सारे आज के जमाने के हिसाब से बेहत जरूरी फीचर्स हैं।

कब हुई थी लॉन्च

फिआ इंडिया ने फरवरी 2022 में कैरेन्स लॉन्च की थी और इसे लाने के पीछे सबसे बड़ी वजह ये थी कि भारत में 7 सीटर कारों की



डिमांड तेजी से बढ़ रही थी। ग्राहकों को मारुति सुजुकी अर्टिगा से थोड़े ज्यादा दाम में ज्यादा स्पेस और फीचर्स वाली गाड़ी देने के मकसद से कैरेन्स को लाया गया था। लॉन्च के बाद से ही कैरेन्स ने खुद को मार्केट में काफी स्थापित कर लिया और आज यह आलम है कि 27 महीने में ही इसने भारतीय बाजार में 1.5 लाख यूनिट बिक्री का माइलस्टोन

हालिस कर लिया। फिआ कैरेन्स की मौजूदा एक्स

शुरूम प्राइस 10.52 लाख रुपये से शुरू होकर 19.67 लाख रुपये तक जाती है।

पेट्रोल मैनुअल वेरिएंट्स की सबसे ज्यादा बिक्री

फिआ कैरेन्स ने अपने आकर्षक डिजाइन और माॅडर्न टेक फीचर्स के साथ फैमिली मूवर सेगमेंट में क्रांति ला दी है, जो विस्तारित परिवारों वाले नए युग के ग्राहकों

के लिए पसंदीदा मोबिलिटी विकल्प बन गया है। विभिन्न विकल्पों में से पेट्रोल पावरट्रेन टॉप चॉइस बनकर उभरा है, जिसकी कुल बिक्री में हिस्सेदारी 57 पर्सेंट है। इसके बाद डीजल पावरट्रेन 43 पर्सेंट के साथ दूसरे स्थान पर है। इसके अलावा मैनुअल ट्रांसमिशन वाले वेरिएंट्स की सबसे ज्यादा 62 पर्सेंट बिक्री होती है। बीते अप्रैल 2024 में कंपनी ने कैरेंस के 6-सीटर वेरिएंट को फिर से लॉन्च किया, जिसे अच्छी प्रतिक्रिया मिली है।

17000 यूनिट एक्सेप्टेंट भी

फिआ इंडिया के चीफ सेल्स और बिजनेस ऑफिसर म्युंग-सिक सोहन का कहना है कि कैरेन्स भारतीयों की पसंदीदा 7 सीटर कार बन गई है।

फजलहक फारूकी का 'पंजा', अफगानिस्तान ने युगांडा को 125 रनों से रौंदा

जॉर्जटाउन (युगाना)। टी20 विश्व कप 2024 का 5वां मैच युगांडा और अफगानिस्तान के बीच खेला गया। अफगानिस्तान ने टूर्नामेंट के पहले ही मैच में बल्ले और गेंद से दमदार खेल दिखाते हुए युगांडा को बुरी तरह हराया। टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने उतरी युगांडा ने हर मोर्चे पर निराशाजनक प्रदर्शन किया। वहीं, अफगानिस्तान ने बल्ले और गेंद दोनों से दमदार प्रदर्शन करते हुए टी20 विश्व कप में जीत के साथ शुरूआत की। अफगानिस्तान ने इब्राहिम जादरान (46 गेंदों पर 70 रन) और रहमानुल्लाह गुरबाज (42 गेंदों पर 76 रन) के बीच 154 रनों की शानदार ओपनिंग साझेदारी की बदौलत 183/5 का मजबूत स्कोर बनाया। अफगानिस्तान के 184 रन के जवाब में युगांडा टीम की बल्लेबाजी पूरी तरह से प्लॉप हो गई। हालांकि, इससे पहले शुरूआत में संघर्ष कर रहे युगांडा के गेंदबाजों ने डेथ ओवरों में वापसी की। लेकिन उनके बल्लेबाजों ने अफगानिस्तान के गेंदबाजों के आगे घुटने टेक दिए। इस चुनौतीपूर्ण टोटल का बचाव करते हुए अफगानिस्तान के लिए फजल हक फारूकी ने अपनी शानदार गेंदबाजी से जीत की नींव रखी। तेज तर्रार गेंदबाज फारूकी ने युगांडा टीम के बल्लेबाजी क्रम की कमर तोड़ दी और अपने स्पेल में मात्र 9 रन देकर पांच विकेट चटकाए। फारूकी का यह प्रदर्शन टी20 विश्व कप में अफगानिस्तान के लिए सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी प्रदर्शन है। साथ ही यह उनके टी20 अंतरराष्ट्रीय करियर और विश्व कप में पहला 5 विकेट है। 183 रन के जवाब में युगांडा की पूरी टीम 16 ओवर में 58 रन पर ढेर हो गई। रियाजत अली और रॉबिन्सन ओबुया के अलावा युगांडा का अन्य कोई बल्लेबाज दहाई अंक तक नहीं पहुंच सका। युगांडा के लिए रॉबिंसन ने सर्वाधिक 14 रन बनाए। फारूकी के अलावा नवीन उल हक और कप्तान राशिद खान ने दो-दो विकेट झटके। युगांडा का विश्व कप में यह पहला मौका था, जिसकी शुरूआत उनके लिए अच्छी नहीं रही।



टेबल टेनिस के पांच दिवसीय समर कैप के तीसरे दिन खिलाड़ियों को सिखाए गए खेल के नियम



गढ़वा। गढ़वा जिला टेबल टेनिस संघ के तत्वाधान में वन विभाग के सामुदायिक भवन में पांच दिवसीय समर कैप के तीसरे दिन 30 खिलाड़ियों ने टेबल टेनिस खेलने के तरीके को जाना (कोच कमलेश कुमार दुबे ने खिलाड़ियों को सर्व प्रथम फिजिकल फिटनेस पर ध्यान देते हुए सभी खिलाड़ियों को खेल से संबंधित व्यायाम कराया इसके बाद नये खिलाड़ियों को रैकेट पकड़ने,टेबल के पास खड़े होने,सर्विस करने, सर्विस को रिसिव करने एवं खेल में एकाग्रता ध्यान आदि के महत्व को बारिकी से समझाया साथ ही पुराने खिलाड़ियों को अपने खेल में सुधार हेतु आवश्यक टीप्स दिये इस अवसर पर सचिव आनंद सिन्हा ने समर कैप में शामिल खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि आप सभी कोच कमलेश कुमार दुबे जो झारखंड टीम का कोच भी रहे हैं , उनके अनुभव का लाभ लेकर आपलोग बेहतर खेल का प्रदर्शन करें और गढ़वा का नाम रोशन करें । गढ़वा के पूर्व खिलाड़ी और संघ के सदस्य संतोष कश्यप ने कहा कि संघ की ओर से टेबल टेनिस को बढ़ावा देने के लिए लगातार प्रतियोगिताओं का आयोजन होते रहा है होता रहा है इस बार समर कैप लगाकर खिलाड़ियों को खेलने का मौका दिया गया है इस तरह का आयोजन से खिलाड़ियों में खेल के सदस्य संतोष कश्यप ने कहा कि संघ पर संघ के पदाधिकारी संतोष सदस्यअभय कुमार, बालिका उच्च विद्यालय के फिजिकल शिक्षक सुशील तिवारी, रामासाहु के फिजिकल शिक्षक प्रदीप कुमार सिंह, सिनियर खिलाड़ी ऋषभ राज सहित कई अभिभावक मौजूद थे



टाटा ऑल्ट्रोज रेसर की बुकिंग शुरू

एजेंसी। नई दिल्ली टाटा ऑल्ट्रोज रेसर की 21000 रुपये टोकन अमाउंट पर भारत में बुकिंग शुरू हो गई है। ऐसे में जो लोग बीते करीब डेढ़ साल से इस देसी प्रीमियम हैचबैक का इंतजार कर रहे थे, उन्हें अब इसे जल्द ही घर लाने का मौका मिलेगा। टाटा ऑल्ट्रोज रेसर को आगामी 7 जून को लॉन्च किया जाना है और इससे पहले काफी सारी जानकारीयां सामने आ गई हैं, जिनमें ये भी है कि इस प्रीमियम हैचबैक को सिर्फ मैनुअल ट्रांसमिशन के साथ पेश किया जा सकता है और इसके 3 वेरिएंट बिक्री के लिए उपलब्ध होंगे। बाद बाकी इसमें क्या कुछ खूबियां लुक-डिजाइन और फीचर्स के स्तर पर हैं, आइए एक-एक करके आपको बताते हैं।

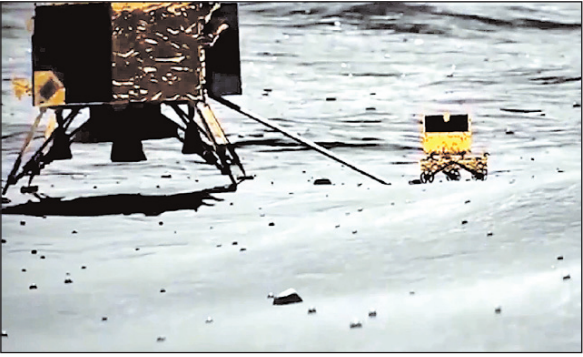
अब तक मिली जानकारी के मुताबिक टाटा मोटर्स की परफॉर्मेंस कैलिब्रेटेड इस प्रीमियम हैचबैक को R1, R2 और R3 जैसे 3 वेरिएंट में पेश किया जा सकता है। बाद बाकी इसमें 3

कलर ऑप्शन मिलेंगे, जो कि एंटीमिफ ऑरेंज, अवेन्यू वाइट और प्योर ग्रे के रूप में हैं। **लुक-डिजाइन और फीचर्स** टाटा ऑल्ट्रोज रेसर का लुक अग्रेसिव और डिजाइन स्पोर्टी है और इसमें जगह-जगह रेसर बैजिंग दी गई है। इसमें आकर्षक ग्राफिक्स, नया बंपर, 17 इंच के अलॉय व्हील्स, ब्लैक रूफ और ओआरवीएस, स्पोर्टी इंटीरियर, ऑल-ब्लैक डैशबोर्ड, एंक्विंट लाइटिंग हुआल टोन सीट्स, 10.25 इंच का टचस्क्रीन इन्फोटेनमेंट सिस्टम, सनरूफ, डिजिटल इंस्ट्रूमेंट पैनल, वायरलेस चार्जर, ऑटोमैटिक क्लाइमेट कंट्रोल, क्रूज कंट्रोल, एयर प्यूरिफायर, वेंटिलेटेड फ्रंट सीट्स समेत और भी स्टैंडर्ड फीचर्स के साथ ही 6 एयरबैग्स, 360 डिग्री केमरा, लाइइट स्पॉट मॉनिटर्स, ईबीडी के साथ एबीएस समेत और भी सेप्टी फीचर्स हैं। टाटा ऑल्ट्रोज रेसर को नेक्सन एक्सप्लू वैल 1.2 लीटर टर्बो-पेट्रोल इंजन के साथ लॉन्च किया जाएगा।

चंद्रमा की सुदूर सतह से पत्थर, मिट्टी के नमूने लेकर रवाना हुआ चीन का अंतरिक्षयान

एजेंसी। बीजिंग

अंतरिक्षयान ने योजना के तहत यान के एसेंडर के अंदर रखे एक कंटेनर में नमूने एकत्रित किए। इस कंटेनर को एक री-एंट्री कैप्सूल में रखा जाएगा जो 25 जून के आसपास चीन के आंतरिक मंगोलिया क्षेत्र के रेगिस्तान में पृथ्वी पर उतरेगा। चीन का कहना है कि चंद्रमा के सुदूर हिस्से से पत्थर और मिट्टी के नमूने लेकर एक अंतरिक्षयान के एसेंडर ने बीजिंग के



चीन राष्ट्रीय अंतरिक्ष प्रशासन ने कहा कि चांग ई-6 अंतरिक्षयान के एसेंडर ने बीजिंग के

प्रवेश किया। इस अंतरिक्षयान को पिछले महीने प्रक्षेपित किया गया था और इसका लैंडर को चंद्रमा की एक सुदूर सतह पर उतरा। शिन्हुआ समाचार एजेंसी ने अंतरिक्ष एजेंसी के हवाले से बताया कि अंतरिक्षयान ने योजना के तहत यान के एसेंडर के अंदर रखे एक कंटेनर में नमूने एकत्रित किए। इस कंटेनर को एक री-एंट्री कैप्सूल में रखा जाएगा जो 25 जून के आसपास चीन के आंतरिक मंगोलिया क्षेत्र के रेगिस्तान में पृथ्वी पर उतरेगा।

400 पार के नारे के साथ ढिंढोरा पीट रहे थे अब क्या हुआ, पवन खेड़ा का बीजेपी पर तंज

दिल्ली। लोकसभा चुनाव के मतगणना के बीच कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पवन खेड़ा ने इंडिया गठबंधन की जीत का दावा किया है। उन्होंने कहा कि इस बार कांग्रेस भारी मतों से सभी सीटों पर जीत का परचम लहराने जा रही है। इसके अलावा, उन्होंने बीजेपी के 400 पार के नारे पर भी तंज कसा। पवन खेड़ा ने आईएनएस से बातचीत के दौरान कहा, हूमें शुरूआती रूझान के बारे में अंतिम तौर पर कुछ नहीं कह सकता हूं, लेकिन एक बात जरूर कहना चाहूंगा कि जनता को जो फैसला करना था, वो कर लिया है। कांग्रेस नेता ने आगे कहा, जो बीजेपी 400 पार के नारे को लेकर



जगह-जगह ढिंढोरा पीट रही थी, शेयर मार्केट में खेल रही थी, हर जगह हवा-बाजी कर रही थी। अब उसे भी अपनी असली हकीकत के बारे में पता चल गया है कि असल में मौजूदा समय में जनता का मूड क्या है। उन्होंने कहा, अगर वाराणसी में प्रधानमंत्री दो राउंड में पिछड़ते हुए नजर आ रहे हैं, तो उससे साफ जाहिर होता है कि मौजूदा समय में देश का मूड क्या है?

बिहार जदयू के अध्यक्ष उमेश कुशवाहा ने कहा, 'परिवारतंत्र पर लोकतंत्र भारी'

पटना। बिहार में लोकसभा की 40 सीटों पर मतों की गिनती जारी है। शुरूआती रूझानों में एनडीए बहुत की ओर जाता दिख रहा है। एनडीए में शामिल जदयू के बिहार प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने कहा कि शुरूआती रूझान से साफ है कि परिवारतंत्र पर लोकतंत्र हावी है। उन्होंने कहा कि बिहार में हमलोग विकास के मुद्दे पर चुनाव में गए थे और शुरूआती रूझान से साफ है कि यहां के मतदाताओं को यह मुद्दा पसंद आया। लोगों को नीतीश कुमार और नरेंद्र मोदी की करिश्माई जोड़ी पर भरोसा है। कुशवाहा ने यह भी माना कि इतने कड़े मुकाबले की उम्मीद नहीं थी, फिर भी अभी शुरूआती रूझान हैं और हमें परिणाम का इंतजार करना चाहिए। जनता को एनडीए पर भरोसा है। उन्होंने एनडीए पर कहा कि हो सकता है कि एक-दो सीट का नुकसान उठाना पड़े। चुनाव आयोग के मुताबिक, शुरूआती रूझान में एनडीए 31 सीटों पर आगे चल रहा है और महागठबंधन 9 सीटों पर बहुत बनाए हुए है। बिहार में एनडीए में भाजपा, जदयू, लोजपा (रामविलास), जीवनराम मांडी की पार्टी हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा और उपेंद्र कुशवाहा की राष्ट्रीय लोक मोर्चा शामिल है। बिहार की 40 लोकसभा सीट में भाजपा ने 17, जदयू ने 16, लोजपा (रामविलास) ने 5 तथा जीतनराम मांडी और उपेंद्र कुशवाहा ने एक-एक सीट पर प्रत्याशी दिए हैं।

आज का राशिफल



मे़ष

योजना क्रियान्वयन के लिए समय अच्छा व सकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बेन जाएगा। जीवन साथी अथवा थार-दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। आलसितन करें। बिगड़ा कार्य बनेगा।



वृषभ

खवसाय में प्रतिद्वंद्वी परेशान कर सकते हैं। समय व्ययकारी सिद्ध होगा। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। दिमाग में निर्मूल तर्क-कुतर्क पैदा होंगे। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। व्यापार में स्थिति नरम रहेगी।



मिथुन

लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। मान-सम्मान बढ़ेगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। धार्मिक यात्रा का योग बना है।



कर्क

सैर-सपाटे में समय व्यतीत होगा। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। अपने हित के काम सुबह-सवेरे ही निपटा लें। पुराने मित्र के कारण कार्य बाधा हटेगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आर्थिक लाभ हेतु किचे गए कार्यों का तत्काल प्रतिक्रिया मिलेगा।



सिंह

अपने हितैषी ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। किसी से वाद-विवाद अथवा कहासुनी होने का भय रहेगा। मानसिक एवं शारीरिक थिथिलता पैदा होगी। जल्दबाजी में कोई भूल संभव है। आय-व्यय की स्थिति समान्य रहेगी।



कन्या

बुरी संगति से बचे। आशुनकुल कार्य होने में संदेह है। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। लेन-देन में अस्थिरता ठीक नहीं। दूसरों के कार्यों में अनावश्यक हस्तक्षेप न करें। निर्मूल शंकाओं के कारण मनसापक्ष भी पैदा हो सकते हैं। भय तथा शत्रुहानि की आशंका रहेगी। यात्रा का योग बन रहा है।



तुला

कारोबार के विस्तार का मानस बनेगा। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। मन प्रसन्न रहेगा। अवल संपत्ति की खरीद अथवा कृषि उद्यम में रुचि पैदा होगी। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी।



पुरुषिक

नये-नये व्यापारिक अनुबंध होंगे। मित्रों से सावधानी रखें तो ज्यादा उत्तम है। खसनों का त्याग करें. रंतान पक्ष की समस्या समाप्त होगी। कामकाज में अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। हरि करें से खरी इसीलिए पूरे मनोयोग से कार्य करें।



धनु

धनु : कार्यक्षेत्र में खुशनुमा माहौल बनेगा। मध्याह्न पूर्व समय आपके पक्ष का रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति बनती रहेगी। लेन-देन में आ रही बाधा दूर करने के प्रयास होंगे। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। पैतृक सम्पत्ति से लाभ होगा।



मकर

भावनाओं का उद्देग बढ़ेगा। जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। धार्मिक कार्यों में समय और धन व्यय होगा। हित के काम में आ रही बाधा मध्याह्न पश्चात दूर हो जाएगी। अपने काम आसानी से बनते चले जाएंगे। रंतान पक्ष की समस्या समाप्त होगी।



कुम्भ

जीवनसाथी अथवा थार-दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। एकाकी वृत्ति त्यागें। हित के काम में आ रही बाधा मध्याह्न पश्चात दूर हो जाएगी। अपने काम आसानी से बनते चले जाएंगे। साथ ही आगे के लिए रास्ता भी बन जाएगा। कार्य सफल होंगे।



मीन

मेहमानों का आगमन होगा। राजकीय कार्यों से लाभ। पैतृक सम्पत्ति से लाभ। पुरानी गलती का पश्चाताप होगा। विद्यार्थियों को लाभ। दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा। परिवारजनों का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा।

नोयडा के होटल में आग लगने से ग्राहक की मौत के मामले में संचालक गिरफ्तार

नोएडा। नोएडा के एक होटल में पिछले महीने लगी आग के कारण एक ग्राहक की हवी मौत के मामले में इफ्टे संचालक को गिरफ्तार किया गया है। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों के मुताबिक पुलिस ने नोएडा के सेक्टर 104 के पास हाजीपुर मार्फेंट में स्थित होटल के माफिक बिमलेंदु झा (40) को पहले ही गिरफ्तार कर लिया है। यह होटल अग्निशमन विभाग और स्थानीय प्राधिकरण की मंजूरी के बिना चल रहा था। उन्होंने बताया कि मून लाइट होटल में 19 मई की शाम पांच बजे आग लगने के कारण दस घुटने से 27 वर्षीय फिजियोथेरेपिस्ट महिला की मौत हो गई थी। इस घटना में उसके साथ मौजूद उसका दोस्त बीमार हो गया था। पुलिस प्रवक्ता ने बताया, गत रविवार को होटल संचालक आकाश शर्मा (30) को हाजीपुर बाजार के पास से गिरफ्तार किया गया।

साजिश

चुनाव आयोग ने काउंटिंग के दौरान हिंसा की आशंका जताई थी

एजेंसी। कोलकाता

लोकसभा की 542 सीटों की काउंटिंग जारी है। काउंटिंग से एक दिन पहले सोमवार (3 जून) की रात पश्चिम बंगाल के साउथ 24 परगना के भांगर में बम धमाका हुआ। इसमें 5 लोग घायल हुए हैं। मीडिया रिपोर्ट्स में बताया जा रहा है कि बम बनाने के दौरान हादसा हुआ है। सभी घायलों को कोलकाता के सखट अस्पताल में भर्ती कराया गया है। इनमें एक इंडियन सेक्युलर प्रेंट का पंचायत सदस्य है। चुनाव आयोग ने कल काउंटिंग के दौरान या इसके बाद हिंसा की आशंका जताई थी। इसके चलते 7 राज्यों में सेंट्रल फोर्स की तैनाती की गई है। ये पहली बार है, जब



जब आचार संहिता के हटने के बाद चुनाव आयोग ने 7 राज्यों में सुरक्षाबलों की तैनाती की है। दूसरी तरफ, कांग्रेस ने अपने कार्यकर्ताओं और नौकरशाहों को लिए दो लेटर जारी किए हैं। पार्टी ने कार्यकर्ताओं से काउंटिंग में नहीं गड़बड़ी दिखने



पर वीडियो बनाने को कहा है। कांग्रेस ने कार्यकर्ता और पोलिंग एजेंट्स के लिए हेल्पलाइन नंबर भी जारी किए हैं। कांग्रेस ने नौकरशाहों से किसी भी डर या पक्षपात के संविधान और अपने कर्तव्यों का पालन करने की अपील

की है। दरअसल, 1 जून को आए एग्जिट पोल में तीसरी बार मोदी सरकार बनती दिख रही है। विपक्ष ने इन एग्जिट पोल्स को खारिज किया था। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने 3 जून को बताया कि चुनाव के बाद हिंसा किसी भी

सुरत में नहीं होनी चाहिए। इसी को देखते हुए हमने आचार संहिता हटने के बाद भी एहतियातन कदम उठाए हैं। हिंसा की आशंका देखते हुए आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश और मणिपुर में सेंट्रल फोर्स तैनात की गई हैं।

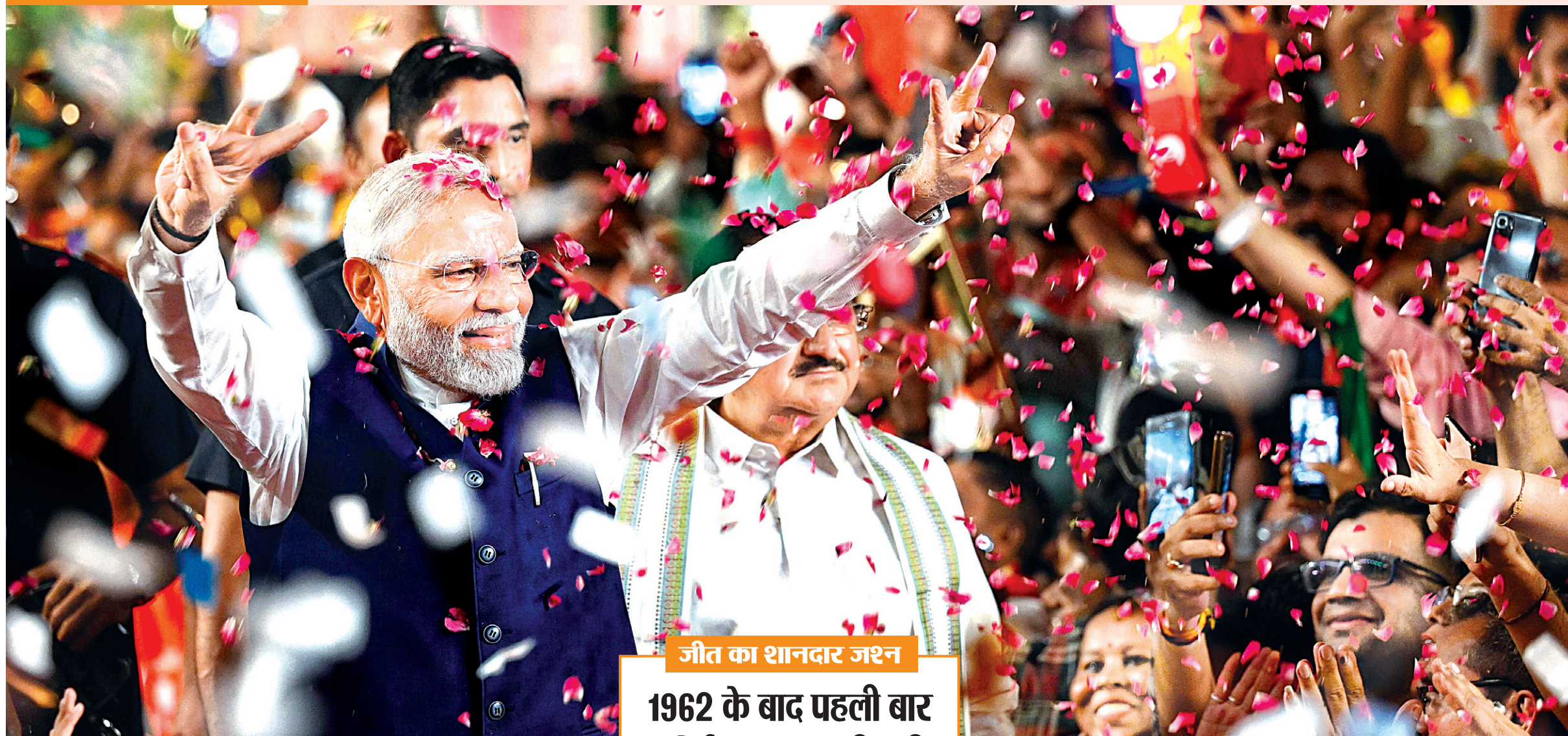
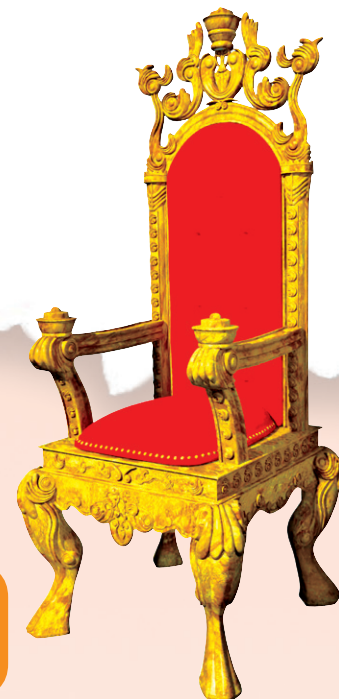
ईश्वर में हमारा विश्वास

सत्यमेव जयते

राष्ट्रीय नवीन मेल

चुनाव
विशेषांक
के साथNDA
की हैट्रिकअबकी बार नैया पार, सहयोगियों के
भरोसे **भाजपा सरकार**

400

पार का नारा औंधे मुंह गिरा
भाजपा छू भी नहीं सकी 370

जीत का शानदार जश्न

1962 के बाद पहली बार
कोई सरकार तीसरी
बार वापसी कर रही है

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकसभा चुनाव में एनडीए गठबंधन को मिली जीत को दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की जीत बताते हुए कहा है कि ये विजय, भारत के संविधान पर अटूट निष्ठा की जीत है, ये विकसित भारत के प्रण की जीत है, ये सबका साथ-सबका विकास, इस मंत्र की जीत है, ये 140 करोड़ भारतीयों की जीत है। उन्होंने कहा कि उनके लिए यह भावुक पल है। उनकी माताजी के देहांत के बाद यह उनका पहला चुनाव था। लेकिन, देश की करोड़ों माताओं ने उन्हें मां की कमी नहीं खलने दी। विरोधी दल मिलकर भी उतनी सीटें नहीं जीत पाए, जितनी सीटें भाजपा अकेले जीती है। तीसरे कार्यकाल में देश नए फैसलों का एक अध्याय लिखेगा और यह मोदी की गारंटी है। भाजपा के केंद्रीय कार्यालय विस्तार में पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि आज बड़ा मंगल है और इस पावन दिन लगातार तीसरी बार एनडीए की सरकार बननी तय है। पीएम मोदी ने 2024 के लोकसभा चुनाव में मिली जीत का महत्व बताते हुए कहा कि वर्ष 1962 के बाद पहली बार कोई सरकार अपने दो कार्यकाल पूरे करने के बाद तीसरी बार वापस आ रही है।

2024

के लोकसभा
चुनाव में पीएम
मोदी ने मिली
जीत का महत्व
बताते हुए कहा
कि वर्ष 1962 के
बाद पहली बार
कोई सरकार
अपने दो
कार्यकाल पूरे
करने के बाद
तीसरी बार
वापस आ रही है।

कहा कि आज बड़ा मंगल है और इस पावन दिन लगातार तीसरी बार एनडीए की सरकार बननी तय है। पीएम मोदी ने 2024 के लोकसभा चुनाव में मिली जीत का महत्व बताते हुए कहा कि वर्ष 1962 के बाद पहली बार कोई सरकार अपने दो कार्यकाल पूरे करने के बाद तीसरी बार वापस आ रही है। उन्होंने जनादेश के लिए देश की जनता-जनादन का आभार जताते हुए कहा कि वे जनता-जनादन के बहुत आभारी हैं, जिन्होंने एनडीए पर लगातार तीसरी बार अपना विश्वास जताया है। भारत के इतिहास में ये एक अभूतपूर्व पल है।

वे इस स्नेह और आशीर्वाद के लिए देशवासियों को नमन करते हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने देश में सही तरीके से चुनाव कराने के लिए चुनाव आयोग का अभिनंदन किया। उन्होंने ओडिशा में भाजपा की राज्य सरकार बनने, केरल और तमिलनाडु में जीत मिलने, चंद्रबाबू नायडू के नेतृत्व में आंध्र प्रदेश में और नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार में एनडीए गठबंधन को मिली जीत सहित देश के कई राज्यों में विपक्ष का सूपड़ा साफ होने की बात कहते हुए जनता-जनादन को नमन किया। साथ ही कड़ी मेहनत करने के लिए भाजपा और एनडीए कार्यकर्ताओं को धन्यवाद भी कहा। इससे पहले भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने तीसरी बार एनडीए सरकार बनाने के लिए देशवासियों और देश के करोड़ों मतदाताओं को धन्यवाद देते हुए कहा कि चाहे चुनाव की बेला हो, देश का नेतृत्व करने की बात हो और देश को समस्याओं से निकालने की बात हो, पीएम मोदी ने हमेशा देश और देश की जनता को आगे बढ़ाने का काम किया है। जबकि, विपक्ष ने हमेशा नकारात्मक राजनीति की और लगातार तीसरी बार हार के बाद विरोधी दलों को अब आत्मचिंतन करना चाहिए।

गठबंधन में लेंगे सरकार बनाने
को लेकर फैसला : कांग्रेस

एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस पार्टी का कहना है कि देश में सरकार बनाने का फैसला वह अपने गठबंधन सहयोगियों के साथ मिलकर लेगी। हालांकि पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने अच्छे विपक्ष की भूमिका निभाने की बात कही। कांग्रेस पार्टी को लोकसभा चुनाव 2024 में 100 के करीब सीटें मिलती दिखाई दे रही हैं। पिछली बार के 55 सीटों के आंकड़ों के बाद इस बार कांग्रेस लगभग दो गुना सीटों पर जीत के करीब है। पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, संसदीय दल की

नेता सोनिया गांधी, पार्टी नेता राहुल गांधी और जयराम रमेश ने मंगलवार को पत्रकार वार्ता कर जनता को वोट देने के लिए धन्यवाद दिया। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि हम जनता के मत को विनम्रता से स्वीकार करते हैं। सत्ताधारी पार्टी एक व्यक्ति और नाम पर चुनाव लड़ रही थी, जिसे जनता ने नकार दिया है। यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नैतिक और राजनैतिक हार है। जनता ने उनकी महत्वाकांक्षाओं पर अवरोध लगाया है। महंगाई, बेरोजगारी, किसान और मजदूरों के हितों के लिए जनता ने वोट किया है।

यह संविधान बचाने के लिए जनता का मत : राहुल

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने इसे संविधान बचाने के लिए जनता का मत बताया और कहा कि हमने गठबंधन में चुनाव लड़ा है। विपक्षी पार्टियों के साथ हमें मिलकर सरकार बनाना है या नहीं, इस पर फैसला लेंगे। राहुल गांधी ने विशेष रूप से उत्तर प्रदेश की जनता को धन्यवाद दिया और कहा कि उन्होंने राजनीतिक समझ दिखाई है। मालूम हो कि उत्तर प्रदेश में इंडी गठबंधन को

चुनाव में जीते विपक्षी दिग्गज

कन्नौज से जीते
अखिलेश यादव

लोकसभा चुनाव में सबसे बड़ा उलटफेर उत्तर प्रदेश में हुआ है। समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने कन्नौज से अपने करियर की सबसे बड़ी दर्ज की है। उन्होंने भाजपा के उम्मीदवार को हरा कर बड़ी जीत दर्ज की है। उनकी पार्टी भी इस बार उत्तर प्रदेश में सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है।

रायबरेली व वायनाड
से जीते राहुल गांधी

राहुल गांधी ने रायबरेली और वायनाड सीट से भारी मतों से जीत दर्ज की है। रायबरेली में 4 लाख और वायनाड से 3 लाख से ज्यादा वोटों से जीते हैं। राहुल ने एक वीडियो शेयर कर कहा कि बेशुमार मोहब्बत देने के लिए वायनाड और रायबरेली की जनता का बहुत बहुत धन्यवाद।

गाजीपुर से जीते
अफजाल अंसारी

उत्तर प्रदेश के गाजीपुर लोकसभा सीट से मुख्तार अंसारी ने समाजवादी पार्टी के टिकट पर जीत दर्ज की है। उन्होंने बीजेपी ने यहां से पारसनाथ राय को एक लाख से ज्यादा वोटों से हराया।

एजेंसी

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव 2024 के मंगलवार को आए नतीजों में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। भाजपा बहुमत के 272 के आंकड़े को नहीं छू पाई लेकिन राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग या एनडीए) 290 सीटों पर आगे है। भाजपा 240 सीटों पर जीत के नजदीक है। इस बार भारतीय जनता पार्टी को 36.61 प्रतिशत वोट मिला है। कांग्रेस को 21.27 प्रतिशत, सपा को 4.60 प्रतिशत, तृणमूल कांग्रेस को 4.37 प्रतिशत वोट मिला है। भाजपा का 400 पार का नारा औंधे मुंह गिरा वहीं भाजपा भी 370 सीट का लक्ष्य पूरा नहीं कर पाई। लोकसभा - 2024 के नतीजों के अनुसार भारतीय जनता पार्टी - भाजपा 240, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस - कांग्रेस 99, समाजवादी पार्टी - सपा 37, अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस - एआईटीसी 29, द्रविड़ मुनेत्र कड़गम - डीएमके 22, तेलुगु देशम - टीडीपी 16, जनता दल (यूनैटेड) - जेडी(यू) 12, शिवसेना (उद्धव बाळासाहेब ठाकरे) - एसएचएसबीटी 10, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी - शरद चंद्र पवार - एससीपीएसपी 07 सीटें मिली हैं।

आंध्रप्रदेश में एनडीए सरकार
ओडिशा में भाजपा को सत्ता

इसके अलावा दो राज्यों में हुए विधानसभा चुनावों में भी एनडीए को जीत मिली है। आंध्र प्रदेश में 175 सीटों में तेलुगु देश पार्टी के नेतृत्व में एनडीए को 163 सीटें मिली हैं। आंध्र प्रदेश में तेलुगु देशम - टीडीपी 134, जनसेना पार्टी - जेएनपी 21, भारतीय

जनता पार्टी - बीजेपी 8, युवजन श्रमिका रायथू कांग्रेस पार्टी - वाईएसआरसीपी 12 सीटें मिली हैं। वहीं ओडिशा में भारतीय जनता पार्टी बड़े बहुमत के साथ आगे है। यहां 147 सीटों में से भारतीय जनता पार्टी - (भाजपा) 78, बीजू जनता दल - बीजेडी 51, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस - कांग्रेस 14, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) - सीपीआई (एम) 01, स्वतंत्र 03।

जगन मोहन रेड्डी ने आंध्र प्रदेश
के सीएम पद से इस्तीफा दिया

अमरावती। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री वाई.एस. जगन मोहन रेड्डी ने विधानसभा चुनाव में अपनी हार के बाद मंगलवार को अपने पद से इस्तीफा दे दिया। वाईएसआर कांग्रेस पार्टी ने मंगलवार को बताया, जगन मोहन रेड्डी ने राज्यपाल एस. अब्दुल नजीर को अपना इस्तीफा भेज दिया है। राज्यपाल उन्हें अपने नये सीएम के शपथ लेने तक कार्यवाहक मुख्यमंत्री बने रहने को कह सकते हैं। जगन मोहन रेड्डी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस के कुछ ही मिनट बाद अपना इस्तीफा भेज दिया। उन्होंने कहा कि नतीजे पार्टी के लिए उम्मीद के मुताबिक नहीं थे। उन्होंने हैरानी जताई कि करोड़ों लोगों को लाभ पहुंचाने वाली कई कल्याणकारी योजनाएं लागू करने के बावजूद वाईएसआर कांग्रेस को हार का सामना क्यों करना पड़ा? हार स्वीकार करते हुए जगन मोहन रेड्डी ने साहस के साथ फिर से उठ खड़े होने की शपथ ली। उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी जनता के लिए लड़ाई जारी रखेगी।

वाराणसी से पीएम मोदी की लगातार तीसरी जीत

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वाराणसी लोकसभा सीट से जीत की हैट्रिक लगाई है। उन्होंने कांग्रेस के प्रत्याशी अजय राय को डेढ़ लाख से अधिक वोटों से हरा दिया है। पीएम मोदी तीसरी बार वाराणसी लोकसभा सीट से चुनावी मैदान में उतरे। पीएम मोदी को 6,12,970 वोट मिले हैं, वहीं कांग्रेस के अजय राय को 4,60,457 और बसपा के अतहर जमाल लारी को 33,766 प्राप्त हुए हैं।

हारे दिग्गज केंद्रीय मंत्री

अमेठी से हारी
मंत्री स्मृति ईरानी

उत्तर प्रदेश के अमेठी लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से कांग्रेस उम्मीदवार किशोरी लाल शर्मा चुनाव जीत गए हैं। किशोरी लाल शर्मा ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी भाजपा की स्मृति ईरानी को 1,67,196 मतों के अंतर से पराजित कर विजय प्राप्त की।

राजीव चंद्रशेखर
कड़े संघर्ष में हारे

केंद्रीय मंत्री राजीव चंद्रशेखर को तिरुवनंतपुरम सीट से शशि थरूर ने 16,077 मतों से हरा दिया है। शशि थरूर को कुल 358155 मत मिले जबकि राजीव चंद्रशेखर को 342078 मत मिले। इस सीट पर माकपा के प्रत्याशी पन्नियन रविन्द्रन तीसरे नंबर पर रहे।

केंद्रीय मंत्री अर्जुन
मुंडा खूटी में हारे

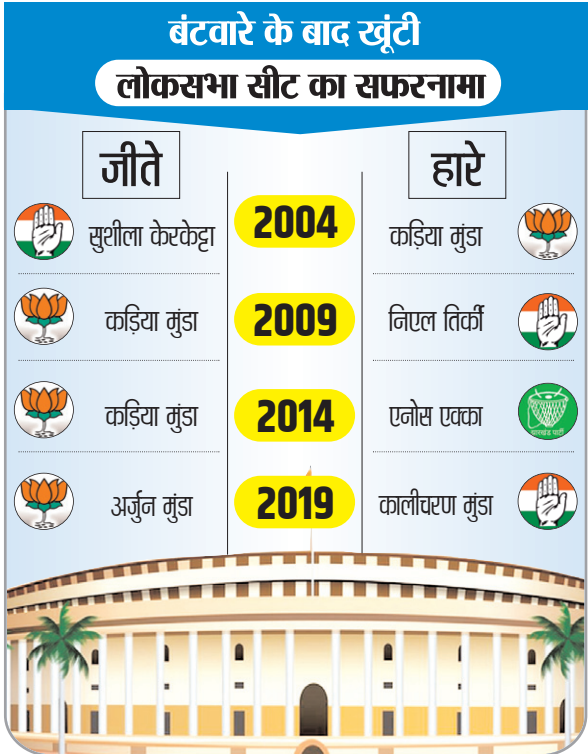
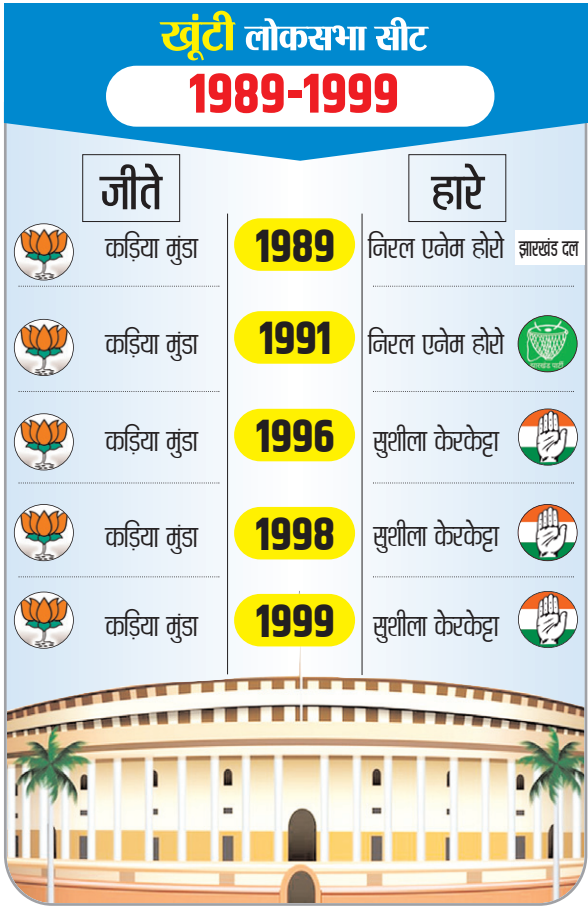
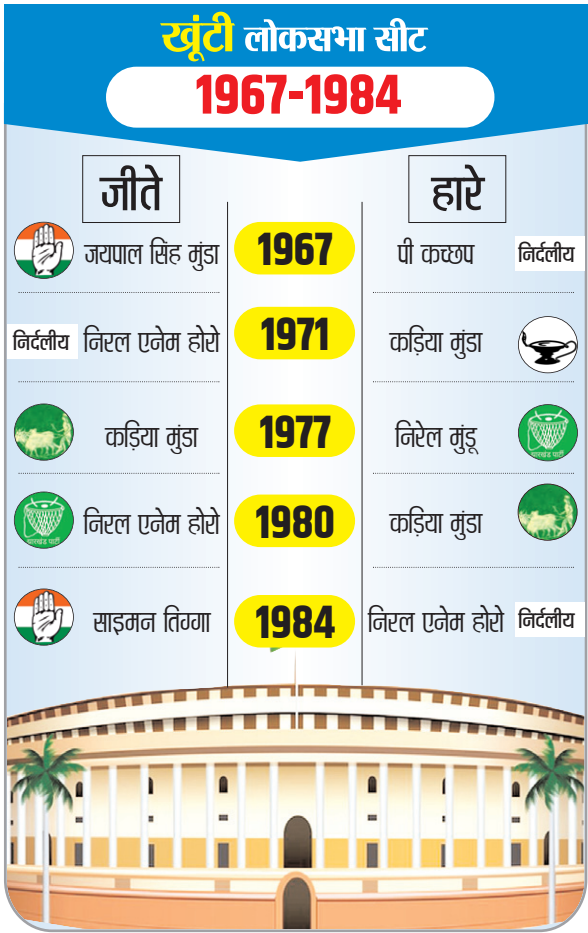
केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा को कांग्रेस के प्रत्याशी कालीचरण मुंडा ने मतों से हरा दिया। अर्जुन मुंडा को 361972 मत मिले जबकि कालीचरण मुंडा को 511647 मत मिले। मालूम हो कि गत चुनाव में भी बेहद कड़े संघर्ष में कालीचरण महज सोलह सौ वोट से हारे थे।

खूंटी



भगवान बिरसा मुंडा की जन्मस्थली खूंटी लोकसभा क्षेत्र अनुसूचित जनजाति के लिए सुरक्षित है। इस सीट के अंतर्गत खूंटी, सिमडेगा और रांची और सरायकेला खरसावां के छह विधानसभा क्षेत्र आते हैं। रघुवर दास सरकार के कार्यकाल में पथलगड़ी के नाम पर यहां उग्र सरकार विरोधी आंदोलन चलाया गया था। खूंटी सीट के परिणाम पर पूरे देश की निगाहें लगी हैं। क्योंकि पिछली बार मामूली अंतर से जीत दर्ज करनेवाले केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा को इस बार भी कांग्रेस के कालीचरण मुंडा चुनौती दे रहे हैं।

खूंटी लोकसभा सीट का सफरनामा



1977 से 1980, 1989 से 2004 व 2009 से 2014 : कड़िया मुंडा

कड़िया मुंडा एक कुशल राजनीतिज्ञ हैं, जिन्होंने 15वीं लोकसभा के उपाध्यक्ष के रूप में कार्य किया। वे भारत सरकार में मंत्री रह चुके हैं , 1977 में जनता पार्टी और 1999 से भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाली सरकारों में सेवारत रहे हैं ।



31.30 वोट मिले थे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 27.7 फीसदी वोट मिले थे । 1989 में कड़िया मुंडा काफी मुश्किल से जीते थे वोट का अंतर बहुत कम था झारखंड पार्टी के निरल एनेम होरो को 31 फीसदी वोट मिले थे जबकि श्री मुंडा को कुल

32.8 फीसदी वोट मिले थे ।1989 में इस सीट पर जीत का अंतर सिर्फ 1.1 फीसदी का था।1977 के चुनाव में कड़िया मुंडा भारतीय लोक दल से इस लोकसभा सीट पर जीते थे लेकिन 1980 के लोकसभा चुनाव में उन्होंने जनता पार्टी से चुनाव लड़ा लेकिन 25.7 फीसदी वोट ही इन्हें मिल पाए । भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 20-20 प्रतिशत वोट मिले थे. जबकि जनता पार्टी सेकुलर को 7.4 फीसदी रिपोर्ट प्राप्त हुए थे। 1991 में कड़िया मुंडा को 35.2 फीसदी मत मिले जबकि झारखंड पार्टी के निरल होरो को 22.8 फीसदी वोट मिले ।वहीं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सीमांत तिग्गा को 20.5 फीसदी वोट प्राप्त हुए। 1996 में करिया मुंडा ने लगाई जीत की हैट्रिक इस बार उन्हें 32.8 फीसदी वोट मिले थे जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सुशीला केरकेट्टा को 25.7 फीसदी वोट मिले थे जबकि झारखंड मुक्ति मोर्चा पहली बार 14.4 फीसदी वोट हासिल कर दहाई के

अंक में आई थी ।वहीं झारखंड पार्टी 14.3 फीसदी वोट प्राप्त कर चौथे स्थान पर चली गई थी।1998 की लोकसभा चुनाव में कड़िया मुंडा को कुल 42.1 फीसदी वोट मिले थे ।जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सुशीला केरकेट्टा को 33.7 फीसदी वोट और झारखंड मुक्ति मोर्चा को 13.3 फीसदी वोट मिले थे। विभिन्न धर्मों और विचारधाराओं की प्रयोगशाला खूंटी इसलिए भी बना क्योंकि मुंडा जनजाति के सरल लोगों के बीच विचारों का वि्व और भटकाव आसान था । कड़िया मुंडा आठ बार जीते, तीन बार कांग्रेस को मिली जीत। खूंटी संसदीय सीट पर हुए 15 चुनावों में भाजपा के कड़िया मुंडा यहां से आठ बार चुनाव जीत चुके हैं, जबकि कांग्रेस को तीन बार सफलता मिली है। शुरुआती दौर में यहां से जयपाल सिंह मुंडा ने जीत हासिल की थी लेकिन कड़िया मुंडा ने इस लोकसभा सीट को भाजपा के अभेद्य किले के रूप में बदल दिया।

1962 से 1969 : जयपाल सिंह मुंडा

जयपाल सिंह मुंडा भारतीय आदिवासियों और झारखंड आंदोलन के एक सर्वोच्च नेता थे। वे एक जाने माने राजनीतिज्ञ, पत्रकार, लेखक, संपादक, शिक्षाविद् और 1925 में ऑक्सफोर्ड ब्लू का खिताब पाने वाले हॉकी के एकमात्र अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी थे। उनकी कहानी में 1928 के ओलिंपिक में भारत ने पहला स्वर्ण पदक प्राप्त किया था। औपनिवेशिक भारत में जयपाल सिंह मुंडा सर्वोच्च सरकारी पद पर थे।



जयपाल सिंह मुंडा कांग्रेस

1967 में अस्तित्व में आए इस लोकसभा क्षेत्र में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के विजयी जयपाल सिंह मुंडा को 24.2 फीसदी वोट मिले थे। वहीं निर्दलीय उम्मीदवार पी कच्छप को 21.4 फीसदी वोट मिले थे । भारतीय जनता पार्टी को 15.4 और स्वतंत्र पार्टी को 12.8 फीसदी मत प्राप्त हुए थे। **जीवन यात्रा** : जयपाल सिंह मुंडा का जन्म 3 जनवरी 1903 को और 20 मार्च 1970 को निधन हुआ था। जयपाल सिंह छोटा नागपुर (अब झारखंड) राज्य की मुंडा जनजाति के थे। मिशनरीज की मदद से पढ़ने के लिए गए ।वह असाधारण रूप से प्रतिभाशाली थे। उन्होंने पढ़ाई के अलावा खेलकूद, जिनमें हॉकी प्रमुख था, के अलावा वाद-विवाद में खूब नाम कमाया। उनका चयन भारतीय सिविल सेवा

(आईसीएस) में हो गया था। आईसीएस का उनका प्रशिक्षण प्रभावित हुआ क्योंकि वह 1928 में एमस्टरडम में ओलिंपिक हॉकी में पहला स्वर्णपदक जीतने वाली भारतीय टीम के कप्तान के रूप में नीदरलैंड चले गए थे। वापसी पर उनसे आईसीएस का एक वर्ष का प्रशिक्षण देबारा पूरा करने को कहा गया, उन्होंने ऐसा करने से इनकार कर दिया। उन्होंने बिहार के शिक्षा जगत में योगदान देने के लिए तत्कालीन बिहार कांग्रेस अध्यक्ष डा. राजेन्द्र प्रसाद को इस संबंध में पत्र लिखा। परंतु उन्हें कोई सकारात्मक जवाब नहीं मिला। 1938 की आखिरी महीने में जयपाल ने पटना और रांची का दौरा किया। इसी दौरे के दौरान आदिवासियों की खराब हालत देखकर उन्होंने राजनीति में आने का फैसला किया। 1938 जनवरी में उन्होंने आदिवासी महासभा की अध्यक्षता ग्रहण की, जिसने बिहार से इत्र एक अलग झारखंड राज्य की स्थापना की मांग की। इसके बाद जयपाल सिंह देश में आदिवासियों के अधिकारों की आवाज बन गए ।उनके जीवन का सबसे बेहतरीन समय तब आया जब उन्होंने संविधान सभा में बेहद वाकपटुता से देश की आदिवासियों के बारे में सकारात्मक ढंग से अपनी बात रखी।

1971 से 1977 व 1980 से 1984 : निरल एनेम होरो

निरल एनम होरो (1925-2008) एक भारतीय राजनीतिज्ञ और लोकसभा के पूर्व सदस्य थे । उन्होंने चौथी और पांचवीं लोकसभा में खूंटी का प्रतिनिधित्व किया। वे झारखंड पार्टी से जुड़े थे और बिहार सरकार में मंत्री रहे थे। 1974 में वे भारत के उपराष्ट्रपति पद के लिए चुनाव लड़े, लेकिन हार गए।



निरल एनेम होरो झारखंड पार्टी

जीत दर्ज की थी । जिन्हें कुल 29.4 प्रतिशत वोट मिले थे ।जबकि भारतीय जनसंघ के करिया मुंडा को 27.8 प्रतिशत वोट मिले थे । ऑल इंडिया झारखंड पार्टी को 16.6 फीसदी जबकि एक अन्य निर्दलीय को 15.9 फीसदी वोट मिले थे। 1980 में हुए लोकसभा चुनाव में झारखंड पार्टी से निरल एनेम होरो ने इस सीट पर जीत दर्ज की थी ।इससे पहले 1971 के चुनाव में इन्होंने

निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर जीत दर्ज की थी । इसके बाद 1980 में झारखंड पार्टी ने अपना उम्मीदवार बनाया और इन्हें कुल 35.8 की प्रतिशत वोट मिले थे। उन्होंने अपनी शिक्षा जिला स्कूल, संत कोलंबस कॉलेज हजारीबाग से बीए और रांची के छोटानागपुर लॉ कॉलेज से बीएल की डिग्री हासिल की । उन्होंने 15 मार्च, 1951 को लिलियन एलिस होरो से शादी की। उनके पांच बेटे थे।

राजनीतिक कैरियर : होरो अपने सार्वजनिक जीवन की शुरुआत से ही झारखंड पार्टी से जुड़े रहे । वे 1968 से 1969 तक बिहार सरकार में शिक्षा, योजना और जनसंपर्क मंत्री रहे। वे 1967 से 1970 और 1977 से 1980 तक बिहार विधानसभा के सदस्य रहे। वे 1970 और 1971 से 1976 तक लोकसभा के सदस्य रहे। होरो 1971 में झारखंड पार्टी के अध्यक्ष बने।

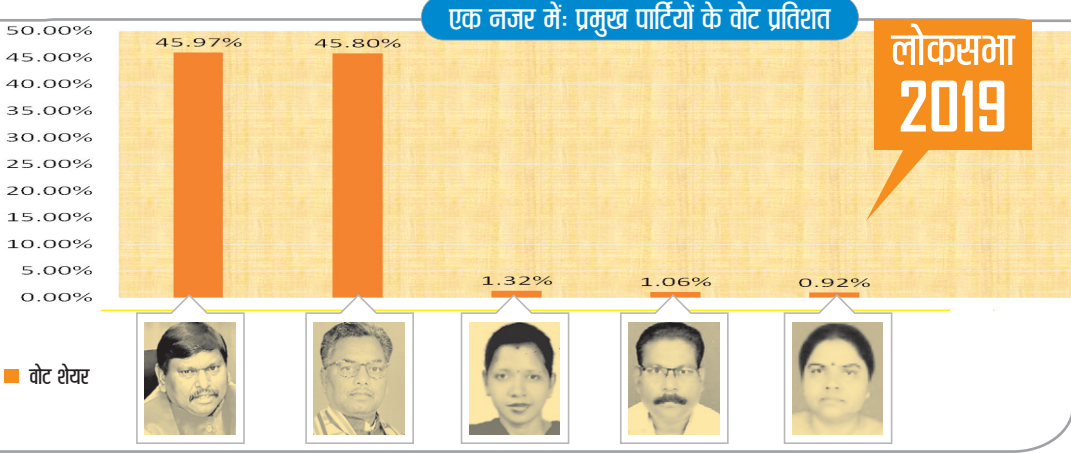
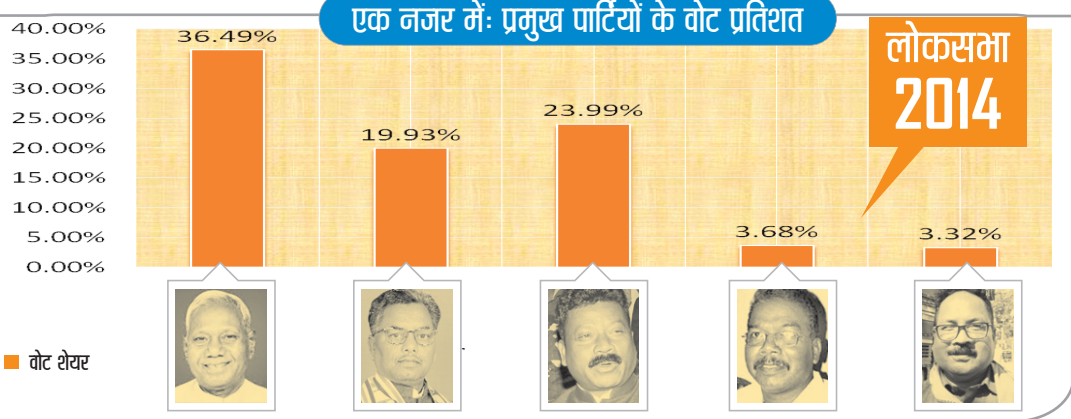
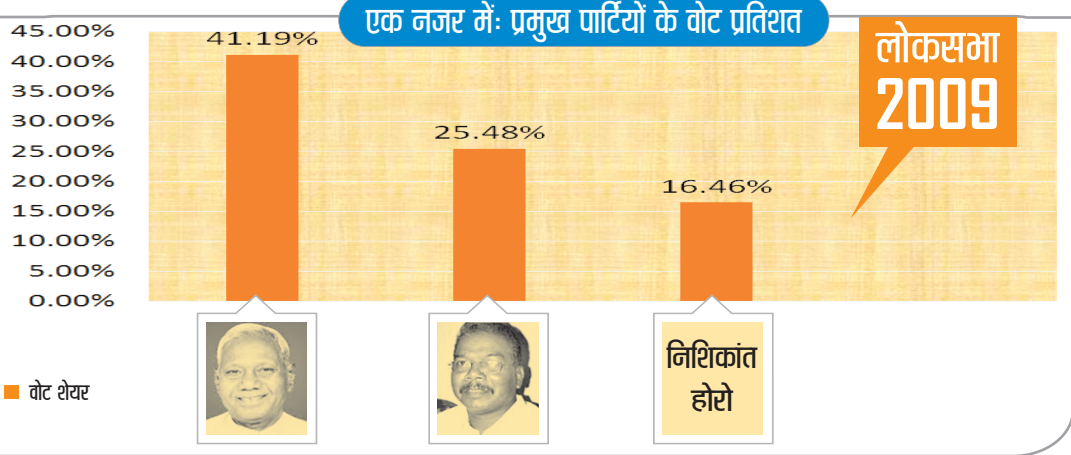
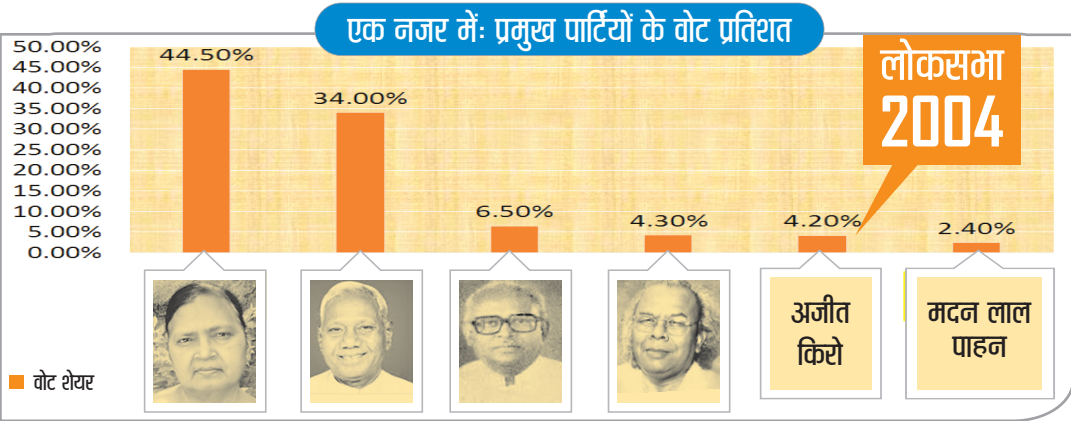
1984 से 1989 तक साइमन तिग्गा

1984 में कांग्रेस ने दर्ज की जीत 1984 के लोकसभा चुनाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस यहां से जीती । 39.4 फीसदी मत भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की मिले। यहां से साइमन तिग्गा ने जीत दर्ज की थी. जबकि इंडिपेंडेंस प्रत्याशी के तौर पर निरल एनेम होरो दूसरे स्थान पर रहे। इन्हें 26.1 फीसदी वोट मिले थे. जबकि भारतीय जनता पार्टी के कड़िया मुंडा को 17 फीसदी वोट मिले थे। साइमन तिग्गा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य के रूप में बिहार के खूंटी से भारतीय संसद के निचले सदन लोकसभा के लिए चुने गए थे । उनका जन्म 16 मार्च 1929 को हुआ था और 75 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

कालीचरण ने दी अर्जुन को मात



खूंटी। जनजातियों के लिए सुरक्षित खूंटी संसदीय क्षेत्र में भाजपा का किला ध्वस्त हो गया। भाजपा प्रत्याशी और केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा पञ्चभूषण कड़िया मुंडा की इस परंपरागत सीट को बचाने में नाकाम रहे। कांग्रेस प्रत्याशी कालीचरण मुंडा ने एकतरफा मुकाबले में अर्जुन मुंडा को लगभग 1,49,675 मतों से कड़ी शिकस्त दी। मतगणना के पहले से लेकर अंतिम 17वे राउंड तक अर्जुन मुंडा एक बार भी कांग्रेस उम्मीदवार पर बढ़त नहीं बना सके। खूंटी संसदीय क्षेत्र के सभी विधानसभा क्षेत्रों में कालीचरण मुंडा को बहुत मिली। अर्जुन मुंडा को अपने विधानसभा क्षेत्र में भी मतदाताओं ने नकार दिया। अन्य सभी उम्मीदवारों की भूमिका सिर्फ वोटकटवा की रही। चुनाव परिणाम की घोषणा होने के बाद निवाची पदाधिकारी सह उपायुक्त लोकेश मिश्रा ने कालीचरण मुंडा को जीत का प्रमाणपत्र सौंपा।



2004 से 2009 : सुशीला केरकेट्टा

सुशीला केरकट्टा 1985 से 2000 तक बिहार विधानसभा की सदस्य रहीं और खूंटी से लोकसभा सदस्य भी रहीं । उन्होंने बिहार सरकार में कई महत्वपूर्ण विभागों को संभाला। वह 1985 से 1988 तक सिंचाई राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) रहीं। उन्हें 1989 में कैबिनेट रैंक में पदेनंतर किया गया और उन्होंने खान और भूविज्ञान और खाद्य और नागरिक आपूर्ति विभागों का नेतृत्व किया। 1990-2000 बिहार विधानसभा में कांग्रेस पार्टी की उपनेता बनीं। बाल एवं महिला विकास समिति के अध्यक्ष रही। 2004 में 14वीं लोक सभा के लिए निर्वाचित हुईं । महिला सशक्तिकरण समिति और श्रम संबंधी समिति की सदस्य रही। वह बिरसा कॉलेज, खूंटी में लेक्चरर थीं और बाद में इसकी प्रिंसिपल बनीं। **प्रारंभिक जीवन और शिक्षा** : सुशीला केरकेट्टा का जन्म 27 अप्रैल 1939 को रांची , बिहार में प्रभुदयाल मार्की और मैनी मार्की के घर हुआ था। उन्होंने सेंट जेवियर्स कॉलेज, रांची से शिक्षा में स्नातक और दर्शनशास्त्र में स्नातकोत्तर किया । बाद में उनकी शादी 28 दिसंबर 1970 को मट्रोप्ट केरकेट्टा से हुई और उनके तीन बेटे और दो बेटियाँ हुईं जिनके नाम राशन, प्रवीण, नवीन, संध्या और आशा थे। उनका निधन 19 अक्टूबर 2009 को हुआ। **व्यक्तिगत रुचियाँ** : केरकेट्टा एक सामाजिक कार्यकर्ता और शिक्षिका थीं, जो नियमित रूप से स्थानीय गांवों का दौरा करती थीं और स्थानीय हथकरघा जैसे उद्यमों को बढ़ावा देती थीं। उनकी खेल रुचियों में तीरंदाजी, फुटबॉल और हॉकी शामिल थे। उन्होंने झारखंड महिला हॉकी संघ , महिला हॉकी संघ, छोटानागपुर और बिहार महिला हॉकी संघ का नेतृत्व किया ।

2014 से 2019 : अर्जुन मुंडा

अर्जुन मुंडा एक राजनीतिक सफर झारखंड मुक्ति मोर्चा से शुरू हुआ था। पहली बार 1995 में झामुमो के टिकट पर खरसावां विधानसभा सीट से चुनाव जीत कर विधायक बने थे। लेकिन 2000 में विधानसभा चुनाव से पहले झामुमो छोड़ कर भाजपा में शामिल हो गए और दूसरी बार जीत दर्ज की। झारखंड राज्य बनने के बाद बाबूलाल मरांडी के नेतृत्व में बनी झारखंड सरकार में मंत्री बने। इसी बीच साल 2003 में 36 साल की उम्र में वो झारखंड के मुख्यमंत्री बने। 2005 में अर्जुन मुंडा के नेतृत्व में एनडीए गठबंधन ने 81 में से 36 सीट जीतीं। पर उस समय शिबू सोरेन के नेतृत्व में यूपीए की सरकार बनी थी। लेकिन ये सरकार 10 दिन में ही गिर गई। इसके बाद अर्जुन मुंडा दूसरी बार झारखंड के मुख्यमंत्री बने। पर इस बार भी वो कार्यकाल पूरा नहीं कर सके। निर्दलीय मधु कोड़ा ने सिर्फ 18 महीने बाद उसे मुख्यमंत्री की कुर्सी छीन ली। 2009 के लोकसभा चुनाव में अर्जुन मुंडा जमशेदपुर से बोजेपी के सांसद बने। पर अप्रैल 2010 में तीसरी बार झारखंड का मुख्यमंत्री बनने के लिए उन्होंने संसद की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया।

सितंबर 2010 से जनवरी 2013 तक मुख्यमंत्री के रूप में उनका तीसरा कार्यकाल सबसे लंबा रहा। लेकिन हालात ऐसे बने की झारखंड में राष्ट्रपति शासन लगाना पड़ा। नवंबर 2014 में हुए विधानसभा चुनाव में एनडीए स्पष्ट बहुमत के साथ सत्ता में लौटी। लेकिन तब अर्जुन मुंडा खरसावां विधानसभा से 12 हजार वोट से चुनाव हार गए। इसके 5 साल बाद 2019 में उन्होंने खूंटी से लोकसभा चुनाव लड़ा और जीत गए। 2019 में केंद्र में जब मोदी सरकार बनी तो अर्जुन मुंडा को जनजातीय मामलों का मंत्री बनाया गया। पिछले साल के अंत में उन्हें कृषि मंत्रालय की बागडोर भी दे दी गई। इसी साल फरवरी में जब पंजाब और हरियाणा के शंभू बॉर्डर पर किसान आंदोलन शुरू हुआ तो कृषि मंत्री के रूप में उन्होंने कई किसान संगठनों से बातचीत की और उन्हें मनाने की पूरी कोशिश की। इससे उनकी राष्ट्रीय स्तर पर छवि बनी। बोजेपी का बड़ा आदिवासी चेहरा माने जाने वाले अर्जुन मुंडा के सामने अब खूंटी लोकसभा चुनाव में खुद को साबित करने की बड़ी चुनौती है।

लोकसभा चुनाव के दृष्टिकोण से रांची झारखंड की राजधानी होने के कारण काफी महत्व रखता है। 1952 में यहां पहली बार लोकसभा चुनाव हुआ था। उस समय कांग्रेस के अब्दुल इब्राहिम अंसारी चुनाव जीतने के बाद पहली बार सांसद बने थे, जबकि 1957 में स्वतंत्र प्रत्याशी मीनू मसानी चुनाव जीते। 1962,1967 और 1971 में कांग्रेस के पीके घोष ने जीत की हैट्रिक लगाई।

वहीं, 1977 में इंदिरा विरोधी लहर में जनता दल के रवींद्र वर्मा चुनाव जीतने में सफल रहे। 1980 और 1984 में कांग्रेस के शिवप्रसाद साहू लगातार दो बार रांची के सांसद रहे। 1989 में जनता दल के टिकट पर सुबोधकांत सहाय चुनाव जीते, 1991 में पहली बार भाजपा ने रांची में जीत का स्वाद चखा और रामटहल

रांची लोकसभा के सांसदों का जीवन परिचय



चौधरी सांसद बने। 1996,1998 और 1999 में रामटहल चौधरी ने लगातार जीत का परचम लहराया, लेकिन 2004 और 2009 में कांग्रेस के टिकट पर उतरे सुबोधकांत सहाय ने उन्हें पटकनी दे दी। 2014 में रामटहल चौधरी एकबार फिर सुबोधकांत सहाय को हराने में सफल रहे। 2019 में भाजपा नेतृत्व ने बदलाव करते हुए वरिष्ठ नेता रामटहल के स्थान पर संजय सेठ को मौका

दिया। मोदी लहर में संजय सेठ भारी मतों से चुनाव जीतने में सफल रहे। कुल मिलाकर देखें तो रांची लोकसभा सीट पर कांग्रेस और भाजपा के बीच ही हर बार मुकाबला देखने को मिला है। प्रस्तुत है 1951 से 2019 तक रांची लोकसभा सीट का सफरनामा।

1952 में अब्दुल इब्राहिम बने पहले सांसद

रांची लोकसभा सीट पर पहली बार 1951 में चुनाव हुआ, तब कांग्रेस के अब्दुल इब्राहिम अंसारी मैदान में उतरे और जीत हासिल की। अब्दुल इब्राहिम अंसारी रांची सीट से पहले अल्पसंख्यक सांसद बने। रांची के पहले सांसद अब्दुल अंसारी का जन्म 1 जनवरी 1915 को परासटोली के डोरंडा, जिला राँची में हुआ था। इनके पिता का नाम दिलावर अली अंसारी था। उन्होंने अपनी शुरुआती शिक्षा डोरंडा एलपी स्कूल, गोम्सनर हाई स्कूल और सेंट पॉल हाई स्कूल, राँची से प्राप्त की। फिर कलकत्ता चले गए, 1934 में उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से मैट्रिक की परीक्षा पास की। 1938 तक कलकत्ता विश्वविद्यालय में ही

कांग्रेस



एसोसिएशन के जेनरल सेक्रेटरी बने। फिर बन्म ए अदब लाइब्रेरी के अध्यक्ष बने। डिविजनल कमेटी ऑफ बैकवर्ड मुस्लिम कम्युनिटीज, छोटानागपुर, बिहार के लिए काम किया। फिर जमीयतुल मोमिनीन और डिस्ट्रिक्ट वॉवर्स

पढ़ाई करते में रहे। फिर 1942 तक पटना विश्विद्यालय से शिक्षा हासिल की। उन्होंने बैचलर ऑफ आर्ट्स और बैचलर ऑफ लॉ की तालीम हासिल की। 1942 में उन्होंने रांची बार ज्वाइन किया। उन्होंने बैकवर्ड मुस्लिम कम्युनिटीज ऑफ छोटानागपुर, बिहार के लिए काम किया। फिर जमीयतुल मोमिनीन और डिस्ट्रिक्ट वॉवर्स

एसोसिएशन के जेनरल सेक्रेटरी बने। फिर बन्म ए अदब लाइब्रेरी के अध्यक्ष बने। डिविजनल कमेटी ऑफ बैकवर्ड मुस्लिम कम्युनिटीज, छोटानागपुर, के सदस्य हुए। फिर ऑल इंडिया मोमिन कांग्रेस के सदस्य बने।

1949

में रियेप्शन कमेटी ऑफ बिहार कांग्रेस वर्कर्स कैप, रांची में सदस्य बने। 1952 में रांची नॉर्थ ईस्ट से सांसद चुने गए।

1953

मई में ऑल इंडिया बैकवर्ड क्लासेस काँग्रेस, के जेनरल सेक्रेटरी बने।

अब्दुल इब्राहिम अंसारी रांची के पहले सांसद बने। वे पहले मोमिन आंदोलन से जुड़े, फिर कांग्रेस पार्टी से जुड़े, वे एक राष्ट्रवादी नेता थे।

1953

में रियेप्शन कमेटी दिल्ली स्टेट वीवर्स काँग्रेस के वेयरमैन बने। इसी साल ऑल इंडिया बैकवर्ड क्लासेस फेडरेशन के ज्वाइंट सेक्रेटरी बने।

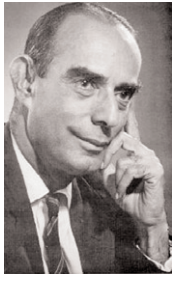
1957 से 1962 तक मीनू मसानी

मिनोचर रुस्तम 'मीनू' मसानी रांची से 1957 में पहली बार निर्दलीय चुनाव जीत कर सांसद बने, उसके बाद मीनू मसानी गुजरात के राजकोट से तीसरे और चौथे लोकसभा का चुनाव लड़े और जीत हासिल की।

उनका जन्म 20 नवंबर 1905 हुआ और 27 मई 1998 को 92 वर्ष की आयु में ब्रीच कैंडी अस्पताल, मुंबई में निधन हो गया। वह एक भारतीय राजनीतिज्ञ थे और तत्कालीन स्वतंत्र पार्टी के प्रमुख नेता थे। पारसी परिवार से आने वाले मीनू भारतीय लिबरल ग्रुप थिंक टैंक के संस्थापकों में से थे, जिसने शास्त्रीय उदारवाद को बढ़ावा दिया। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रतिनिधित्व करते हुए भारत की संविधान सभा के सदस्य के रूप में कार्य किया। उन्होंने 1947 में भारत के संविधान में एक समान नागरिक संहिता को शामिल करने का प्रस्ताव पेश किया, जिसे अस्वीकार कर दिया गया। उनका सार्वजनिक जीवन मुंबई नगर निगम से शुरू हुआ, जहां वे 1943 में मेयर चुने गए। वे भारतीय विधान सभा के सदस्य भी बने। अगस्त 1960 में, उन्होंने सी. राजगोपालाचारी और एनजी रंगा के साथ मिलकर स्वतंत्र पार्टी का गठन किया, जबकि अंतरराष्ट्रीय साम्यवाद अपने चरम पर था। उनका अंतिम संस्कार चंदनवाड़ी में किया गया।

राजनीतिक जीवन : उन्होंने सविनय अवज्ञा अभियान के दौरान भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने से पहले 1929 में बॉम्बे उच्च न्यायालय में एक वकील के रूप में अपना पेशेवर जीवन शुरू किया। आंदोलन में भाग लेने के

निर्दलीय



कारण उन्हें कई बार अंग्रेजों ने गिरफ्तार किया था। वह 1932 में नासिक जेल में थे, जब जयप्रकाश नारायण उनके संपर्क में आए और उन्होंने 1934 में एक साथ कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की शुरुआत की। उन्होंने 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया और फिर से जेल गए। अपनी जेल की अवधि समाप्त होने के बाद उन्होंने विधायी राजनीति में प्रवेश किया, वे बॉम्बे नगर

निगम के मेयर चुने गए। मसानी जवाहरलाल नेहरू के करीबी दोस्त थे। लेकिन अल्पसंख्यकों के मामले में वह नेहरू सरकार से सहमत नहीं थे, इसलिए उन्हें आयोग से हटा दिया गया और मई 1948 में एक साल के लिए ब्राजील में भारतीय राजदूत नियुक्त किया गया। ब्राजील में अपने कार्यकाल के बाद, वह भारत लौट आए और टाटा समूह के अध्यक्ष जेआरडी टाटा के शेफ डे कैबिनेट बन गए। 1959 में उन्होंने सी राजगोपालाचारी के साथ स्वतंत्र पार्टी की स्थापना की। उन्होंने स्वतंत्र पार्टी के उम्मीदवार के रूप में राजकोट से उपचुनाव जीता। उन्होंने 1971 तक राजकोट का प्रतिनिधित्व किया। वे उन कुछ राजनेताओं में से एक थे जिन्होंने प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा बैंकों के राष्ट्रीयकरण का विरोध किया था। स्वतंत्र पार्टी संसद में भारत की सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी थी और मसानी लोकसभा में इसके नेता होने के नाते, वित्त विधेयकों पर बहस शुरू की और कांग्रेस सरकार को सख्ती से काम करने के लिए मजबूर किया।

1962 से 1977 तक प्रशांत कुमार घोष

प्रशांत कुमार घोष रांची से तीन बार सांसद चुने गये थे। उन्होंने राजनीति में कभी उसूलों से समझौता नहीं किया। प्रशांत कुमार घोष एक जमींदार परिवार से थे। उनके पिता का नाम तारा प्रसन्ना घोष था। प्रसन्ना घोष एक जमींदार और स्वतंत्रता सेनानी भी थे। प्रशांत कुमार घोष को रांची और उनके राजनीतिक मित्र पीके घोष के नाम से अधिक जानते थे। उनका पूरा परिवार बंगाल से आकर संयुक्त बिहार के जमाने में ही यहां बस गया था। पीके घोष का जन्म रांची में ही हुआ था। हिंदवीही के घोष कंपाउंड में पूरा परिवार रहता था। दूरदराज से ही लोग घोष कंपाउंड को उनके नाम से जानते थे। आज भी रांची में रहनेवाले पुराने लोग इसी नाम से उन्हें पहचानते हैं। पीके घोष कांग्रेस के टिकट पर पहली बार 1962 से 1967 तक रांची ईस्ट के सांसद रहे थे, फिर 1967 से 1971 तक दूसरी बार सांसद बने और 1971 से 1977 तक तीसरी बार सांसद बने।

पीके घोष ने हमेशा अपनी बदेलात मुकाम हासिल की। जीवन के अंतिम समय तक उन्होंने भी अपनी नीति सिद्धांत से समझौता नहीं किया। कभी भी अपने लोगों को लाभ दिलाने के लिए अपने राजनीतिक कद का इस्तेमाल नहीं किया। अपनी ईमानदारी के कारण समाज में उनकी एक अलग पहचान थी। उनके घरवालों को आज भी याद है कि पहले चुनाव में जब वे स्वतंत्र पार्टी से चुनाव मैदान में थे, तो उन्होंने 15,000 रुपये खर्च किया था। प्रचार के लिए रिक्षा, साइकिल और अपनी गाड़ी का इस्तेमाल करते थे। वे एक

कांग्रेस

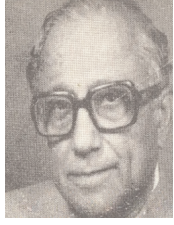


शिक्षाविद भी थे। रांची जिला स्कूल से मैट्रिक तक की पढ़ाई पूरी करने के बाद संत जेवियर्स कॉलेज से आइएससी की शिक्षा पूरी की। वह संत जेवियर्स कॉलेज के पहले बैच के विद्यार्थी थे। इसके बाद उन्होंने संत कोलंबा कॉलेज, हजारीबाग से बीएससी की पढ़ाई पूरी की। उन्हें बीएससी में डिस्टिक्शन मिला था।

इसके बाद फूड एंड बेकिंग टेक्नोलॉजी की पढ़ाई करने के लिए ब्रिटेन चले गये थे। वहां से पढ़ाई पूरी करने के बाद वह लौटे। समाज में उनकी पहचान शिक्षाविद के साथ-साथ बेकरी मैन के रूप में भी थी। उन्होंने उस समय अत्याधुनिक सुविधायुक्त बेकरी का प्लांट रांची में खोला था। प्रशांत घोष का निधन 25 दिसंबर 2013 को हुआ। परिवार में पत्नी छवि घोष, तीन पुत्र सिद्धार्थ घोष, रुद्र प्रताप और विक्रमादित्य के अलावा अन्य सदस्य हैं। वर्तमान में बड़े पुत्र सिद्धार्थ घोष और उनकी मां रांची में रहती हैं। छोटा भाई विदेश में और एक भाई वर्धमान चले गये हैं। आज भी उनका परिवार सामाजिक कार्यों में बड़-चढ़ कर हिस्सा लेता है। उनकी मां भी इसमें बड़-चढ़ कर सहयोग करती हैं। प्रशांत कुमार ने रांची में कई शैक्षणिक संस्थानों को खोलने में सहयोग किया था। वहीं आई बैक की स्थापना से लेकर अन्य सामाजिक कार्यों में भी बड़-चढ़ कर हिस्सा लिया, जिस कारण से समाज के सभी धर्मों के लोगों के बीच उनकी एक अलग पहचान थी।

1977 से 1980 तक रवींद्र वर्मा

जनता पार्टी



रवींद्र वर्मा 1977 में रांची से जनता पार्टी के उम्मीदवार के रूप में चुने गए। उन्होंने 1980 से 1984 तक 7वीं लोकसभा में मुंबई उत्तर का प्रतिनिधित्व किया। इसके पहले वे 1962 में कांग्रेस के टिकट पर केरल के तिरुवल्ला से लोकसभा के लिए चुने गए थे। 1969 में जब कांग्रेस का विभाजन हुआ, तो वे कांग्रेस (संगठन) के महासचिव बने रहे और मोरारजी देसाई, निजलिंगप्पा और कामराज के साथ मिलकर संगठन की स्थापना की। 1977 से 1979 तक भारत में मोरारजी देसाई मंत्रालय में श्रम और संसदीय मामलों के मंत्री के रूप में कार्य किया।

राजनीति : उन्होंने 1942 में सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया। चेन्नई के क्रिश्चियन कॉलेज में अध्ययन करते समय वे स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। वे भारतीय छात्र कांग्रेस और विश्व युवा सभा के संस्थापक अध्यक्ष थे। वे आपातकाल (1975-77) का विरोध करने में राजनीतिक रूप से सक्रिय थे और भूमिगत कोशिकाओं का आयोजन किया। वह 1989 में इसके संस्थापक-अध्यक्ष दिवाकर की मृत्यु के बाद से गांधी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष रहे थे। वह वर्षा में गांधी विचार परिषद के संस्थापक-अध्यक्ष थे। वे गुजरात विद्यापीठ के कुलाधिपति भी थे।

व्यक्तिगत जीवन : रविंद्र वर्मा केरल के मावेलिककार के शाही परिवार से संबंधित थे। सक्रिय राजनीतिक जीवन के बाद 2006 में 81 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।

कांग्रेस



1989 से 1991 व 2004 से 2014 तक सुबोधकांत

सुबोध कांत सहाय रांची से तीन बार सांसद बनेने में कामयाब रहे। पहली बार जनता दल के टिकट पर 1989 में रांची लोकसभा से सांसद चुने गए। इसके बाद 2004 और 2009 में कांग्रेस के टिकट पर जीतने में सफल रहे। पहली बार केन्द्र में बीपी सिंह और चंद्रशेखर सरकार में गृह मंत्री भी रहे। फिर मनमोहन की सरकार में भी मंत्री पद की जिम्मेवारी सँभाली। सुबोधकांत सहाय सोनिया गांधी के सबसे करीबी लोगों में से एक माना जाता है कुख्यात कोयला घोटाले में कोयला खदान ब्लॉकों के आवंटन में अपने भाई का पक्ष लेने के आलोक में सहाय को मनमोहन सिंह द्वारा 2012 में उनके मंत्री पद से इस्तीफा देने के लिए कहा गया था।

उनका जन्म 11 जून 1951 को : लोतेहार जिला में एक धार्मिक चित्रगुप्तवंशी कायस्थ परिवार में बृजदेव सहाय और इंद्राणी देवी के घर हुआ था। उन्होंने एएन कॉलेज , पटना और रांची विश्वविद्यालय से बीएससी और एलएलबी किया। वे छात्र जीवन से ही सामाजिक और करणायकारी गतिविधियों में शामिल रहे हैं और युवाओं को संगठित करने, दलित, वंचित और अल्पसंख्यक समुदायों के उत्थान के लिए काम करने के लिए कई राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किए हैं। **राजनीतिक कैरियर** : सुबोध कांत सहाय 70 के दशक के जय प्रकाश आंदोलन में भाग लिया और चंद्रशेखर सिंह, सत्येंद्र नारायण सिन्हा और ठाकुर प्रसाद जैसे जनता पार्टी के दिग्गजों के संरक्षण में तैयार हुए। बिहार जनता पार्टी के अध्यक्ष सिन्हा के कहने पर, उन्हें हटिया से उम्मीदवार बनाया गया, जहाँ से उन्होंने जीत हासिल की और विधानसभा में अपनी चुनावी शुरुआत की। उन्होंने अपना राजनीतिक जीवन हटिया, रांची से शुरू किया। मई 2009 में हुए चुनावों में वे फिर से रांची से सांसद चुने गए थे। कांग्रेस रांची से 14 सीटों में से केवल एक सीट और बिहार से 40 सीटों में से केवल 3 सीटें जीतने में सफल रही थी। सहाय ने 2004 से 2009 तक प्रथम मनमोहन सिंह मंत्रिमंडल में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के लिए राज्य मंत्री (व्यवस्थापक) के रूप में कार्य किया। 2009 के चुनावों में कांग्रेस की दूसरी जीत के बाद, जिसमें मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री

कांग्रेस



1991 से पांच बार सांसद चुने गए राम टहल चौधरी

राम टहल चौधरी रांची लोकसभा सीट से पांच बार सांसद रहे । 1991 से 2004 तक लगातार चार बार और उसके बाद 2014 से 2019 तक एक बार सांसद रहे। लेकिन 2019 के लोकसभा चुनावों में उन्हें टिकट नहीं मिलने पर उन्होंने पार्टी से इस्तीफा दे दिया। उन्होंने 2019 में रांची से निर्दलीय के तौर पर चुनाव लड़ा, लेकिन उन्हें 2.5% से भी कम वोट मिले। राम टहल चौधरी स्वर्गीय दशरथ चौधरी के पुत्र हैं। उनका जन्म रांची जिले के ओरमांझी ब्लॉक के कुच्चू गांव में हुआ था। उनके पिता का नाम दशरथ चौधरी और मां का नाम जानकी देवी था। उन्होंने सावित्री देवी से विवाह किया और उनके दो बेटे और दो बेटियां हैं। वे धर्म से हिंदू और जाति से कुर्मी हैं।

मुखिया से सांसद तक सफर : रामटहल चौधरी ओरमांझी के कुच्चू गांव में ग्राम पंचायत के मुखिया थे। फिर वे 1969 से 71 और 1972 से 1977 तक बिहार विधानसभा के लिए चुने गए। फिर वे 1977 से 1996 तक ओरमांझी के ग्राम पंचायत के मुखिया रहे। फिर वे 1988 में रांची में भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष बने । 1991 और 1996 में वे दो बार लोकसभा के सांसद बने। फिर वे 1988 और फिर 1999 में फिर से लोकसभा के लिए चुने गए। 2014 में वे फिर से लोकसभा के लिए चुने गए।

राम टहल चौधरी एक प्रसिद्ध समाजसेवी हैं। उन्होंने रांची में कई शैक्षणिक संस्थान स्थापित किए हैं। उन्होंने 1978 में बूटी रांची में राम टहल चौधरी द्वारा राम टहल चौधरी हाई स्कूल की स्थापना की। यह स्कूल सीबीएसई, दिल्ली से संबद्ध है और सीबीएसई, पटना क्षेत्र के अंतर्गत आता है। उन्होंने 2008 में राम टहल चौधरी इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी की स्थापना की और यह रांची विश्वविद्यालय से संबद्ध है और अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद द्वारा अनुमोदित है । उन्होंने राम टहल चौधरी बीएड कॉलेज की भी स्थापना की और यह रांची विश्वविद्यालय से संबद्ध है।

के रूप में बने रहे , सहाय को उसी खाद्य प्रसंस्करण उद्योग विभाग के साथ कैबिनेट रैंक में पदेनतन किया गया। जनवरी 2011 में मंत्रालय फेरबदल के दौरान उन्हें पर्यटन मंत्रालय (भारत) का कैबिनेट मंत्री बनाया गया।

भाजपा



हजारीबाग



हजारीबाग लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र झारखंड राज्य के 14 संसदीय निर्वाचन क्षेत्रों में से एक है। यह निर्वाचन क्षेत्र पूरे रामगढ़ जिले और हजारीबाग जिले के कुछ हिस्से को कवर करता है। लोकसभा चुनाव 2024 के लिए झारखंड में हजारीबाग सीट काफी हॉट मानी जा रही है। यहां पर मुख्य रूप से भाजपा और कांग्रेस आमने-सामने हैं। हजारीबाग लोकसभा सीट के लिए चुनाव में सांसद जयंत सिन्हा का टिकट काट कर सदर विधायक मनीष जायसवाल को एनडीए ने उम्मीदवार बनाया है। वहीं, जय प्रकाश भाई पटेल इंडी गठबंधन के उम्मीदवार हैं। वे भांडू विधायक हैं, उन्होंने भाजपा के टिकट पर चुनाव जीता था। अब भाजपा से नाता तोड़कर कांग्रेस का दामन थामा है।

हजारीबाग लोकसभा सीट का सफरनामा

हजारीबाग लोकसभा सीट			
1952-1980			
जीते	हारे		
राम नारायण सिंह छोटा नागपुर संथाल परगना जनता पार्टी	1952	झानी राम	
ललिता राज लक्ष्मी छोटा नागपुर संथाल परगना जनता पार्टी	1957	बदरुज्जामां खान	
निर्दलीय बसंत नारायण सिंह	1967	दामोदर पांडे	
दामोदर पांडे	1971	ललिता राज लक्ष्मी	
बसंत नारायण सिंह	1977	दामोदर पांडे	
बसंत नारायण सिंह	1980	अजीमा हुसैन	

हजारीबाग लोकसभा सीट			
1984-1999			
जीते	हारे		
दामोदर पांडे	1984	मुवनेश्वर मेहता	
यदुनाथ पांडे	1989	मुवनेश्वर मेहता	
मुवनेश्वर मेहता	1991	यदुनाथ पांडे	
एमएल विश्वकर्मा	1996	मुवनेश्वर मेहता	
यशवंत सिन्हा	1998	मुवनेश्वर मेहता	
यशवंत सिन्हा	1999	अकलू राम महतो	

बंटवारे के बाद हजारीबाग			
लोकसभा सीट			
जीते	हारे		
मुवनेश्वर मेहता	2004	यशवंत सिन्हा	
यशवंत सिन्हा	2009	सौरभ नारायण सिंह	
जयंत सिन्हा	2014	सौरभ नारायण सिंह	
जयंत सिन्हा	2019	गोपाल प्रसाद साहू	

1989 में भाजपा ने दर्ज की जीत	
	यदुनाथ पांडे भाजपा

1991 में सीपीआई के खाते में गई हजारीबाग सीट	
	मुवनेश्वर मेहता सीपीआई

जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस चौथे स्थान पर चली गई।

1952 में हुए पहले लोकसभा चुनाव में रामनारायण सिंह जीते



रामनारायण सिंह
नागपुर संथाल परगना जनता पार्टी

हजारीबाग की लोकसभा सीट अभी कांग्रेस के दबदबे की सीट रही ही नहीं। 1952 में हुए पहले लोकसभा चुनाव में इस लोकसभा सीट का नाम पलामू कम हजारीबाग था। यहां से रामनारायण सिंह छोटा नागपुर संथाल परगना जनता पार्टी से जीत हासिल की थी। 1952 के लोकसभा चुनाव में रामनारायण सिंह को कुल 57 फीसदी वोट मिले थे। जबकि दूसरे नंबर पर झानी राम थे, जो भारतीय कांग्रेस से चुनाव लड़े थे। इन्हें कुल 35.5 फीसदी वोट मिले थे। सोशलिस्ट पार्टी के शिव मंगल प्रसाद को 7.5 फीसदी वोट मिले थे।

1952 में दोबारा हुए चुनाव



जीतन खरवार
कांग्रेस

1952 में ही यहां दोबारा लोकसभा चुनाव हुए। 1952 में हुए इस चुनाव में इस लोकसभा सीट का नाम पलामू कम हजारीबाग कम रांची लोकसभा सीट रखा गया। इस बार यहां से कांग्रेस पार्टी ने जीत दर्ज की। यहां से जीतन खरवार ने जीत दर्ज की। कांग्रेस को कुल 38 फीसदी वोट मिले। जबकि जनता पार्टी को 15.2, झारखंड पार्टी को 15 फीसदी और छोटा नागपुर संथाल परगना जनता पार्टी को 11 फीसदी वोट मिले।

1957 में जीतीं ललिता राज लक्ष्मी



ललिता राज लक्ष्मी
छोटा नागपुर संथाल परगना जनता पार्टी

1967 में जीता निर्दलीय प्रत्याशी



बसंत नारायण सिंह
निर्दलीय

1967 के लोकसभा चुनाव में यहां से इंडिपेंडेंट प्रत्याशी बी सिंह ने दिए दर्ज की। इन्हें कुल 41.6 फीसदी वोट मिले। जबकि इंडियन नेशनल कांग्रेस के डी पांडे को 31.8 फीसदी वोट मिले। भारतीय जनसंघ के खाते में 13.1 फीसदी वोट आए थे, जबकि कांग्रेस पार्टी ऑफ इंडिया को 6.6 फीसदी वोट मिले।

1971 में कांग्रेस को मिली जीत



दामोदर पांडे
कांग्रेस

1977 में जनता पार्टी ने दर्ज की जीत

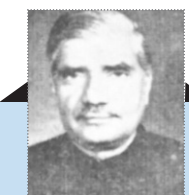


बसंत नारायण सिंह
जनता पार्टी

1980 में फिर जीती जनता पार्टी

1980 के लोकसभा चुनाव में यह सीट फिर जनता पार्टी के हिस्से चली गई। कुंवर बसंत नारायण सिंह जनता पार्टी से चुनाव लड़े थे। इन्हें कुल 34.2 फीसदी वोट मिले, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के खाते में 23.7 फीसदी वोट मिले थे। कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया को 18.5 फीसदी वोट मिले। जबकि जनता पार्टी को कुल 10 फीसदी वोट मिले थे।

1984 में कांग्रेस ने दर्ज की जीत



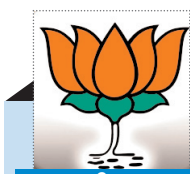
दामोदर पांडे
कांग्रेस

1984 के लोकसभा चुनाव में यह सीट कांग्रेस के खाते में चली गई। यहां से दामोदर पांडे विजय हुए। इन्हें कुल 46.4 फीसदी वोट मिले। जबकि दूसरे नंबर पर कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया रही, जिसे कुल 30.6 फीसदी वोट मिले। इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने भी अपना उम्मीदवार उतारा था, लेकिन उन्हें सिर्फ 6.9 फीसदी वोट भारतीय जनता पार्टी को मिले थे, जबकि 4.8 फीसदी बोर्ड झारखंड मुक्ति मोर्चा को मिले थे।

1991 के उपचुनाव में सीपीआई ने फिर दर्ज की जीत

1991 के लोकसभा उप चुनाव में हजारीबाग की सीट फिर कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया के खाते में चली गई। 33.7 फीसदी वोट लेकर के इस सीट को कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया ने जीता था, जबकि भारतीय जनता पार्टी को 28.8 फीसदी वोट मिले थे।

1996 में फिर जीती भारतीय जनता पार्टी



महावीर लाल विश्वकर्मा
भाजपा

विश्वकर्मा ने जीते। इन्हें 27.7 फीसदी वोट मिले। जबकि कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया के भुवनेश्वर प्रसाद मेहता को 26.4 फीसदी वोट और झारखंड मुक्ति मोर्चा को 15.6 फीसदी वोट मिले। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस चौथे स्थान पर चली गई। उसे सिर्फ 8.9 फीसदी वोट मिले।

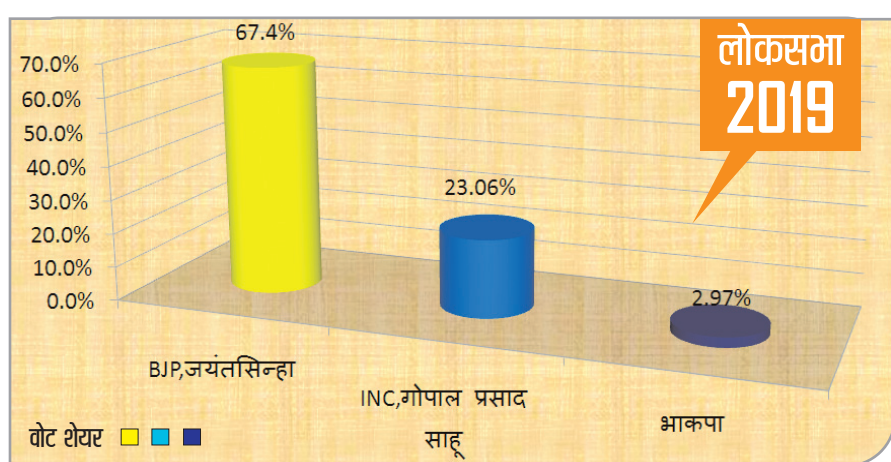
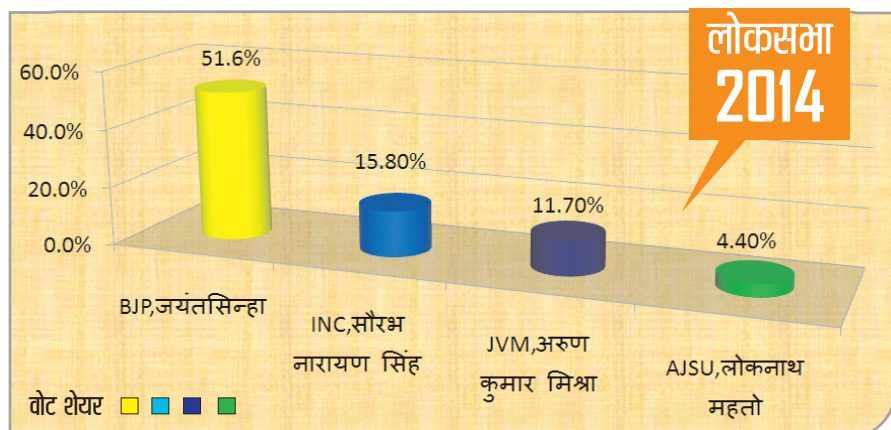
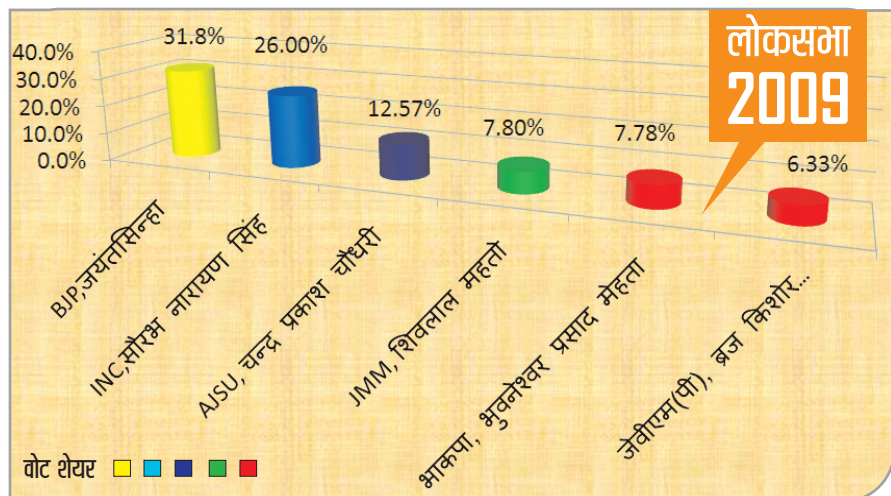
संसदीय राजनीति में मनीष जायसवाल का हुआ आगाज

रामगढ़। हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र से भाजपा उम्मीदवार मनीष जायसवाल भारी मतों से जीत गए हैं। जनता और पार्टी कार्यकर्ता उन्हें बधाई देने पहुंचे। पार्टी कार्यकर्ताओं और जनता ने आतिशबाजी कर खुशी मनाई। सड़कों पर कई जगह पटाखे फोड़े गए। कई जगहों पर कार्यकर्ताओं ने अबीर-गुलाल लगाकर एक-दूसरे को जीत की बधाई दी। मनीष जायसवाल भी सभी कार्यकर्ता और आम जनता के प्रति आभार प्रकट किया।



कार्यकर्ताओं ने बांटी मिठाई

रामगढ़। भारतीय जनता पार्टी रामगढ़ कैट मण्डल के अध्यक्ष सूर्यवंश श्रीवास्तव के नेतृत्व में हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी मनीष जायसवाल की बम्पर जीत की खुशी में मंगलवार को सुभाष चौक पर पार्टी कार्यकर्ताओं ने खुशी मनाई। लड्डू से एक दूसरे का मुंह मीठा कराकर एवं पटाखे छोड़कर और एक दूसरे को अबीर गुलाल लगाकर खुशी का इजहार किया। मौके पर सूर्यवंश श्रीवास्तव ने कहा कि हम सभी मनीष जायसवाल को उनकी जीत पर बधाई देते हैं। मौके पर मुख्य रूप से भारतीय जनता पार्टी के जिला मीडिया प्रभाती राजीव पामदत, पूर्व जिला अध्यक्ष (ओबीसी मोर्चा) मनोज जायसवाल, शहदेव ठाकुर, नमैंद्र चंचल, वरुण सिंह, भगवान प्रसाद, मुन्ना सोनकर, मिथलेश मण्डल, शीतल सिंह, शशिकांत सिंह, सुरेंद्र शर्मा, सुशांत पांडेय, अजित गुप्ता, महेश ठाकुर, सत्यजीत सिंह, विजय पाठक, अरविंद सिंह, संजय श्रीवास्तव, मंडु त्रिपाठी, सागर श्रीवास्तव, दीपू श्रीवास्तव, धीरज साहू, मणिशंकर ठाकुर, अरुण राय गनोउरी, सुबोध सिंह, महेश चौधरी, रवि सिन्हा, छोटू श्रीवास्तव, विनय कुमार, अंशु पाठक, शिव कुमार गुप्ता, सैयद किरमानी, अशोक लाल उपस्थित थे।



1998 में बीजेपी से यशवंत सिन्हा ने दर्ज की जीत



यशवंत सिन्हा
भाजपा

1999 में यशवंत सिन्हा ने फिर से दर्ज की जीत

1999 में हुए फिर लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के यशवंत सिन्हा ने फिर से इस सीट पर जीत दर्ज की। यशवंत सिंह को कुल 47.3 फीसदी वोट मिले थे। जबकि राष्ट्रीय जनता दल 16.2 फीसदी वोट मिले थे। झारखंड मुक्ति मोर्चा 11.9 फीसदी वोट के साथ तीसरे स्थान पर रही। जबकि कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया 9.3 फीसदी मत प्राप्त कर सकी।

2004 में झारखंड बंटवारे के बाद सीपीआई के खाते में आई सीट



मुवनेश्वर मेहता
सीपीआई

2004 में हुआ लोकसभा चुनाव झारखंड बंटवारे के बाद हजारीबाग सीट का पहला चुनाव था। जिसमें हजारीबाग झारखंड राज्य का लोकसभा सीट बन गया था। 2004 में हुए लोकसभा चुनाव में कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया ने यहां जीत दर्ज की। कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया को 50.5 फीसदी वोट मिले थे, जबकि भारतीय जनता पार्टी के यशवंत सिन्हा को 35.5 फीसदी वोट मिले थे।

2009 में फिर जीती भाजपा



जयंत सिन्हा
भाजपा

2009 हजारीबाग लोकसभा चुनाव झारखंड बंटवारे के बाद का दूसरा लोकसभा चुनाव था। इस बार यहां से भारतीय जनता पार्टी के यशवंत सिन्हा विजय हुए। भारतीय जनता पार्टी को कुल 31.8 फीसदी जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 26 फीसदी वोट मिले थे। आजसू को 12.6 फीसदी और झारखंड मुक्ति मोर्चा 7.8 फीसदी वोट प्राप्त हुए।

2014 में दिखा मोदी का मैजिक



जयंत सिन्हा
भाजपा

2014 का लोकसभा चुनाव मोदी लहर के असर पर लड़ा गया था और इस बार हजारीबाग लोकसभा सीट से 2009 के सांसद रहे। यशवंत सिन्हा के बेटे जयंत सिन्हा चुनाव लड़े। जयंत सिंह को 2014 लोकसभा सीट में कुल 42.5 फीसदी वोट मिले थे, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस यहां दूसरे स्थान पर थी। 25.6 फीसदी वोट कांग्रेस को मिले थे। तीसरे स्थान पर 16.01 फीसदी वोट लेकर के आजसू पार्टी थी।

2019 में यशवंत के बेटे जयंत सिन्हा ने दर्ज की जीत

बात 2019 लोकसभा की करें तो इस लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार जयंत सिन्हा ने जीत दर्ज की थी। जिन्हें 67.4 फीसदी वोट मिले थे। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस यहां दूसरे स्थान पर थी, कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया तीसरे स्थान पर थी।

कोडरमा



कोडरमा लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र पूरे कोडरमा जिला तथा हजारीबाग एवं गिरिडीह जिलों के कुछ हिस्सों को कवर करता है। कोडरमा को अम्रक के लिए जाना जाता है। बिहार के बॉर्डर पर होने के कारण इसे झारखंड का प्रवेश द्वार भी कहा जाता है। कोडरमा लोकसभा सीट आम तौर पर भाजपा की पारंपरिक सीट रही है। यहां पर भाजपा ने सभी पार्टियों से अधिक बार जीत दर्ज की है। 1952 से 1971 आम चुनाव तक कोडरमा लोकसभा क्षेत्र अस्तित्व में नहीं था। यह 1977 में अस्तित्व में आया और इसी वर्ष पहला लोकसभा चुनाव हुआ। कोडरमा लोकसभा क्षेत्र में छह विधानसभा क्षेत्र शामिल हैं। ये हैं कोडरमा, बरकट्टा, धनवार, बगोदर, जमुआ (एससी रिजर्व) व गांडेय।

कोडरमा लोकसभा सीट का सफरनामा

कोडरमा लोकसभा सीट			
1977-1989			
जीते		हारे	
रीतलाल प्रसाद वर्मा	1977	चपलेंद्र मट्टाचारी	
रीतलाल प्रसाद वर्मा	1980	जावेद वारसी	
तिलकधारी सिंह	1984	रीतलाल प्रसाद वर्मा	
रीतलाल प्रसाद वर्मा	1989	तिलकधारी सिंह	

कोडरमा लोकसभा सीट			
1991-1999			
जीते		हारे	
मुमताज अंसारी	1991	रीतलाल प्रसाद वर्मा	
रीतलाल प्रसाद वर्मा	1996	रमेश प्रसाद यादव	
रीतलाल प्रसाद वर्मा	1998	आविद हुसैन	
तिलकधारी सिंह	1999	रीतलाल प्रसाद वर्मा	

1996 में फिर जीते रीतलाल प्रसाद वर्मा



रीतलाल प्रसाद वर्मा

भाजपा

1996 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के रीतलाल प्रसाद वर्मा एक बार फिर यहां से जीते। उन्हें 38.7 प्रतिशत वोट मिले जबकि जनता दल के रमेश प्रसाद यादव को 31.2 प्रतिशत, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उमेश चंद्र अग्रवाल को 11 प्रतिशत और झारखंड मुक्ति मोर्चा के सालखन सोरेन को 7.5 प्रतिशत वोट मिले। 1998 के लोकसभा चुनाव में यह सीट एक बार फिर भारतीय जनता पार्टी के खते में गई और रीतलाल प्रसाद वर्मा 41.2 फीसदी वोट के साथ

बंटवारे के बाद कोडरमा लोकसभा सीट

जीते		हारे	
बाबूलाल मरांडी	2004	चंपा वर्मा	
बाबूलाल मरांडी	2009	राजकुमार यादव	
रवींद्र कुमार राय	2014	राजकुमार यादव	
अन्नपूर्णा देवी	2019	बाबूलाल मरांडी	

2001 में गायब हो गए थे पूर्व सांसद मुमताज, आज तक नहीं चला पता



मुमताज अंसारी

जनता दल

वर्ष 1991 में मंडल की लहर में जनता दल के टिकट पर सांसद बने प्रोफेसर मुमताज अंसारी के गायब होने के रहस्य पर से आज तक पर्दा नहीं उठ पाया है। एक समय लालू प्रसाद यादव के करीबी रहे बिहार शरीफ के निवासी मुमताज अंसारी को लालू प्रसाद ने 1991 में कोडरमा से उम्मीदवार बनाकर विजयश्री दिलाई थी। इसके बाद 1996 में उन्हें लालू प्रसाद ने बेटिकट कर स्व. रमेश प्रसाद यादव को कोडरमा से चुनाव लड़ाया था, लेकिन यह चुनाव वे हार गए थे। इसके बाद 1999 में मुमताज अंसारी पुनः एनसीपी के टिकट पर कोडरमा से चुनाव लड़े, लेकिन ज्यादा वोट नहीं ला सके थे। वर्ष 2001 में अचानक उनके रहस्यमय ढंग से गायब होने का मामला सामने आया। उनकी पत्नी ने हजारीबाग पुलिस को एक शिकायत पत्र देकर कहा था कि मुमताज अंसारी दिल्ली से गया जंक्शन में उतरने के बाद सड़क मार्ग से हजारीबाग गए थे। यहां से वे रांची के लिए निकले थे, जिसके बाद से उनका पता नहीं चल पाया। उनकी पत्नी ने मुमताज अंसारी के सहयोगी पर साजिश के तहत हत्या का आरोप लगाया था। लेकिन एक पूर्व सांसद के इस तरह गायब होने की तह तक पुलिस आजतक नहीं पहुंच पाई। न तो पूर्व सांसद के शव का पता चल पाया और ना ही उनके इस तरह गायब होने के रहस्य पर से पर्दा उठ सका।

1977 में हुआ पहला लोकसभा चुनाव



रीतलाल प्रसाद वर्मा

जनता पार्टी

1977 में हुए पहले लोकसभा चुनाव में जनता पार्टी के रीतलाल प्रसाद वर्मा कोडरमा लोकसभा सीट से जीते थे और उन्हें कुल 64.8 प्रतिशत वोट मिले थे। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के चपलेंद्र भट्टाचार्य को 20.4 फीसदी वोट मिले। 1980 के लोकसभा चुनाव में जनता पार्टी के रीतलाल प्रसाद वर्मा जीते और उन्हें 39.5 प्रतिशत वोट मिले, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के जावेद वारसी को 31.3 प्रतिशत वोट मिले।

1984 में कांग्रेस ने जीती सीट



तिलकधारी सिंह

कांग्रेस

1984 के लोकसभा चुनाव में तिलकधारी सिंह ने इस सीट से जीत हासिल की थी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के तिलकधारी सिंह को 57 प्रतिशत वोट मिले जबकि भारतीय जनता पार्टी से चुनाव लड़े रीतलाल प्रसाद वर्मा को 26.6 प्रतिशत वोट मिले।

1989 में भाजपा ने फिर हासिल की जीत



रीतलाल प्रसाद वर्मा

भाजपा

1989 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के रीतलाल प्रसाद वर्मा फिर से इस सीट से जीते, उन्हें कुल 44.5 प्रतिशत वोट मिले, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 25.8 प्रतिशत वोट और झारखंड मुक्ति मोर्चा को 20.3 प्रतिशत वोट मिले।

1991 में जनता दल से मुमताज अंसारी हुए विजयी



मुमताज अंसारी

जनता दल

1991 के लोकसभा चुनाव में जनता दल ने यहां से जीत हासिल की और उनके उम्मीदवार मुमताज अंसारी को 32.6 फीसदी वोट मिले. जबकि भारतीय जनता पार्टी के रीतलाल प्रसाद वर्मा को 29.7 फीसदी वोट मिले. जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के तिलकधारी प्रसाद सिंह को 25.7 फीसदी वोट मिले।

1999 में जीती कांग्रेस



तिलकधारी प्रसाद सिंह

कांग्रेस

1999 के लोकसभा चुनाव में यह सीट भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने जीती थी। इसमें तिलकधारी प्रसाद सिंह को 45.4 फीसदी वोट मिले थे, जबकि भारतीय जनता पार्टी के रीतलाल प्रसाद वर्मा को 43.8 फीसदी वोट मिले थे।

2004 में जीते बाबूलाल मरांडी



बाबूलाल मरांडी

भाजपा

झारखंड विभाजन के बाद 2004 में हुए पहले लोकसभा चुनाव में यहां से भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार बाबूलाल मरांडी ने जीत हासिल की। 2004 में कोडरमा लोकसभा सीट ही एकमात्र ऐसी सीट थी जहां भारतीय जनता पार्टी विजयी रही थी। दूसरे स्थान पर झारखंड मुक्ति मोर्चा की चंपा वर्मा रही थीं। 2009 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी से अलग होकर अपनी पार्टी बनाने वाले बाबूलाल मरांडी एक बार फिर कोडरमा लोकसभा सीट से विजयी हुए। झारखंड विकास मोर्चा प्रजातांत्रिक पार्टी के अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी को 25.6 फीसदी वोट मिले, जबकि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी लिबरेशन को 19.3 फीसदी वोट, भारतीय जनता पार्टी को 14.8 फीसदी वोट और राष्ट्रीय जनता दल को 14.2 फीसदी वोट मिले।

2014 लोस चुनाव में रवींद्र राय जीते



रवींद्र कुमार राय

भाजपा

2014 के लोकसभा चुनाव में मोदी लहर थी और जिसका फायदा भाजपा को मिला। भाजपा उम्मीदवार रवींद्र कुमार राय ने कोडरमा लोकसभा सीट से जीत हासिल की। उन्हें कुल 35.7 फीसदी वोट मिले. जबकि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी लिबरेशन दूसरे स्थान पर थी, वहीं झारखंड मुक्ति मोर्चा प्रजातांत्रिक तीसरे स्थान पर थी।

2019 में अन्नपूर्णा के माथे सजा ताज



अन्नपूर्णा देवी

भाजपा

2019 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने अपना उम्मीदवार बदल दिया और कभी राष्ट्रीय जनता दल की कद्दावर नेता रहीं अन्नपूर्णा देवी को भारतीय जनता पार्टी ने अपने टिकट पर मैदान में उतारा। यह फैसला बीजेपी के लिए सही साबित हुए. भारतीय जनता पार्टी की अन्नपूर्णा देवी 62.3 फीसदी वोट के साथ विजयी रहीं। जबकि 2004 में भारतीय जनता पार्टी को पहली जीत दिलाने वाले और झारखंड के पहले मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी, जिन्होंने अपनी पार्टी झारखंड विकास मोर्चा प्रजातांत्रिक से चुनाव लड़ा था, उन्हें सिर्फ 24.6 फीसदी वोट मिले।

अन्नपूर्णा देवी ने लगातार दूसरी बार बड़े अंतर से जीत हासिल की

नवीन मेल संवाददाता कोडरमा। कोडरमा संसदीय सीट से एनडीए की भाजपा प्रत्याशी अन्नपूर्णा देवी लगातार दूसरी बार सांसद चुनी गई हैं। उन्होंने महागठबंधन के माले प्रत्याशी विनोद सिंह को बड़े अंतर से हराया है।

अन्नपूर्णा देवी वर्ष 2019 में भाजपा में शामिल हुई थीं। उस समय कोडरमा से तत्कालीन सांसद रवींद्र राय का टिकट काटकर भाजपा ने अन्नपूर्णा देवी पर भरोसा जताया था और उन्हें यहां से उम्मीदवार बनाया था। कोडरमा से चार बार विधायक रह चुकीं अन्नपूर्णा देवी के पति रमेश प्रसाद यादव बिहार सरकार में मंत्री रह चुके हैं। पति के असायिक निधन के बाद अन्नपूर्णा देवी ने राजनीति में कदम रखा।

वर्ष 1998 के विधानसभा उपचुनाव और 2000, 2005 और 2009 के विधानसभा चुनाव में अन्नपूर्णा देवी ने बतौर राजद प्रत्याशी लगातार जीत हासिल की। झारखंड में साल 2013 में बनी हेमंत सोरेन की सरकार में अन्नपूर्णा देवी को मंत्री बनाया गया था। वर्ष 2014 में उन्हें कोडरमा विधानसभा सीट से हार का सामना करना पड़ा था। अन्नपूर्णा देवी को तब भाजपा की नीरा यादव ने हराया था।

वर्ष 2019 में कोडरमा लोकसभा सीट पर बतौर भाजपा प्रत्याशी अन्नपूर्णा देवी ने झाविमो प्रत्याशी बाबूलाल मरांडी को 4 लाख 55 हजार 600 मतां के अंतर से पराजित किया था। हालांकि, इस बार जीत का अंतर घट गया, लेकिन जैसा आकलन किया जा रहा था, उससे कहीं अधिक अंतर से अन्नपूर्णा देवी ने जीत हासिल की है। भाजपा को यहां कुल 56 फीसदी वोट हासिल हुए हैं, जबकि भाकपा माले को 32 फीसदी वोट प्राप्त हुआ है।

ये सेवा, समर्पण व गरीब कल्याण की नीतियों की जीत है

कोडरमा। केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री और कोडरमा की सांसद अन्नपूर्णा देवी ने मंगलवार को अपनी जीत के लिए कोडरमा संसदीय क्षेत्र के मतदाताओं, भाजपा, आजसू के सभी कार्यकर्ताओं और भाजपा संगठन से जुड़े सभी नेताओं के प्रति आभार जताया है। उन्होंने कहा कि कोडरमा में सेवा, समर्पण और गरीब कल्याण की जीत हुई है। नारी सम्मान की जीत हुई है। कोडरमा लोकसभा क्षेत्र के जन-जन और कण-कण से उनके आत्मीय, भावनात्मक रिश्ते की जीत हुई है। उन्होंने कहा कि कोडरमा लोकसभा क्षेत्र से भाजपा की यह विजय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के विकसित भारत के संकल्प को समर्पित है। गृह मंत्री अमित शाह के सशक्त भारत को समर्पित है। उन्होंने कहा कि यह जीत भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के सेवा-समर्पण-संगठन के सूत्र को समर्पित है। विजयी होने के बाद मीडिया से मुखातिब

होते हुए अन्नपूर्णा देवी ने कहा कि मैं हमेशा कहती हूँ कि मैं बहू बनकर कोडरमा आई और यहां के एक-एक आंगन ने मुझे बेटी की तरह अपनाया। राजनीति के क्षेत्र में ऐसा स्नेह, इतनी आत्मीयता किस्मत वालों को नसीब होता है। मैं खुद को भाग्यशाली मानती हूँ और यह आत्मीयता ही मुझे अनवरत सेवा की प्रेरणा देती है। मेरे परिवारजनों ने एक बार फिर भरोसा जताते हुए मुझे सेवा का मौका दिया है। मैं आजीवन अनवरत और अथक सेवा के माध्यम से अपने परिवारजनों के स्नेह का ऋण सूद सहित चुकाने की कोशिश करूंगी। चुनाव परिणाम से स्पष्ट है कि देश की जनता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के दूरदर्शी नेतृत्व, मोदी सरकार के 10 साल के जनहितकारी कार्यों और भाजपा की नीतियों को पसंद करती है। देश में एक बार फिर नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एनडीए की सशक्त सरकार बनेगी।



शानदार जीत के बाद

अन्नपूर्णा ने जनता का जताया आभार

गोड़ा



गोड़ा लोकसभा सीट पर कभी कांग्रेस का दबदबा था, लेकिन आज यह क्षेत्र भाजपा का गढ़ माना जाता है। भाजपा और कांग्रेस ने अब तक गोड़ा से क्रमशः आठ-आठ बार जीत दर्ज की है। यहां क्षेत्रीय पार्टियों का दबदबा काफी कम रहा है। मुकाबला हमेशा से भाजपा और कांग्रेस के बीच ही रहा है। गोड़ा लोकसभा सीट पर पिछड़ी जातियों और मुस्लिमों का दबदबा है। इस लोकसभा क्षेत्र में अनुसूचित जाति की आबादी करीब 11 फीसदी और अनुसूचित जनजाति की आबादी करीब 12 फीसदी है। पिछड़ी जातियों की गोलबंदी के कारण भाजपा यहां अच्छा प्रदर्शन करती है। इस सीट पर मतदाताओं की संख्या 15.90 लाख है, इसमें 8.25 लाख पुरुष और 7.64 लाख महिला मतदाता शामिल हैं।

गोड़ा लोकसभा सीट का सफरनामा

गोड़ा लोकसभा सीट 1962-1984

जीते	हारे
प्रभु दयाल हिममतसिंगका	मोहन सिंह ओबेरॉय
प्रभु दयाल हिममतसिंगका	एस तुलसीयान
जगदंबी प्रसाद यादव	जगदीश मंडल
मौलाना समीनुद्दीन	जगदंबी प्रसाद यादव
मौलाना सलाउद्दीन	फाल्गुनी प्रसाद यादव

1977 के चुनाव में जनता पार्टी जीती



जगदंबी प्रसाद यादव
जनता पार्टी

जगदंबी प्रसाद यादव भाजपा के कद्दावर नेता थे और 1977 से 1979 तक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री और फिर मोरारजी देसाई सरकार में वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री रहे। वे झारखंड के गोड़ा से लोकसभा के लिए चुने गए थे। 2002 में अपनी मृत्यु के समय वे आधिकारिक भाषाओं पर संसदीय समिति के संयोजक थे। वे

1981 से 1984 तक बिहार में भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष और बिहार भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष रहे।

1986 में भाजपा ने हासिल की जीत : 1996 की लोकसभा चुनाव में भाजपा फिर से यहां पर जीत दर्ज की। यहां से जगदंबी प्रसाद यादव 35.3 फीसदी वोट हासिल कर शानदार जीत दर्ज की। जनता दल दूसरे स्थान पर रही, जिसे 26.4 फीसदी वोट मिले। जबकि झारखंड मुक्ति मोर्चा को 19.6 फीस रिपोर्ट मिले और वह तीसरे स्थान पर रही। 1996 में कांग्रेस की हालत काफी खराब रही और यहां उन्हें सिर्फ 9.2 फीसदी वोट मिले। गोड़ा में भारतीय जनता पार्टी इस लोकसभा सीट पर कब्जा की थी।

1998 में फिर जीती बीजेपी : 2 साल बाद 1998 फिर हुए लोकसभा उप चुनाव में बीजेपी ने यहां से बाजी मारी। भारतीय जनता पार्टी को कुल 46.5 फीसदी वोट मिले। और जगदंबी प्रसाद यादव फिर से भारतीय जनता पार्टी के सांसद बने। जबकि झारखंड मुक्ति मोर्चा के सुरज मंडल को 35.9 फीसदी वोट मिले। जनता दल 11 फीसदी वोट यहां पास सकी थी।

1999 में बीजेपी ने लगाई जीत की हैट्रिक : 1999 में हुए लोकसभा के चुनाव के लिए भारतीय जनता पार्टी ने फिर सीट पर कब्जा जमाया। जगदंबी प्रसाद यादव 34.5 फीसदी वोट हासिल कर भारतीय जनता पार्टी के खाते में गोड़ा सीट को डाला। वहीं झारखंड मुक्ति मोर्चा को 22 फीसदी वोट मिले। झामुमो की तरफ से सुरज मंडल ने ताल ठोका था, लेकिन वह जीत हासिल नहीं कर सके। 1999 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को गोड़ा सीट पर सिर्फ 17 फीसदी वोट मिले। जबकि कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया को 13.5 फीसदी वोट हासिल हुआ।

1980 में कांग्रेस की हुई जीत



मौलाना समीनुद्दीन
कांग्रेस

1980 में हुए लोकसभा चुनाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने एक बार फिर अपनी सीट को हासिल किया। यहां से समीनउद्दीन ने जीत हासिल की। जबकि दूसरे स्थान पर जनता पार्टी के जगदंबी प्रसाद यादव रहे थे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 1980 के चुनाव में कुल 35.7 फीसदी वोट मिले थे। जबकि जनता पार्टी को 27.30 वोट मिले। 1980 में हुए लोकसभा चुनाव में जगदंबी प्रसाद यादव भारतीय लोक दल से जीते थे। लेकिन जनता पार्टी में जाने के कारण यह सीट उनके हाथ से निकल गई।

1984 में कांग्रेस फिर जीती



मौलाना सलाउद्दीन
कांग्रेस

1984 के लोकसभा चुनाव में भी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने एक बार फिर से गोड़ा सीट पर कब्जा किया। यहां से सलाउद्दीन सांसद चुने गए। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को कुल 44.8 फीसदी वोट मिले। जबकि भारतीय जनता पार्टी को 16.5 फीसदी वोट मिले। वहीं झारखंड मुक्ति मोर्चा को यहां कुल 15.8 फीसदी वोट और कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया को 14.2 फीसदी वोट मिले।

1989 में भाजपा पहली बार जीती



जगदंबी प्रसाद यादव
भाजपा

1989 में हुए लोकसभा चुनाव में पहली बार भारतीय जनता पार्टी ने इस सीट पर जीत दर्ज की। जनार्दन यादव भारतीय जनता पार्टी से इस लोकसभा क्षेत्र से विजयी हुए। इन्हें कुल 53.01 फीसदी वोट मिले थे। वहीं दूसरे स्थान पर झारखंड मुक्ति मोर्चा के सुरज मंडल रहे। इन्हें 21.8 फीसदी वोट मिले थे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 208 फीसदी वोट मिले थे।

1991 में झामुमो ने मारी बाजी



सुरज मंडल
झामुमो

1991 में हुए लोकसभा चुनाव में झारखंड मुक्ति मोर्चा ने गोड़ा सीट पर झामुमो के सुरज मंडल ने बाजी मारी। झारखंड मुक्ति मोर्चा को लोकसभा में कुल 48.5 फीसदी वोट मिले, जबकि भारतीय जनता पार्टी के जनार्दन यादव को कुल 29 फीसदी वोट मिले। वहीं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 16.02 फीसदी वोट प्राप्त हुए।

झारखंड बनने के बाद हुए पहले चुनाव में जीते फुरकान अंसारी



फुरकान अंसारी
कांग्रेस

उम्मीदवार प्रदीप यादव को 41.7 फीसदी वोट मिले। हालांकि लगातार तीन बार भारतीय जनता पार्टी यहां जीती थी, लेकिन झारखंड बंटवारे के बाद यह सीट भाजपा के हाथ से निकल गई।

निशिकांत ने लगातार चौथी बार लहराया जीत का परचम



गोड़ा। गोड़ा संसदीय सीट पर भाजपा प्रत्याशी निशिकांत दुबे ने लगातार चौथी बार जीत का परचम लहरा दिया। उन्होंने इंडी गठबंधन के कांग्रेस प्रत्याशी प्रदीप यादव को 1,57,000 मतों से पराजित किया। निशिकांत दुबे को कुल 6,79,349 वोट मिले हैं। वहीं, कांग्रेस के प्रदीप यादव को 5,73,782 मत प्राप्त हुए। वर्ष 2019 के संसदीय चुनाव में निशिकांत ने अपने प्रतिद्वंद्वी को 1,80,000 मतों के अंतर से हराया था। अपनी जीत सुनिश्चित होने के बाद निशिकांत दुबे शाम में पत्नी और समर्थकों के साथ मतगणना स्थल पहुंचे। पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने कहा कि जीत तो जीत ही होती है। मैंने पहले ही कह दिया था कि प्रदीप यादव मुझसे कभी नहीं जीत सकते हैं। चुनाव से पहले किए अपने वादे के मुताबिक अब प्रदीप यादव को राजनीति से संन्यास लेने की घोषणा करनी चाहिए।

गोड़ा लोकसभा सीट के प्रत्याशियों को मिले कुल मत

निशिकांत दुबे (भाजपा) - 679349
प्रदीप यादव (कांग्रेस) - 573782
बजरंगी महथा (बहुजन समाज पार्टी) - 8012
अनूप कुमार, (प्राउटिस्ट ब्लॉक इंडिया) - 1968
अरुण कुमार, (न्याय धर्म समा) - 2842
कालीपद मुर्मू - 1899
कुमारी दिलेश्वरी (आंबेडकराइट पार्टी ऑफ इंडिया) - 6441
केतन कुमार (राइट टू रिकॉल पार्टी) - 1851
ज्ञानेश्वर झा (जागरूक जनता पार्टी) - 1615
टिपलाल साह (लोकहित अधिकार पार्टी) - 1732
ब्रजकिशोर पंडित - 2058
रामेश्वर मंडल - 3252
सुरज कुमार अमन - 3014
अभिषेक आनंद झा (निर्दलीय) - 9501
अरुण मरीक (निर्दलीय) - 17074
उदय शंकर खवाई (निर्दलीय) - 26425
निलेश कुमार गुप्ता (निर्दलीय) - 10298
मुकेश कुमार झा (निर्दलीय) - 7161
डॉ के. रंगय्या (निर्दलीय) - 2161



कार्यकर्ताओं ने मनाया जश्न



2009 में भाजपा ने फिर हासिल की अपनी सीट



निशिकांत दुबे
भाजपा

2009 में हुए लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार डॉ निशिकांत दुबे ने गोड़ा सीट पर जीत हासिल की। इसके साथ ही गोड़ा एक बार

फिर से कांग्रेस पार्टी से भारतीय जनता पार्टी के खाते में चला गया। 2009 में कांग्रेस के फुरकान अंसारी को 23 फीसदी वोट मिले। जबकि झारखंड विकास मोर्चा प्रजातांत्रिक को 22.02 फीसदी वोट मिले थे। झारखंड मुक्ति मोर्चा के दुर्गा सोरेन यहां से चुनाव लड़े थे। जिन्हें 9.2 फीसदी को मिले थे।

2014 में मोदी लहर का दिखा असर : 2009 में गोड़ा सीट भाजपा के कब्जे में आ चुकी थी। 2014 में हुए लोकसभा चुनाव में एक बार फिर से भारतीय जनता पार्टी ने इस सीट पर जीत दर्ज की। डॉ निशिकांत दुबे भाजपा की उम्मीदवार थे

और इन्हें 36.3 फीसदी वोट मिले। 2014 में सभी लोकसभा सीटों पर मोदी के लहर का असर था। हालांकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के फुरकान अंसारी को 30.5 फीसदी वोट मिले थे। जबकि झारखंड विकास मोर्चा प्रजातांत्रिक को 18.4 फीसदी वोट मिले।

2019 में निशिकांत दुबे ने लगाई जीत की हैट्रिक : 2019 की लोकसभा चुनाव में गोड़ा लोकसभा सीट फिर भाजपा के कब्जे में रही। यहां से 2009 और 2014 के सांसद रहे निशिकांत दुबे ने तीसरी बार जीत दर्ज की। 2019 में गोड़ा से भारतीय जनता पार्टी को कुल 53.4 फीसदी वोट मिले

थे। जबकि झारखंड विकास मोर्चा प्रजातांत्रिक के प्रदीप यादव को 38.8 फीसदी वोट मिले।

गोड़ा सीट का जिस तरीके का राजनीतिक सफर रहा है उससे एक बात तो साफ है कि इस सीट पर भारतीय जनता पार्टी का दबदबा रहा है। हालांकि 1962 में जब यह सीट बनी थी और झारखंड बंटवारे के बाद जब चुनाव हुए थे तो इस सीट पर कांग्रेस का दबदबा था। लेकिन उसके बाद कांग्रेस इस पर अपना कोई मजबूत पकड़ नहीं बना सकी। ना ही झारखंड मुक्ति मोर्चा इस पर मजबूत पकड़ के साथ दावेदारी दे सका।

नई सरकार के सामने होंगी चुनौतियां

भारत ने कोविड-19 महामारी के बाद अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने में महत्वपूर्ण प्रगति की है, लेकिन भू-राजनीतिक कारणों से अब भी झटके के लक्षणों की आशंकाएँ एवं अनिश्चितताएँ अभी हुई हैं। एक मुक्त अर्थव्यवस्था होने के नाते भारत इससे अछूता नहीं है। हालाँकि मूडोज और एस एंड पी जैसी प्रतिष्ठित क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों के अनुसार, विश्व बैंक व अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष तक ने भारत की विकास दर की तारीफ की है। फिर भी चीनराष्ट्रीय बाजरी है। इसलिए नई सरकार का व्यापक एजेंडा परेलु और चुनौती क्षेत्र (अंतरराष्ट्रीय) के लिए उचित नीतियों के माध्यम से भारत की क्षमता को बेहतर बनाने में मददगार बना चाहिए। धरुलु क्षेत्र की नीतियों के तहत सरकार का ध्यान निजी निवेश बढ़ाने और सार्वजनिक कर्ज घटाने पर केंद्रित करना चाहिए। बाजरी क्षेत्र की नीतियों को उन रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जो व्यापार के खुलेपन पर प्रतिबंध लगाए बिना भारत के लिए वैश्विक झटकों के जोखिम को कम करे। अब हम कुछ ऐसे क्षेत्रों की चर्चा कर रहे हैं, जिन पर नई सरकार अपना ध्यान केंद्रित करना चाहेगी। भारत की राष्ट्रीय समृद्धि अलग-अलग राज्यों की समृद्धि से जुड़ी हुई है। आर्थिक समृद्धि के लिए केंद्र सरकार का काम नीति एवं विश्वास का एक संकेत देना तैयार करना है। आर्थिक सुधार के 25 वर्ष बाद वह स्पष्ट है कि केंद्र एवं राज्यों की आर्थिक नीति संबंधी कार्यावाहियों लोगों की आर्थिक नियति को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। देश के आर्थिक विकास और प्रगति के लिए अने वाली सरकार को विकास एवं समृद्धि का लाभ उठाने की खातिर केंद्र-राज्य संबंधों को और मजबूत बनाना होगा। वर्ष 1991 के आर्थिक सुधारों ने आर्थिक विकास में राज्यों की भूमिका को व्यापक तरीके से बढ़ाया। वह प्रक्रिया आज भी जारी है। उसके बाद आने वाली सभी सरकारों ने इस प्रक्रिया को और मजबूत ही बनाया है। केंद्र एवं राज्यों के बीच बेहद सामंजस्यपूर्ण रिश्ते देश के लोगों की आर्थिक समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण होंगे। हालाँकि हाल के महीनों में विभिन्न मुद्दों पर हमने केंद्र और राज्यों के रिश्तों में तनाव देखा है। बेशक, इनमें से कुछ मुद्दे चुनावी मौसम होने के कारण हो सकते हैं, लेकिन राष्ट्रीय विषयों पर राज्यों के अधिकार, वित्तीय स्वायत्तता तथा केंद्र एवं राज्यों की निषम शक्तियाँ ऐसी चुनौतियाँ हैं, जिनका समाधान एक संघीय देश को हमेशा करने की आवश्यकता होती है। यह एक सतत प्रक्रिया है और इतमें कुछ भी असामान्य नहीं है। यदि इनका समाधान न किया जाए, तो ये जरूर असामान्य हो सकते हैं। केंद्र एवं राज्यों के बीच चर्चा, बहस और बातचीत के लिए इस तरह से संस्थागत ढांचा तैयार किया जाना चाहिए कि वह केंद्र-राज्य संबंधों के सभी मुद्दों का भरोसे के आधार पर समाधान सुझाए। हमारे देश का तेजी से शहरीकरण हो रहा है। वर्ष 2030 तक शहरी आबादी के मामले में भारत सबसे ज्यादा शहरीकृत देशों में से एक होगा। चूँकि तेज शहरीकरण के साथ-साथ विस्थापन भी तेजी से बढ़ेगा, इसलिए तेज शहरीकरण के लिए जरूरी संसाधनों के वित्तीयपोषण की खातिर उचित तरीके के बारे में सोचने की जरूरत है। अर्थव्यवस्था और समाज में दूरगामी बदलावों के लिए वित्तीय संसाधनों का प्रावधान महत्वपूर्ण है और इसे रणनीतिक जरूरत ही माना जाना चाहिए। शहरीकरण का लाभ उठाने और चुनौतियों से निपटने के लिए सार्वजनिक निवेश संबंधी समर्थन महत्वपूर्ण होगा। नई सरकार को नए शहरी विकास के एजेंडे पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। साझा बाजार के विकास, उच्च आर्थिक विकास और राज्य के मामले में जीएसटी का व्यापक लाभ उठाने के लिए जीएसटी संरचना के ढाँचे को और ज्यादा सरल बनाने की जरूरत है। दो-दर वाली जीएसटी संरचना तैयार करने के लिए जीएसटी ढाँचे में और सुधार की खातिर परामर्श प्रक्रिया शुरू की जानी चाहिए। अस्तम में, जीएसटी ढाँचे में परिवर्तन केवल जीएसटी परिपद में ही किया जा सकता है। इसलिए इस दिशा में कदम उठाना जीएसटी ढाँचे को सरल बनाने के दीर्घकालीन समाधान के लिए फायदेमंद होगा। नया जीएसटी ढाँचा इस तरह तैयार किया जाना चाहिए, जिसका आधार व्यापक हो, लेकिन कर की दर कम हो। यह आसान काम नहीं है। राज्य और अर्थव्यवस्था के मुद्दे पर ऐसे बदलावों के निहितार्थ को समझने के लिए प्रमुख नीति विश्लेषण एवं आस सहजित बनाने की जरूरत होगी।

इन दिनों

टोल नाकों पर पांच प्रतिशत टैक्स बढ़ोतरी : आखिर जरूरत क्या थी ?

केंद्र सरकार को वैसे भी इस वित्त वर्ष में अपने निर्धारित लक्ष्य से अधिक टोल टैक्स मिलना था, फिर भी पांच प्रतिशत की बढ़ोतरी बहुत आश्चर्य में डालनेवाली है। देश का आम नागरिक जिसने चार पहिए का वाहन खरीद लिया है और कई बार माजबूरी में एक या दो लोगों को लेकर उसकी सफर के लिए विवश है, उसकी जेब टोल टैक्स के नाम पर खाली कबाना कहां कउं उचित कहलाएगा? अब यदि 400 किलोमीटर की यात्रा तय करने के लिए 700 रुपये से भी अधिक देना पड़े, जिसमें कि कई व्यवसायों में 5 प्रतिशत बढ़ाते हुए अतिरिक्त रुपये और देना होंगे, तब ऊपर विचार करें कि केंद्र सरकार को इस बढ़ोतरी पर प्रश्न क्यों नहीं उठे किए जाएं? वास्तव में भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) ने 04 जून से (पनाथपरआई) ने 04 जून से बढ़ाकर टोल दरों में औसतन 5 फीसदी बढ़ोतरी की घोषणा कर

फोसदी बढ़ोतरी की घोषणा कर
भारतीय राष्ट्रीय
राजमार्ग प्राधिकरण को
लगता होगा कि यदि
फिर भी भाजपा सत्ता
में आ गई तो उनकी
बुरी गत कर देगी।
इसलिए अभी रुपये न
बढ़ाकर चुनाव बाद
इसे लागू करेंगे।

सभी को चौकाया है। जिसमें कि कहा जा रहा है कि संशोधित संस्करण पहले 01 अप्रैल से प्रभावी होने वाली थी, किंतु लोकसभा चुनाव के कारण इन्हें टाल दिया गया। अब प्रश्न भी है कि क्यों टाला गया? क्या इसलिए टाला गया क्योंकि सातवें और अंतिम फेज में उत्तर प्रदेश की हाई प्रोफाइल सीटें वाराणसी पर भी वोटिंग होना थी, जहाँ से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने तीसरी बार चुनाव जीत लड़ा है? या फिर इसलिए क्योंकि फेज के 8 राज्यों और केंद्र शासित

प्रदेश की 57 सीटों पर एक जून को मतदान होना था, यदि यह टोल देना पहले से घोषित कर देते तो प्रथमश्रेणी नरेंद्र मोदी के सांभल भाजपा को हो सकता है चुनाव मतदान में बड़ा नुकसान उठाना पड़ता। क्योंकि चुनाव यहां किसी एक राज्य में नहीं हो रहे थे, बल्कि उत्तर प्रदेश की 13, पंजाब की सभी 13, बिहार की 8, हिमाचल प्रदेश की 4, झारखंड की 3, पश्चिम बंगाल की 9 और ओडिशा की 6 सीटों पर वोट डाले जाने थे। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण को लगता होगा कि यदि फिर भी भाजपा सत्ता में आ गई तो उनकी बुरी गत कर देगी। इसलिए अभी रुपये न बढ़ाकर चुनाव बाद इसे लागू करेंगे। अधिकारियों को यह क्यों नहीं लगा कि हर कोई एक बड़ी रकम टोल की चुकाने में सक्षम नहीं होता है। वैसे भी अनेक प्रकार के टैक्स सरकार ने पहले ही लगा रखे हैं। जीएसटी के कारण पूर्व से ही सरकार की झोली लगातार रिक्त हो घनराशि के साथ बढ़ रही है। (ये लेखक निजी विचार हैं।)

शिरडी साईं बाबा का इतिहास



वे बहुत कम
बातचीत करते

बोध वृक्ष
 समय ध्यान में बिताते थे। धीरे-धीरे बाबा ने अपना निवास स्थान पास की एक मस्जिद में स्थानांतरित कर लिया। बहुत से हिंदू और मुसलमान बाबा के वंदन करने आते थे। मस्जिद में बाबा ने पवित्र अंग जलाई जिसे धूपी कहा जाता था। बाबा सभी आमतुंको को पवित्र राखते थे। बाबा ने कि ख़ास सभी स्वास्थ्य सेम इलाज के लिए सबसे अच्छी दवा है। बाबा लिए भगवान थे और सभी धार्मिक उस लेते थे। बाबा को खाना पकाने की आद से सभी भक्तों के बीच उनके आने पर प्रस

में इसे वितरित करते थे। बाबा का सबसे अच्छा समर्थक गायन (धार्मिक) और नृत्य में व्यतीत होता था। कालों लोग मानते थे कि बाबा एक संत थे और भगवान थे। जैसे-जैसे समय बीतता गया शिरडी आने वाले आगंतुकों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ती गई।

(समाप्त)

स्वामी, परिजात माइनिंग इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्रा. लि. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक हर्षवर्द्धन बजाज द्वारा इसके पब्लिकेशन डिवीजन, रेड्मा मेदिनीनगर (डालटनगंज), से प्रकाशित एवं एस एच प्रिंटर्स प्राइवेट लिमिटेड (पूर्व में शिवासाई पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड), नियर टैंडर बागीचा पेट्रोल पम्प, रातू, रांची-835222, झारखंड द्वारा मुद्रित. रजिस्ट्रेशन नं. **RNI.** 61316/94 पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं.-13। प्रधान संपादक : सुशुश बजाज, संपादक : हर्षवर्द्धन बजाज, कार्यकारी संपादक : सुनील सिंह 'बादल', स्थानीय संपादक : राणा अरुण सिंह*, प्रेस कार्यालय : रांची रोड, रेड्मा, मेदिनीनगर, (डालटनगंज) पलामू-822102, फोन नम्बर : 06562-796018, रांची कार्यालय : 502बी, पांचवीं मंजिल मंगलमूर्ति हाईरिस, रानी बगान, हसूम रोड, रांची-83001, फोन नं.- 0651-3553943, गढ़वा कार्यालय : मेन रोड, गढ़वा-822114, फोन : 9430164580, लोहरदगा कार्यालय : सरस्वती निवास, तेली धर्मशाला के सामने, कृषि मार्केट, लोहरदगा। - फोन : 7903891779, ई-मेल : news.rnmail@gmail.com, article.rnmail@gmail.com

(*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार।)

ग्लोबल वार्मिंग

पर्यावरण के बड़े खतरों के लिये कोशिशें भी बड़ी हो

ग्लोबल वॉर्मिंग



जसका थीम होगा 'हमारी भूमि, हमारा भविष्य।' यह थीम भूमि और इकोसिस्टम को बहाल करने, जैव विविधता की रक्षा करने और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए आवश्यक सामूहिक प्रयास पर कार्य देती है। इस वर्ष के विश्व पर्यावरण दिवस का विषय है 'भूमि पुनर्स्थापन, मरुस्थलीकरण और सूखे से निपटने की क्षमता।' मानवता भूमि पर निर्भर है। फिर भी, पूरी दुनिया में प्रदूषण, जलवायु अराजकता और जैव विविधता विनाश का एक जहरीला मिश्रण स्वस्थ भूमि को रेगिस्तान में बदल रहा है और संपन्न पारिस्थितिकी तंत्र मृत क्षेत्रों में फँक रहे हैं। इस वर्ष का विषय का फोकस 'हमारी भूमि' नारे के तहत भूमि बहाली, मरुस्थलीकरण और सूखे पर केन्द्रित है। ग्लोबल वॉर्मिंग का खतरनाक प्रभाव अब साफ़तौर पर दिखने लगा है। देखा जा सकता है कि गर्मियाँ आग उलाने लगी हैं और सर्दियाँ में गर्मी का अहसास होने लगा है। असंतुलित पर्यावरण विनाश का कारण बन रहा है। आजकल जब उत्तर भारत समेत देश के कई हिस्से रिकॉर्ड गर्मी से तप रहे हैं तब पश्चिम बंगाल और केरल में भयानक बारिश हो रही है। इस तरह एक साथ इतनी तेज बारिश से नुकसान होता है। बढ़ते शहरीकरण विकास योजनाओं और ज़रूरी से जुड़े हर क्षेत्र में पानी की कमी बढ़ रही है। दूसरी तरफ पानी के कुदरती स्रोत कम होते जा रहे हैं। हमें पानी के इस्तेमाल के तौर-तरीकों में तुरंत बदलाव करते हुए संपन्न बरतने की जरूरत है। ख़ासतौर पर पानी के इस्तेमाल, पानी को इकट्ठा करने और उन्हें भूगर्भीय स्रोतों तक पहुँचाने के तौर-तरीकों और पानी के आम इस्तेमाल को बदलना होगा। नई सरकार को इस पर ज्यादा ध्यान देना होगा क्योंकि पानी की उपलब्धता के सारे समीकरण बदल गए हैं। तापमान का 50 डिग्री पार करना जटिल एक्जेंसिव और पर्यावरणीय घटना है। फ़्रिज, गैसीय पर्यावरणीय चक्रों का क्रिक। गंधी, कूलर और कारों की ब्रिक्के बनें से बिजली की खपत बढ़ेगी यह स्थिति कायले, पेट्रोल, डीजल के इस्तेमाल को बढ़ावाएँ। ऐसे में लगातार ग्लोबल वॉर्मिंग से जुड़ा रही धरती और गर्म हो जाएँ। देश-दुनिया में पानी के नए रेकार्ड बनेंगे। इन दिनों कई शहरों का तापमान रिकॉर्ड तोड़ चुका है। इससे दिहाड़ी मजदूर, किसान और मेहनतकश लोगों को जुझा पड़ रहा है। वहीं ज्यादा बारिश वाली क्षेत्रों में पानी की कमी हो रही है। तो सूखी जगहों पर बेतहाशा बारिश। इन घटनाओं की वजह को समझना होगा, उस गंभीरता से लेना होगा। नई बनने वाली सरकार को पर्यावरण से जुड़े मुद्दों पर विशेष ध्यान देना होगा। जलवायु परिवर्तन के अलावा कई समस्याएँ मानव निर्मित भी हैं। माना कि बादल पड़ते, जंगलों में आग जैसी घटनाएँ बढ़ रही हैं, लेकिन अपेक्षाकृत नया माना जाने वाले हिमालय एवं पहाड़ी

दिनों में नए बांध और सड़क बनाए जाते से होने वाले नुकसान ज्यादा सामने आ रहे हैं। जलवायु परिवर्तन से ऐसा मसला है जिसमें पर्यावरण से होने वाला खतरा किसी देश की सीमा या उसकी हैसियत नहीं देखा। उसकी बराबर नुकसान होता है। इसलिए विश्व के सभी देशों एवं विशेषतः विकसित एवं शक्तिशाली देशों को उदार एवं दृष्टिगोली नजरिया अपनाना होगा। अपने-अपने स्वार्थों को नजरअंदाज करके हमें हर एक मानवता को केन्द्र में रखना जरूरी है। कई विद्वानों पर दुनिया पीछे जा रही हैं। दुनियाभर में जो युद्ध चल रहे हैं, उनकी वजह से भी सारे समीकरण बदल गये हैं। पहले कोविड ने नुकसान पहुंचाया, उसके बाद रूस-यूक्रेन युद्ध और इस्राइल-गाजा का मामला चल रहा है। युद्धों का पर्यावरण पर सबसे घातक असर पड़ता है और यही जलवायु परिवर्तन का बड़ा कारण भी बनते हैं। पर्यावरण का अर्थ सम्पूर्ण प्राकृतिक परिवेश से है जिसमें हम रहते हैं। इसमें हमारे चारों ओर के सभी जीवित और निर्जीव तत्व शामिल होते हैं, जैसे कि हवा, पानी, मिट्टी, पेड़-पौधे, जानवर और अन्य जीव-जंतु। पर्यावरण के घटक परस्पर एक-दूसरे के साथ जुड़कर एक समग्र परिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करते हैं। हालांकि प्राकृतिक संसाधनों के दोहन और मानव जीवनशैली के लिए इनके गलत उपयोग से पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। दूषित पर्यावरण उन घटकों को प्रभावित करता है, जो जीवन जीने के लिए आवश्यक हैं। ऐसे में पर्यावरण के प्रति लोगों को जागरूक करने, प्रकृति और पर्यावरण का महत्व समझाने की आज बड़ी आवश्यकता है, इस दृष्टि से विश्व पर्यावरण दिवस मनाना केवल आयोजनात्मक न होकर प्रयोजनात्मक बने, यह अपेक्षित है।

(ये लेखक के निजी विचार हैं।)

आपकी बात



थोड़ी देर में आपकी नयी सरकार



राकेश दुबे

प्रतिदिन आपके हाथों में हैं, नई सरकार बनने की कवायद चल रही है। अधिकोश लोगों अनुमान है प्रधानमंत्री मोदी लगातार तीसरी बार इस पद पर आसीन हो सकते हैं। इस चुनाव, 2024 में भाजपा-एनडीए जीत की और अग्रसर है। इस तरह प्रधानमंत्री मोदी का चुनावी मंत्र भी सार्थक और साकार हो सकता है। दक्षिण भारत के केरल, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश में 'भगवा तन्त्रबंधन' का खाता खुल सकता है। कर्नाटक की चुनावी उपलब्धि यथावत रहेगी, जबकि दक्षिण के ही तेलंगाना राज्य में भाजपा सबसे बड़ी पार्टी के तौर पर उभर सकती है। जो जनादेश अभूतपूर्व और आश्चर्यजनक हो सकते हैं, वे पश्चिम बंगाल और ओडिशा के हो सकते हैं। दोनों राज्यों में भाजपा ममता बनर्जी की तुल्यमूल कांग्रेस और नवीन पटनायक के बीजू जनादा की पराजित करती लग रही है। दोनों तना अपने-अपने राज्य के मुख्यमंत्री भी हैं। यह ऐतिहासिक उपलब्धियां होंगी।

यदि प्रधानमंत्री मोदी लगातार तीसरी बार पदासीन हो सकें, तो वह देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के कीर्तिमान की बराबरी कर देंगे। भाजपा को भी 2014, 2019 के बाद लगातार तीसरी बार, अपने ही बूते, लोकसभा में बहुमत हासिल हो सकता है। बहरहाल अधिकृत जनादेश शाम घोषित किया जाना है, लेकिन ये विभिन्न सर्वे एंजॉसों के एग्जिट पोल के चुनावी निष्कर्ष हैं। एग्जिट पोल खेपे की वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसका पश्चिमी और यूरोपीय देशों में सामान्य चलन और महत्वपूर्ण प्रभाव है। अलबत्ता बुरापो में एग्जिट पोल की प्रक्रिया अपेक्षाकृत नई और सर्वालिघा है। कई एग्जिट पोल हमने नाकाम और झलगत होते देखे हैं, लेकिन ऐसे बहुत से चुनावी सर्वेक्षण सटीक और सफल भी रहे हैं। 18वीं लोकसभा के लिए आपस चल चरणों में जो मतदान कागज गए, ये चुनावी अनुमान और आकलन 'भावी जनादेश' के संकेत भर हैं। अधिकोश एग्जिट पोल का रझान या जनादेश की सोच एक ही प्रदिश की ओर संकेत कर रहे हैं कि भाजपा को 320-330 सीटें हासिल हो सकती हैं। तीन-चार पोल में भाजपा-एनडीए की सीटें 400 पर जाती लग रही हैं। सबसे गौरतलब यह हो सकता है कि केरल, तमिलनाडु में उन्हें 22-27 प्रतिशत वोट मिल सकते हैं, नतीजतन दोनों राज्यों में खुल सा लगभग तय लग रहा है। यदि ऐसा हुआ, तो भाजपा दक्षिण में अभिभाषण और शून्य पार्टी नहीं रहेगी, बल्कि उसकी स्वीकार्यता 'राष्ट्रीय' होगी। तेलंगाना में 4 सीट से 10-12 सीट तक का समर्थ तय करना भाजपा-एनडीए की एक दुर्लभ उपलब्धि होगी। वहां कांग्रेस सत्तारूढ़ है, लेकिन संसदीय जनादेश मोदी-भाजपा के पक्ष में लग रहा है। दक्षिण से भी महत्वपूर्ण जीत बंगाल और ओडिशा की साबित हो सकती है। बंगाल में 45 प्रतिशत से ज्यादा वोट भाजपा को मिल सकते हैं, जबकि तमिलनाडु में 40 प्रतिशत वोट से ही संतोष करना पड़ेगा। यह समीकरण 2019 के चुनाव से बिल्कुल उल्टा हो गया है। बिहार, उप्र, राजस्थान, हरियाणा, सरीखे राज्यों में भाजपा-एनडीए की सीटें कम होने के अनुमान हैं, लेकिन गठबंधन विजेता ही रहेगा। गुजरात, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तराखण्ड, दिल्ली आदि राज्यों में भाजपा का हासिल 2019 की तरह शत-प्रतिशत रह सकता है। महाराष्ट्र के बारे में उपमुख्यमंत्री अंजित पवार ने कहा था कि ब्रह्मा भी नहीं बता सकते कि महाराष्ट्र का जनादेश क्या रहेगा? यह लड़ने ही आशय माना जाए, तो भाजपा-एनडीए की बीजे काव्यकार्य से लगभग 10 सीटें कम हो सकती हैं।

(भोपाल)

(भोपाल)

अपने पत्र हमें ईमेल कर सकते हैं-article.rnmail@gmail.com

जन अभियान बने पर्यावरण संरक्षण

प्यावावरण शब्द संस्कृत भाषा के 'परि' उपसर्ग (चारों ओर) और 'अवावरण' से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है—

ऐसी चीजों का समुच्चय जो किसी व्यक्ति या जीवधारी को चारों ओर से आवृत किये हुए हैं। यह शब्द फ्रांसीसी शब्द एन्वायरनमेंट से लिया गया है, जिसका अर्थ है घेरना। प्यावावरण को हम परिप्रेक्ष्य या परिस्थितियों के रूप में प्रभाषित किया जा सकता है जिसमें पौधे, जानवर और मनुष्य जैसे जीवित जीव रहते हैं।

प्यावावरण को एक सरल परिभाषा में कहा जा सकता है कि मानव जीवन को प्रभावित करने वाले सभी जैविक और अजैविक तत्वों को शामिल करने वाली एक प्रणाली है। जैविक या जीवित घटकों में सभी वनस्पति और जीव शामिल हैं, और अजैविक घटकों में पानी, सूरज की रोशनी, हवा, जलवायु आदि शामिल हैं। हमारी दैनिकी, जनजीवन को सुरक्षित रखने के लिए प्यावावरण को सुरक्षित रखना बहुत जरूरी है। पूरी दुनिया आधुनिकता की ओर बढ़

रही हैं। दुनियाभर में हर दिन ऐसी चीजों का इस्तेमाल बढ़ रहा है जिससे पर्यावरण खतरे में हैं। इंसांन और पर्यावरण के बीच गहरा संबंध है। प्रकृति के बिना जीवन संभव नहीं। ऐसे में प्रकृति के साथ इंसांनों को तालमेल बिढाना होता है। लेकिन लगातार वातावरण दूषित हो रहा है। जिससे कई तरह की समस्याएँ बढ़ रही हैं। जो हमारे जनजीवन को तो प्रभावित कर ही रही हैं। साथ ही कई तरह की प्राकृतिक अपढाओं की भी वजह बन रही हैं। सुखी स्वस्थ जीवन के लिए पर्यावरण का संरक्षण जरूरी है। इसी उद्देश्य से हर साल 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 1972 में पहली बार विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया था। लेकिन विश्व स्तर पर इसके मना की शुरुआत 05 जून 1974 को स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम में हुई थी। जहाँ 119 देशों की मौजूदगी में पर्यावरण सम्मेलन का आयोजन किया गया था। साथ ही प्रति वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनेल का निर्णय लिया गया था। इस सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम का गठन भी

हुआ था। भारत में पर्यावरण संरक्षण अधिनियम भारत की संसद द्वारा 1986 में पारित किया गया था। इसे संविधान के अनुच्छेद 253 के तहत पारित किया गया था। यह 19 नवंबर 1986 को लागू हुआ था। देश में तेजी से हो रहे शहरीकरण के कारण बड़ी मात्रा में कृषि भूमि आबादी की भेंट चढ़ती गई। जिस कारण वहां के पेड़-पौधे काट दिये गये व नदी नालों को बंद कर बड़े-बड़े भवन बना दिए गए। जिससे चलो रहने वाले पशु, पक्षी अन्त्यर्च रहे। लेकिन लांकडाउन ने लोगों को उनके पुराने दिनों की याद दिला दी है। पुराने समय में पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिये पड़ों को देवताओं के समान दर्जा दिया जाता था। ताकि उन्हें कटने से बचाया जा सके। बड़-पड़ील जैसे घने छायादार पेड़ों को काटने से रोकने के लिये उनकी देवताओं के रूप में पूजा की जाती रही है। इसी कारण गांवों में आज भी लोग बड़ व पीपल का पेड़ नहीं काटते हैं। मनुष्य प्रकृति द्वारा बनाया गया सबसे बुद्धिमान प्राणी माना जाता है। (ये लेखक के निजी विचार हैं।)

टेक वर्ल्ड

अब Google Play Store पर मिलेगा यह खास फीचर



गूगल प्ले स्टोर पर आया नया अपडेट यूजरर्स को बेहतरीन सुविधा देगा।
न्यू फीचर को कैसे करें इस्तेमाल -अपने एंड्रॉयड डिवाइस में गूगल प्ले स्टोर ओपन करें। इसके बाद पेज के दाईं तरफ प्रोफाइल आइकन पर क्लिक करें।

- इसके बाद ड्रॉपडाउन मेन्यू में जाकर मैनेज एप्स एंड डिवाइस को चुनें।

- फिर मैनेज टैब को चुनकर एप्स को देखें।

- डिवाइस में ऊपर की ओर दाई तरफ के बॉक्स पर चेक करें। डिवाइस को जिस एप को हटाना चाहते हैं, उसे

- एप को चुनने के बाद ट्रेश आइकन
एप को रिमूव करना चाहते हैं, उ

रिमोटली हटा दें।

जल्द मिलेगा यह फीचर : बता दें कि, गूगल प्ले स्टोर का रिमोटल अनइंस्टाल फीचर अभी तक सभी डिवाइस में उपलब्ध नहीं हुआ है। ऐसे में आने वाले कुछ समय में इस फीचर का फायदा मिल सकता है।

(समाप्त)

सिंहभूम



सिंहभूम झारखंड के सबसे पुराने जिलों में से एक है। इसमें सरायकेला, चाईबासा, मझगांव, जगन्नाथपुर, मनोहरपुर और चक्रधरपुर विधानसभा सीटें शामिल हैं। यह सीट अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित है। यह संसदीय क्षेत्र कभी झारखंड पार्टी का गढ़ हुआ करता था। सिंहभूम लोकसभा सीट के लिए पहली बार 1957 में चुनाव हुए थे। 1952 में देश के पहले लोकसभा चुनाव में सिंहभूम लोकसभा सीट शामिल नहीं थी। 1957 में हुए चुनाव में यहां से झारखंड पार्टी ने जीत दर्ज की। शंभू चरण ने 51.80 प्रतिशत मत प्राप्त किया था, जबकि निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर सीढ़ियां हेंब्रम ने 15.7 फीसदी मत प्राप्त किया था।

सिंहभूम लोकसभा सीट का सफरनामा

सिंहभूम लोकसभा सीट 1957-1980			
जीते	हारे		
शंभू चरण गोडसोरा	1957	सिंदिया हेमन्त	निर्दलीय
हरिचरण सोय	1962	लाखो बोदरा	
के बिरजू	1967	एमएल सोय	
मोहन सिंह पूर्ति	1971	देवेन्द्र नाथ चंपई	निर्दलीय
बागुन सुंबुई	1977	मोहन सिंह पूर्ति	
बागुन सुंबुई	1980	शिओडोर बोदरा	

सिंहभूम लोकसभा सीट 1984-1999			
जीते	हारे		
बागुन सुंबुई	1984	देवेन्द्र मांझी	निर्दलीय
बागुन सुंबुई	1989	मंगल सिंह लमय	
कृष्णा माई	1991	विजय सिंह सोय	
चित्रसेन सिंकु	1996	विजय सिंह सोय	निर्दलीय
विजय सिंह सोय	1998	चित्रसेन सिंकु	
लक्ष्मण गिलुवा	1999	विजय सिंह सोय	

बंटवारे के बाद सिंहभूम लोकसभा सीट			
जीते	हारे		
बागुन सुंबुई	2004	लक्ष्मण गिलुवा	
मधु कोड़ा	2009	बागुन सुंबुई	
लक्ष्मण गिलुवा	2014	गीता कोड़ा	निर्दलीय
गीता कोड़ा	2019	लक्ष्मण गिलुवा	

1957 के पहले चुनाव में गोडसोरा जीते

शंभू चरण गोडसोरा
झारखंड पार्टी

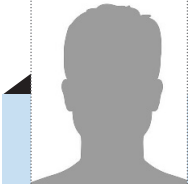
1957 के पहले चुनाव में झारखंड पार्टी शंभू चरण गोडसोरा ने जीत दर्ज की। उन्हें 51.80 मत प्राप्त किया था। जून, 1953 में कृषक सचिव, अखिल भारतीय आदिवासी श्रमिक सामाजिक एवं कल्याण संघ, आदिवासी सभा के प्रथम सचिव, सरायकेला राज्य, 1945, 2 वर्षों के लिए सदस्य, सरायकेला राज्य सलाहकार परिषद। सामाजिक गतिविधियां: जमशेदपुर में आदिवासी श्रमिकों के बीच शिक्षा और कल्याण कार्य।

1962 में झारखंड पार्टी ने दर्ज की थी जीत

हरिचरण सोय
झारखंड पार्टी

1962 में हुए लोकसभा चुनाव में झारखंड पार्टी ने ही जीत दर्ज की थी, लेकिन इस बार झारखंड पार्टी ने अपने उम्मीदवार को बदल दिया था। इस बार यहां से हरिचरण सोय ने इस सीट पर जीत दर्ज की। उन्हें कुल 29.6 फीसदी मत मिले थे जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लाखों बोथरा को 26.5 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

1967 में निर्दलीय प्रत्याशी की जीत

बिरजू
निर्दलीय प्रत्याशी

1967 के लोकसभा चुनाव में यहां से निर्दलीय प्रत्याशी के. बिरजू ने जीत दर्ज की थी। जिन्हें कुल 21.8 फीसदी मत मिले थे, जबकि भारतीय जनसंघ को 19.3, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 16.7 और संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी को 16.5 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे।

1971 में फिर जीती झारखंड पार्टी

मोहन सिंह पूर्ति
झारखंड पार्टी

1971 की हुए लोकसभा चुनाव में ऑल इंडिया झारखंड पार्टी ने इस सीट पर जीत दर्ज की थी। इन्हें कुल 38.9 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे। यहां से मोहन सिंह पूर्ति ने जीत दर्ज की थी। जबकि निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर देवेन्द्र नाथ चैपियन को 24.3 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

1977 में बागुन सुंबुई जीते

बागुन सुंबुई
झारखंड पार्टी

1977 की लोकसभा चुनाव में यहां से ऑल इंडिया झारखंड पार्टी ने जीत दर्ज की। हालांकि इस बार ऑल इंडिया झारखंड पार्टी ने अपनी उम्मीदवार का बदलाव किया था। बागुन सुंबुई को 70 फीसदी मत प्राप्त हुए थे, जबकि इंडियन नेशनल कांग्रेस पार्टी से चुनाव लड़े मोहन सिंह पूर्ति को 13.5 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

1980 में जनता पार्टी ने दर्ज की जीत :

1980 के लोकसभा चुनाव में सिंहभूम से जनता पार्टी की जीत हुई। यहां से बागुन सुंबुई ने 31.20 मत प्राप्त कर सीट पर जीत दर्ज की। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस आई के खाते में 21.4 फीसदी मत मिले थे।

1984 में पहली बार जीती कांग्रेस : 1984 में पहली बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने सीट पर जीत दर्ज की। जब उन्होंने बागुन सुंबुई को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से टिकट दिया। इस बार कांग्रेस को 42.6 फीसदी मत यहां प्राप्त हुए। जबकि निर्दलीय के तौर पर देवेन्द्र मांझी को 17.7 फीसदी, झारखंड मुक्ति मोर्चा को 8.6 फीसदी और भारतीय जनता पार्टी को 8.3 फीसदी मत प्राप्त हुए।

1989 में कांग्रेस ने फिर दर्ज की जीत : 1989 की लोकसभा चुनाव में भी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने ही यहां से जीत दर्ज की। बागुन सुंबुई को 29.3 फीसदी मत प्राप्त हुए थे, जबकि जनता दल को 22.4 झारखंड मुक्ति मोर्चा को 22 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

बंटवारे के बाद कांग्रेस को मिली सिंहभूम सीट : झारखंड बंटवारे के बाद 2004 में हुए पहले लोकसभा चुनाव में सिंहभूम की सीट फिर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के खाते में चली गई। यहां से बागुन सुंबुई ने जीत दर्ज की। यहां भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 42.6 फीसदी वोट मिले। जबकि भारतीय जनता पार्टी के लक्ष्मण गिलुवा को 31.20 मत ही प्राप्त हुए। जबकि आजसू पार्टी को 2004 के लोकसभा चुनाव में कुल 14 फीसदी वोट प्राप्त हुए।

1991 में झामुमो पहली बार जीता

कृष्णा माई
झामुमो

1991 के हुए लोकसभा चुनाव में इस सीट पर झारखंड मुक्ति मोर्चा ने जीत दर्ज की थी। इस सीट से कृष्णा माई ने 35.30 प्रतिशत मत हासिल कर इस सीट पर कब्जा किया था। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के विजय सिंह सोय को 21.8 फीसदी और भारतीय जनता पार्टी को 20 फीसदी मत मिले थे।

1996 में पहली बार जीती भाजपा

चित्रसेन सिंकु
भाजपा

1996 की हुए लोकसभा चुनाव में सिंहभूम सीट से भारतीय जनता पार्टी ने जीत दर्ज की। इस सीट पर चित्रसेन सिंकु ने जीत दर्ज किया। इन्हें कुल 20.1 फीसदी वोट मिले थे। जबकि झामुमो को 12.5 और कांग्रेस को 11.2 फीसदी रिपोर्ट प्राप्त हुए थे।

1998 में कांग्रेस ने किया कब्जा

विजय सिंह सोय
कांग्रेस

1998 की लोकसभा चुनाव में एक बार फिर सिंहभूम सीट पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने कब्जा किया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के विजय सिंह सोय को 35.4 फीसदी वोट मिले। जबकि भारतीय जनता पार्टी को 33.4 फीसदी वोट मिले। झारखंड मुक्ति मोर्चा 23.7 फीसद मत हासिल किए।

1999 में जीते भाजपा के लक्ष्मण गिलुआ

लक्ष्मण गिलुआ
भाजपा

1999 की हुए लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ही इस सीट पर जीती। हालांकि इस बार भारतीय जनता पार्टी ने अपने उम्मीदवार को बदला था और लक्ष्मण गिलुआ को इस सीट से मैदान में उतारा था। भारतीय जनता पार्टी को 1999 के चुनाव में कुल 45.9 फीसदी वोट मिले थे, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 30.9 और झारखंड मुक्ति मोर्चा को 14.8 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

2014 में लक्ष्मण गिलुआ ने दर्ज की जीत : 2014 में मोदी के लहर का असर सिंहभूम सीट पर भी दिखा और एक बार फिर भारतीय जनता पार्टी ने लक्ष्मण गिलुआ ने जीत हासिल की। इस बार भारतीय जनता पार्टी ने यहां से 38.8 फीसदी मत प्राप्त किया। जबकि जय भारत समता पार्टी की गीता कोड़ा ने 27.1 प्रतिशत मत प्राप्त किया था। हालांकि इससे पहले निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर गीता कोड़ा के पति मधु कोड़ा ने 2009 के लोकसभा चुनाव में सिंहभूम सीट से निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर जीत दर्ज किया था।

पांच बार विधायक रहीं जोबा पहली बार बनीं सिंहभूम से सांसद



रांची। चूंटी के बाद जिस सीट पर बीजेपी को सबसे बड़ा झटका लगा है वह है सिंहभूम सीट। यहां से बीजेपी की प्रत्याशी गीता कोड़ा को हार का सामना करना पड़ा है। उन्हें जेएमएम की प्रत्याशी जोबा मांझी ने मात दी है। जोबा मांझी ने 1,66,983 वोट से जीत दर्ज की है। जोबा को 5,15,989 वोट मिले हैं, जबकि गीता कोड़ा को 3,49,006 लोगों ने अपना वोट दिया है। 14 अक्टूबर 1994 को गोडलकेरा हाट में जब चक्रधरपुर और मनोहरपुर के विधायक रह चुके जल, जंगल व जमीन आंदोलन के प्रणेता देवेन्द्र मांझी की हत्या हुई थी तो किसी ने नहीं सोचा था कि उनकी पत्नी जोबा मांझी न केवल अपने पति के सपनों को साकार करने में सफल होगी, बल्कि राजनीति में स्वयं को स्थापित करते हुए सिंहभूम की आयरन लेडी बन जाएगी। मनोहरपुर विधानसभा क्षेत्र से पांच बार विधायक और छह बार कैबिनेट मंत्री का पद संभालने के बाद अब जोबा मांझी सिंहभूम की दूसरी महिला सांसद भी बन गई हैं।



सिंहभूम में पहली बार दो आदिवासी महिलाओं के बीच सीधा मुकाबला था। जिसमें जोबा मांझी ने बाजी मार ली। गीता कोड़ा के कांग्रेस में शामिल होने के बाद कांग्रेस-झामुमो ने काफी मंथन के बाद जोबा मांझी को इंडी गठबंधन का संयुक्त प्रत्याशी घोषित किया था। तब यह माना जा रहा था कि हो आदिवासी बहुल क्षेत्र में संथाली होने का कारण जोबा मांझी को बहुत अधिक समर्थन नहीं मिलेगा, लेकिन जोबा मांझी ने सभी राजनीतिक में विशेषकों को गलत साबित कर दिया।



2009 में जीते मधु कोड़ा

2009 के हुए लोकसभा चुनाव में इस सीट से निर्दलीय उम्मीदवार मधु कोड़ा विजयी हुए। जबकि भाजपा ने अपने उम्मीदवार को बदलकर बरकुरवार गांगराई को मैदान में उतारा। भाजपा को कुल 28.8 फीसदी मत प्राप्त हुए थे, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 16.5 फीसदी वोट मिले थे। मधु कोड़ा भारत के किसी भी प्रांत में निर्दलीय के रूप में सीएम बनने वाले पहले सीएम हैं। झारखंड के पांचवें सीएम के रूप में 18 सितंबर 2006 को उन्हें दिलाई गयी थी और 27 अगस्त 2008 को इस्तीफा देने तक पद पर बने रहे।

मधु कोड़ा
निर्दलीय

मोदी लहर के बाद भी कांग्रेस की गीता कोड़ा ने दर्ज की जीत

गीता कोड़ा
कांग्रेस

2019 के लोकसभा चुनाव में इस सीट पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की गीता कोड़ा ने जीत दर्ज की। गीता कोड़ा को कुल 49.8 फीसदी वोट मिले, जबकि भारतीय जनता पार्टी को 40.9 फीसदी मत प्राप्त हुए। 2024 की तैयारी में एक बार फिर सिंहभूम में राजनीतिक सरगम तेज हुई है। अब देखना है कि जिस तरीके से सिंहभूम में मोदी के लहर मोदी के आसार और

उसके बाद भी जनता ने बदलाव का जो जन्म दिया है उसका क्या रंग 2024 में देखने को मिलता है। गीता कोड़ा राज्य के पूर्व सीएम मधु कोड़ा की पत्नी हैं और मधु कोड़ा के जेल जाने के बाद 2009 में राजनीति में कदम रखा और उसी साल अपने चुनाव में निर्दलीय प्रत्याशी के तौर जगन्नाथपुर विधान सभा से चुनाव लड़ी और जीत हासिल की।



सिंहभूम की नवनिर्वाचित सांसद जोबा मांझी जिला निर्वाची पदाधिकारी कुलदीप चौधरी से प्रमाण पत्र लेती हुई।

राजमहल



राजमहल झारखंड का महत्वपूर्ण लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र है। इस संसदीय क्षेत्र को साहिबगंज और पाकुड़ जिले के कुछ इलाकों को मिलाकर गठित किया गया है। इस लोकसभा क्षेत्र में 6 विधानसभा क्षेत्रों को शामिल किया गया है। यह क्षेत्र राजमहल की पहाड़ियों और गंगा नदी से घिरा हुआ है। भाजपा के लिए राजमहल सीट एक बड़ी चुनौती है, 2014 और 2019 में मोदी लहर भी इस सीट पर पार्टी को जीत नहीं दिला पाई। इस बार यहां से ताला मरांडी उम्मीदवार हैं। देखते हैं 1957 में अब तक किस पार्टी ने यहां से जीत दर्ज की और किस पार्टी का यहां दबदबा रहा है।

राजमहल लोकसभा सीट का सफरनामा

राजमहल लोकसभा सीट			
1957-1980			
जीते		हारे	
पाइका मुर्मू	1957	रॉबर्ट सैम्युल बेसरा	
ईश्वर मरांडी	1962	पाइका मुर्मू	
ईश्वर मरांडी	1967	रॉबर्ट सैम्युल बेसरा	निर्दलीय
ईश्वर मरांडी	1971	जस्टिन रिचर्ड	बीपीएफजे
एथोनी मुर्मू	1977	जोसेफ चंद मुर्मू	
सेठ हेम्ब्रम	1980	पालू हांसदा	

राजमहल लोकसभा सीट			
1984-1999			
जीते		हारे	
सेठ हेम्ब्रम	1984	साइमन मरांडी	
साइमन मरांडी	1989	जयकुमार टुडू	निर्दलीय
साइमन मरांडी	1991	थामस हांसदा	
थामस हांसदा	1996	साइमन मरांडी	
सोम मरांडी	1998	थामस हांसदा	
थामस हांसदा	1999	सोम मरांडी	

बंटवारे के बाद राजमहल			
लोकसभा सीट			
जीते		हारे	
हेमलाल मुर्मू	2004	थामस हांसदा	
देवीधन बेसरा	2009	हेमलाल मुर्मू	
विजय हांसदा	2014	हेमलाल मुर्मू	
विजय हांसदा	2019	हेमलाल मुर्मू	

1996 में कांग्रेस के थामस जीते



थॉमस हांसदा
कांग्रेस

1998 में भाजपा ने पहली बार जीता राजमहल



सोम मरांडी
भाजपा

1996 में हुए लोकसभा चुनाव में फिर से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने राजमहल सीट पर अपना कब्जा जमाया। यहां से थॉमस हांसदा ने जीत दर्ज की। जबकि झारखंड मुक्ति मोर्चा के साइमन मरांडी को 19.8 फीसदी वोट मिले। वहीं, भारतीय जनता पार्टी को 16.3 फीसदी वोट प्राप्त हुए। यहां जनता दल से लोबिन हेंब्रम भी खड़े थे जिन्हें 15.4 फीसदी वोट प्राप्त हुए।

1998 की हुई लोकसभा चुनाव में पहली बार भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार सोम मरांडी ने इस सीट पर जीत दर्ज की। भारतीय जनता पार्टी को कुल 33.4 फीसदी वोट मिले। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 33.4 और झारखंड मुक्ति मोर्चा को 25.2 फीसदी मत प्राप्त हुए।

1957 में यहां से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने जीत दर्ज की



पाइका मुर्मू
कांग्रेस

संयुक्त बिहार झारखंड की राजमहल सीट भारतीय लोकतंत्र में लोकसभा के लिए हुए दूसरे लोकसभा चुनाव में अस्तित्व में आई। 1957 में हुए दूसरे लोकसभा चुनाव में इस सीट पर मतदान हुआ और यहां से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने जीत दर्ज की। 1957 में इस सीट पर हुए पहले लोकसभा चुनाव में पाइका मुर्मू ने जीत हासिल की। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को कुल 47.01 फीसदी मत मिले थे। जबकि झारखंड पार्टी के रॉबर्ट सैम्युल बेसरा को 45.8 फीसदी वोट मिले थे।

1962 में झापा के ईश्वर जीते



ईश्वर मरांडी
झारखंड पार्टी

विजेता ईश्वर मरांडी को अपनी पार्टी में लाया और टिकट दिया। जिसके कारण राजमहल सीट से कांग्रेस उम्मीदवार ईश्वर मरांडी ने जीत दर्ज की। ईश्वर मरांडी को कुल 26.6 फीसदी वोट मिले। जबकि स्वतंत्र पार्टी से चुनाव लड़े रामस्वरूप बेसरा को 22.5 फीसदी वोट मिले।

1971 के चुनाव नतीजे : 1971 के लोकसभा चुनाव में फिर से ये सीट भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पास ही रही। यहां से एक बार फिर ईश्वर मरांडी ने ही जीत दर्ज की। उन्हें 44.4 फीसदी वोट मिले। जबकि बिहार प्रांत हुल झारखंड पार्टी को 28.5 और भारतीय जनसंघ को 15.7 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

1977 में एंथोनी मुर्मू के हाथ लगी बाजी



एंथोनी मुर्मू
भारतीय लोक दल

1977 के हुए लोकसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी ने अपना उम्मीदवार बदला और यह सीट कांग्रेस के हाथ से निकल गई। यहां से कांग्रेस ने योगेश चन्द्र मुर्मू को अपना उम्मीदवार बनाया था। जिन्हें 1977 के लोकसभा चुनाव में हार का सामना करना पड़ा। यहां से भारतीय लोकदल ने अपनी जीत दर्ज की। राजमहल सीट पर 1977 में हुए लोकसभा चुनाव में भारतीय लोकदल के

अंथोनी मुर्मू ने जीत दर्ज की। उन्हें कुल 66.3 फीसदी वोट मिले थे। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 25.8 फीसदी मत ही प्राप्त हुए थे।

1980 में कांग्रेस के सेठ हेंब्रम जीते



सेठ हेंब्रम
कांग्रेस

1984 में सेठ हेंब्रम ने दर्ज की जीत : 1984 की हुई लोकसभा चुनाव में इस सीट से एक बार फिर कांग्रेस के सेठ हेंब्रम की ही जीत हुई। उन्हें कुल 48.6 फीसदी वोट मिले। जबकि झारखंड मुक्ति मोर्चा के साइमन मरांडी को 23.8 फीसदी वोट मिले थे।

1989 में झामुमो के साइमन जीते



साइमन मरांडी
झामुमो

1989 को हुए लोकसभा चुनाव में राजमहल सीट पर परिवर्तन हुआ और यहां पर झारखंड मुक्ति मोर्चा के साइमन मरांडी ने जीत दर्ज की। साइमन मरांडी को कुल 56.6 फीसदी मत मिले। जबकि इससे पहले लगातार दो बार सीट पर कब्जा जमाए सेठ हेंब्रम 16.7 फीसदी मत ही प्राप्त कर सके।

1991 में झामुमो ने जीता राजमहल : 1991 में हुए लोकसभा चुनाव में एक बार फिर झारखंड मुक्ति मोर्चा के साइमन मरांडी ने इस सीट पर जीत दर्ज की। साइमन मरांडी को कुल 37.5 फीसदी वोट मिले। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपना उम्मीदवार यहां पर बदला था और थॉमस हांसदा को उम्मीदवार बनाया था। हालांकि वे जीत दर्ज नहीं कर सके, उन्हें सिर्फ 30.6 फीसदी वोट ही प्राप्त हो सके। जबकि भारतीय जनता पार्टी के सतलाल मरांडी को 26.9 फीसदी मत प्राप्त हुए।

1999 में फिर जीते थामस हांसदा



थामस हांसदा
कांग्रेस

झारखंड बनने के बाद जीते हेमलाल



हेमलाल मुर्मू
झामुमो

भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार सोम मरांडी को 27.8 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

विजय हांसदा ने लगाई जीत की हैट्रिक, जनता को दिया श्रेय

नवीन मेल संवाददाता। पाकुड़। झामुमो ने राजमहल संसदीय सीट पर लगातार तीसरी बार कब्जा किया है। पार्टी प्रत्याशी विजय हांसदा ने राजमहल सीट पर तीसरी बार भारी मतों से जीत दर्ज करते हुए शानदार हैट्रिक लगाई है। उन्होंने अपने प्रतिद्वंद्वी भाजपा के ताला मरांडी को हराया है। पाकुड़ में पत्रकारों से बात करते हुए विजय हांसदा ने कहा कि तीसरी बार राजमहल सीट पर जीत का श्रेय जनता को जाता है। विजय हांसदा को 6 लाख 13 हजार 371 वोट मिले हैं। भाजपा प्रत्याशी ताला मरांडी को 4 लाख 35 हजार 107 मत प्राप्त हुए हैं। झामुमो प्रत्याशी ने 1 लाख 78 हजार 264 मतों से शानदार जीत प्राप्त की है।



अधूरे कार्य को पूरा करूंगा

झामुमो प्रत्याशी सह सांसद विजय हांसदा ने कहा कि इस बार जो भी कार्य अधूरे हैं, वे उसे पूरा करेंगे। सांसद ने कहा कि इसके पूर्व स्वास्थ्य, शिक्षा सहित कई क्षेत्रों में कार्य किए गए और रेल सुविधा बढ़ाने को लेकर संसद में कई बार आवाज उठाई गई। सांसद ने कहा कि आने वाले दिनों में क्षेत्र के विकास का कार्य जो भी अधूरा रह गया है, उसे तत्परता के साथ पूरा किया जाएगा। उन्होंने कल्पना सोरेन को भी जीत पर बधाई दी। बागी विधायक लोबिन हेंब्रम द्वारा लगातार विरोध करने और निर्दलीय चुनाव लड़ने को लेकर सांसद विजय हांसदा ने कहा कि इस खुशी के मौके पर निगेटिव बातें नहीं सोचनी है। इंडी गठबंधन समर्थित झामुमो प्रत्याशी विजय हांसदा मतों की गणना के दौरान सभी राउंड में भारी मतों से आगे रहे। राजमहल संसदीय क्षेत्र के पाकुड़, मंदेशपुर, लिट्टीपाड़ा, बोरियो, बरहेट और राजमहल विधानसभा क्षेत्र से भी उन्हें लगातार बढ़त मिलती रही। विजय हांसदा की जीत पर मतगणना केंद्र के बाहर झामुमो कार्यकर्ता झूमते और जश्न मनाते नजर आए। दूसरी ओर, भाजपा प्रत्याशी ताला मरांडी की भारी मतों से हार के बाद पार्टी कार्यकर्ताओं में मायूसी देखी गई। भाजपा के टेंट में इस दौरान लगातार सन्नाटा पसरा रहा।

झामुमो प्रत्याशी ने 1 लाख 78 हजार 264 मतों से प्राप्त की शानदार जीत

2009 में भाजपा के देवीधन बेसरा जीते



देवीधन बेसरा
भाजपा

2009 के लोकसभा चुनाव में राजमहल सीट एक बार फिर भाजपा के हाथ में आई। यहां से देवीधन बेसरा ने जीत दर्ज की थी। उन्हें कुल 26.5 फीसदी वोट मिले थे। जबकि झारखंड मुक्ति मोर्चा के हेमलाल मुर्मू को 24.7 और राष्ट्रीय जनता दल के थॉमस हांसदा को 20.2 फीसदी वोट मिले थे।

2014 व 2019 में जीते विजय हांसदा



विजय कु. हांसदा
झामुमो

राजमहल सीट ने चौकाने वाले परिणाम दिए। 2009 में राजमहल सीट भारतीय जनता पार्टी के खाते में गई थी, लेकिन 2014 में यह सीट झारखंड मुक्ति मोर्चा के खाते में चली गई, 2014 में राजमहल लोकसभा सीट से विजय कुमार हांसदा चुनाव जीते। झारखंड

मुक्ति मोर्चा को इस सीट पर 29.9 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

2019 में भी नहीं हुआ मोदी लहर का असर : झारखंड की राजमहल सीट एक ऐसी सीट है, जिस पर ना तो 2014 में और ना ही 2019 में मोदी के लहर का असर काम आया। 2014 में भी यहां से झारखंड मुक्ति मोर्चा ने जीत दर्ज की थी और 2019 के लोकसभा चुनाव में भी यहां से झारखंड मुक्ति मोर्चा के विजय कुमार हांसदा ने ही जीत दर्ज। 2019 के लोकसभा चुनाव झारखंड मुक्ति मोर्चा के विजय कुमार हांसदा को 48.5 फीसदी जबकि भारतीय जनता पार्टी के हेमलाल मुर्मू को 39 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

गिरिडीह



गिरिडीह, बोकारो और धनबाद जिले के कुछ हिस्सों को मिला कर गिरिडीह लोकसभा क्षेत्र बनाया गया है। खनिज संपदा से संपन्न यह लोकसभा क्षेत्र काफी खास है। इस सीट पर भाजपा का दबदबा रहा है। यहां से रवींद्र पांडे 5 बार सांसद रहे हैं। हालांकि, पिछली बार गठबंधन के कारण यह सीट आजसू को मिली थी, जहां से चंद्रप्रकाश चौधरी ने जीत हासिल की थी। झारखंड राज्य के गिरिडीह लोकसभा सीट का गठन संयुक्त बिहार में 1957 में हुआ था। यहां दूसरी लोकसभा के लिए देश में हुए चुनाव के दौरान पहली बार लोकसभा चुनाव हुए थे।

गिरिडीह लोकसभा सीट का सफरनामा

गिरिडीह लोकसभा सीट			
1957-1980			
जीते	हारे		
काजी एसए मतीन	1957	नागेश्वर सिन्हा	
बटेश्वर सिंह	1962	चपलेंदु मट्टाचार्य	
इम्रियाज अहमद	1967	एमएस ओबराय	निर्दलीय
चपलेंदु मट्टाचार्य	1971	कृष्ण बल्लभ सहाय	कांग्रेस (ओ)
रामदास सिंह	1977	इम्रियाज अहमद	
बिदेश्वरी दुबे	1980	रामदास सिंह	

1971 में कांग्रेस ने दर्ज की जीत

1971 के लोकसभा चुनाव में एक बार फिर से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने चपलेंदु भट्टाचार्य को अपना उम्मीदवार बनाया और इस बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 37.8 फीसदी वोट प्राप्त हुए। जबकि इंडियन नेशनल कांग्रेस (ओ) के कृष्ण बल्लभ सहाय को 34.8 फीसदी वोट प्राप्त हुए, वहीं, कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया को 17.8 फीसदी मत प्राप्त हुए।

गिरिडीह लोकसभा सीट			
1984-1999			
जीते	हारे		
सरफराज अहमद	1984	बिनोद बिहारी महतो	निर्दलीय
रामदास सिंह	1989	बिनोद बिहारी महतो	निर्दलीय
बिनोद बिहारी महतो	1991	रामदास सिंह	
रवींद्र कुमार पांडे	1996	सबा अहमद	
रवींद्र कुमार पांडे	1998	राजेंद्र प्रसाद सिंह	

1989 में भाजपा ने पहली बार दर्ज की जीत

1989 के लोकसभा चुनाव में गिरिडीह लोकसभा क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी ने जीत दर्ज की थी। भारतीय जनता पार्टी के रामदास सिंह को 35.2 फीसदी मत प्राप्त हुए थे, वहीं निर्दलीय के तौर पर बिनोद बिहारी महतो ने 31.5 फीसदी वोट प्राप्त किए, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सरफराज अहमद को 26.9 फीसदी मत प्राप्त हुए।

बंटवारे के बाद गिरिडीह लोकसभा सीट

जीते		हारे
रवींद्र कुमार पांडे	1999	राजेंद्र प्रसाद सिंह
		
टेक लाल महतो	2004	रवींद्र कुमार पांडे
		
रवींद्र कुमार पांडे	2009	टेक लाल महतो
		
रवींद्र कुमार पांडे	2014	जगरनाथ महतो
		
चंद्र प्रकाश चौधरी	2019	जगरनाथ महतो
		



1957 में हुआ पहला लोकसभा चुनाव

1957 में हुए पहले लोकसभा चुनाव में गिरिडीह लोकसभा सीट से छोट नागपुर संथाल परगना जनता पार्टी काजी एसए मतीन विजय हुए थे। छोट नागपुर संथाल परगना जनता पार्टी को कुल 51.3 फीसदी वोट मिले थे, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नागेश्वर प्रसाद सिंह को 30.9 फीसदी वोट मिले थे। वहीं, कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया को 11.4 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

1962 में ठाकुर बटेश्वर सिंह ने दर्ज की जीत

1962 में हुए लोकसभा चुनाव में गिरिडीह से स्वतंत्र पार्टी के ठाकुर बटेश्वर सिंह विजयी हुए थे। इन्हें कुल 39.8 फीसदी वोट मिले थे। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के चपलेंदु भट्टाचार्य को 36.4 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे।

1967 में जीते इम्रियाज अहमद

1967 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी ने अपने उम्मीदवार को बदला और अब्दुल इम्रियाज अहमद को अपना उम्मीदवार बनाया। लोकसभा चुनाव में उन्हें कुल 33 फीसदी मत प्राप्त हुआ और वह सांसद चुने गए। जबकि निर्दलीय प्रत्याशी एम एस ओबराय को 31.02 और भारतीय जन संघ को 17.8 प्रतिशत मत प्राप्त हुए।

1977 में जनता पार्टी के रामदास जीते

1977 के लोकसभा चुनाव में गिरिडीह सीट से जनता पार्टी ने जीत दर्ज की थी। जनता पार्टी के रामदास सिंह को 56.4 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 29.5 फीसदी वोट प्राप्त हुए।

1980 में कांग्रेस के बिदेश्वरी दुबे जीते

1980 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी के कद्दावर नेता और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के झारखंड बिहार संयुक्त के प्रदेश प्रभारी रहे बिदेश्वरी प्रसाद दुबे की जीत हुई थी। इन्हें 34.4 फीसदी वोट मिले थे। जबकि जनता पार्टी के रामदास सिंह को 35.9 फीसदी और निर्दलीय के तौर पर चुनाव लड़े बिनोद बिहारी महतो को 18.4 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

1984 में सरफराज ने लहराया कांग्रेस का झंडा

1984 में इंदिरा गांधी की हत्या के बाद हुए लोकसभा चुनाव में पूरे देश में सहानुभूति की लहर थी, जिसमें एक बार फिर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने यहां से जीत दर्ज की, लेकिन इस बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपनी उम्मीदवार को बदल दिया। बिदेश्वरी प्रसाद दुबे की जगह यहां से सरफराज अहमद को पार्टी ने टिकट दिया। सरफराज को यहां कुल 51.8 फीसदी मत प्राप्त हुए थे, जबकि निर्दलीय उम्मीदवार बिनोद बिहारी महतो को 18.8 और भारतीय जनता पार्टी के रामदास सिंह को 17.4 फीसदी मत प्राप्त हुए।

1991 में बिनोद बिहारी महतो जीते

1991 के लोकसभा चुनाव में बिनोद बिहारी महतो झारखंड मुक्ति मोर्चा से चुनाव लड़े। इससे पहले बिनोद बिहारी महतो लगातार इस सीट पर निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर चुनाव लड़ रहे थे और दूसरे स्थान पर रहते थे। 1991 में झामुमो ने बिनोद बिहारी महतो को अपना उम्मीदवार बनाया और उन्हें कुल 47.2 फीसदी वोट मिले और वे विजयी रहे। वहीं उनके प्रतिद्वंद्वी भारतीय जनता पार्टी के रामदास सिंह को 31.02 फीसदी मत प्राप्त हुए। वहीं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सरफराज अहमद को 15.9 फीसदी वोट प्राप्त हुए।

1996 के बाद पांच बार सांसद बने भाजपा से रवींद्र पांडे



रवींद्र कुमार पांडे
भाजपा

प्राप्त हुए थे। जबकि जनता दल को 20.7 फीसदी, झारखंड मुक्ति मोर्चा (एम) को 16.3 और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 13.7 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।
1998 में रवींद्र पांडे ने दूसरी बार दर्ज की जीत : 1998 के लोकसभा चुनाव में गिरिडीह लोकसभा क्षेत्र से रवींद्र पांडे ने दूसरी बार इस लोकसभा सीट से जीत दर्ज की। भारतीय जनता पार्टी को 1998 में 44.7 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के राजेंद्र प्रसाद सिंह को 34 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

1999 में बीजेपी ने फिर हासिल की जीत : 1999 में भी लोकसभा उप चुनाव में फिर से भारतीय जनता पार्टी ने इस सीट पर जीत दर्ज किया था भारतीय जनता पार्टी को 1999 में कुल 46 फीसदी मत प्राप्त हुए, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 42.3 फीसदी मत प्राप्त हुए।

2009 में बीजेपी ने फिर हासिल की जीत : 2009 में हुए लोकसभा चुनाव में एक बार फिर भारतीय जनता पार्टी ने गिरिडीह सीट पर अपना कब्जा किया और रवींद्र कुमार पांडे भारतीय जनता पार्टी के एक बार फिर इस सीट से विजयी हुए। रवींद्र कुमार पांडे को 37.7 फीसदी मत प्राप्त हुए, जबकि झारखंड मुक्ति मोर्चा को 24 फीसदी और झारखंड विकास मोर्चा प्रजातांत्रिक को 20.5 फीसदी वोट प्राप्त हुए।

2014 में मोदी लहर का असर : 2014 के लोकसभा चुनाव में इस सीट पर फिर रवींद्र कुमार पांडे भारतीय जनता पार्टी से विजयी हुए। इस बार रविंद्र कुमार पांडे को कुल 40.4 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे। जबकि झारखंड मुक्ति मोर्चा के जगन्नाथ महतो को 36.02 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे। झारखंड विकास मोर्चा प्रजातांत्रिक के सभा अहमद को 5.9 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे। जबकि आजू पार्टी के उमेश चंद्र मेहता को 5.7 फीसदी वोट प्राप्त हुए। 2017 के लोकसभा चुनाव के समय गठबंधन की मजबूरी को देखते हुए भाजपा ने यह सीट आजसू पार्टी को दे

गिरिडीह से चंद्रप्रकाश चौधरी लगातार दूसरी बार जीते



रांची/रामगढ़ : गिरिडीह लोकसभा सीट पर चंद्रप्रकाश चौधरी ने लगातार दूसरी बार जीत हासिल की है। एनडीए के घटक दल आजसू के उम्मीदवार चंद्रप्रकाश झामुमो के मुथुरा महतो को काफी मतों से हराया है। जयराम महतो तीसरे स्थान पर रहे। इधर, रामगढ़ शहर में आजसू नेताओं ने गठबंधन और चंद्र प्रकाश चौधरी की जीत का जश्न एक साथ मनाया। पार्टी कार्यालय के बाहर आजसू नेताओं का जमघट लगा रहा। यहां एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर जीत की बधाई दी, फिर आतिशबाजी कर जश्न में शामिल हुए। मौके पर नगर सचिव नीरज मंडल ने कहा कि हजारीबाग लोकसभा में गठबंधन के प्रत्याशी मनीष जायसवाल भारी बहुमत से जीते हैं। गिरिडीह की देव तुल्य जनता ने भी अपना वादा पूरा किया है। चंद्रप्रकाश चौधरी को दूसरी बार लोकसभा से जीता कर सदन में भेजने का काम किया है। नरेंद्र मोदी को पुनः तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने के लिए एनडीए गठबंधन के उम्मीदवार को अपने आशीर्वाद देकर दिल्ली भेजने का कार्य किया है। मौके पर कार्यकारी अध्यक्ष कुलदीप वर्मा, सुरेंद्र दागी, अजय पांडेय, सतीष कुशवाहा, संकर पासवान, अमर कुमार, संतोष कुशवाहा, सहित कई लोग मौजूद थे।



2019 में आजसू ने दर्ज की जीत



2019 की हुए लोकसभा चुनाव में गिरिडीह सीट पर भारतीय जनता पार्टी और जो झारखंड स्टूडेंट यूनियन के बीच सीटों का समझौता हुआ था, जिसके तहत यह सीट आरजू के पास चली गई। आजसू पार्टी के चंद्र प्रकाश चौधरी ने गिरिडीह सीट से 2019 में जीत हासिल की। इन्हें कुल 58.6 फीसदी मत प्राप्त हुए, जबकि झारखंड मुक्ति मोर्चा के जगन्नाथ महतो को 36.01 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे।

अलग राज्य बनने के बाद 2004 में जीते झामुमो के टेकलाल महतो



टेकलाल महतो
झामुमो

झारखंड अलग राज्य बनने के बाद झामुमो का इस सीट पर कब्जा : झारखंड बंटवारे के बाद पहली बार 2004 के लोकसभा चुनाव में गिरिडीह की लोकसभा सीट भारतीय जनता पार्टी के हाथ से निकल गई। इससे पहले लगातार तीन बार इस लोकसभा सीट पर भाजपा ने कब्जा जमाया था, लेकिन 2004 के लोकसभा चुनाव में इस सीट से झारखंड मुक्ति मोर्चा के टेकलाल महतो ने जीत दर्ज की। इन्हें कुल 49 फीसदी मत प्राप्त हुए। जबकि भारतीय जनता पार्टी के रविंद्र कुमार पांडे को 28.5 फीसदी और जनता दल यूनाइटेड के इंद्रदेव महतो को 11.4 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

दिया। आजसू के टिकट पर यहां से चंद्र प्रकाश चौधरी ने जीत हासिल की।



दुमका लोकसभा क्षेत्र हमेशा से राजनीति का गढ़ रहा है। 1957 से 2024 तक यहां 17 बार चुनाव हुए हैं। यह संताल परगना में राजनीति का केंद्र है। झामुमो का पारंपरिक सीट माना जाता है दुमका लोकसभा क्षेत्र। यहां से शिवू सोरेन ने आठ बार जीत हासिल की है। वैसे, वर्ष 2019 के आम चुनाव में उन्हें भाजपा उम्मीदवार सुनील सोरेन से पराजय का सामना करना पड़ा था। दुमका आदिवासी बहुल इलाका है। करीब 40 फीसदी आबादी आदिवासियों की है। यहां करीब 93 फीसदी लोग गांवों में रहते हैं। इस क्षेत्र में करीब 12 प्रतिशत मुस्लिम आबादी भी है। दुमका लोकसभा क्षेत्र में शिकारीपाड़ा, दुमका, जामताड़ा, जामा, नाला और सारट विधानसभा क्षेत्र आते हैं।

दुमका लोकसभा सीट का सफरनामा

दुमका लोकसभा सीट			
1957-1980			
जीते	हारे		
सुरेश चंद्र चौधरी	1957	भागवत झा आजाद	
सत्य चंद्र बेसरा	1962	देवी सोरेन	
सत्य चंद्र बेसरा	1967	बी मरांडी	
सत्य चंद्र बेसरा	1971	शत्रुघ्न बेसरा	
बटेश्वर हेम्ब्रम	1977	पृथ्वीचंद्र किस्कू	
शिवू सोरेन	1980	पृथ्वीचंद्र किस्कू	

दुमका लोकसभा सीट			
1984-1999			
जीते	हारे		
पृथ्वी चंद्र किस्कू	1984	शिवू सोरेन	
शिवू सोरेन	1989	पृथ्वी चंद्र किस्कू	
शिवू सोरेन	1991	बाबूलाल मरांडी	
शिवू सोरेन	1996	बाबूलाल मरांडी	
बाबूलाल मरांडी	1998	शिवू सोरेन	
बाबूलाल मरांडी	1999	रुपी सोरेन किस्कू	

बंटवारे के बाद दुमका लोकसभा सीट			
जीते	हारे		
शिवू सोरेन	2004	सोने लाल हेब्रम	
शिवू सोरेन	2009	सुनील सोरेन	
शिवू सोरेन	2014	सुनील सोरेन	
सुनील सोरेन	2019	शिवू सोरेन	

लोस सीट पर 1957 के चुनाव का हाल



कंग्रेस के भागवत झा आजाद को 52,116 वोटों से हराया और सांसद बने। वहीं, एसटी सांसद के रूप में जेएचपी या झारखंड पार्टी से सुरेशचंद्र चौधरी ने कंग्रेस के लाल हेब्रम को 45,715 वोटों से पराजित किया था।

1962 से 1977 तक सत्य चंद्र बेसरा



सत्य चंद्र बेसरा ने 1962 से 1977 तक लोकसभा में दुमका प्रतिनिधित्व किया। वे लगातार तीन बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के टिकट पर लोकसभा के लिए चुने गए। उनका जन्म 7 अप्रैल 1923 को संताल परगना के काशीतरन में हुआ था। उनकी पत्नी का नाम चुमु दुडू था। वे जामताड़ा के कासीतार में रहते थे। बेसरा की मृत्यु 1982 में हुई थी।

1977 से 1980 तक बटेश्वर हेम्ब्रम



बटेश्वर हेम्ब्रम 1977 से 1980 तक लोकसभा के सदस्य रहे। उन्होंने जनता पार्टी के सदस्य के रूप में भारत की संसद के निचले सदन लोकसभा में दुमका का प्रतिनिधित्व किया। उनका जन्म 30 अप्रैल 1931 को हुआ था। 13 अक्टूबर 2018 को उनका निधन हो गया।

1980-84, 1989-98 और 2002-19 तक शिवू



दिशोम गुरु शिवू सोरेन 1980 से 1984, 1989 से 1998 और 2002 से 2019 तक लोकसभा के सदस्य रहे। दुमका लोकसभा क्षेत्र से शिवू सोरेन 11 बार चुनाव लड़ चुके हैं, जिसमें उन्हें सिर्फ तीन बार हार का सामना करना पड़ा है। वे झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) के नेता हैं। वे वर्तमान में झारखंड से राज्यसभा के सदस्य हैं। वे झारखंड के तीसरे मुख्यमंत्री रह चुके हैं। पहली बार 2005 में 10 दिनों के लिए (2 मार्च से 12 मार्च तक), फिर 2008 से 2009 तक और फिर 2009 से 2010 तक झारखंड के मुख्यमंत्री रहे हैं। वे केन्द्रीय मंत्रिमंडल में कोयला मंत्री भी रहे हैं। शिवू सोरेन का जन्म रामगढ़ जिले के नेमरा गांव में 11 जनवरी 1944 को हुआ था, जो उस समय भारत के बिहार राज्य में था। वे संथाल जनजाति से हैं। शिवू ने अपनी स्कूली शिक्षा उसी जिले में पूरी की। स्कूली शिक्षा के दौरान ही उनके पिता की हत्या साहूकारों द्वारा नियुक्त गुंडों ने कर दी थी। 18 वर्ष की आयु में उन्होंने संथाल नवयुवक संघ का गठन किया। 1972 में बंगाली मैक्सिस्ट ट्रेड यूनियन नेता एके राय, कुर्मी-महतो नेता बिनोद बिहारी महतो और संथाल नेता शिवू सोरेन ने झारखंड मुक्ति मोर्चा का गठन किया। सोरेन झामुमो के महासचिव बने। झामुमो ने अलग-थलग कर दी गई आदिवासी जमीन को पुनः प्राप्त करने के लिए आंदोलन किया। वे 1977 में अपना पहला लोकसभा चुनाव हार गए थे। वे पहली बार 1980 में दुमका से लोकसभा के लिए चुने गए थे। इसके बाद वे 1989, 1991 और 1996 में भी लोकसभा के लिए चुने गए। 2002 में वे राज्यसभा के लिए चुने गए। उन्होंने उसी साल दुमका लोकसभा सीट पर हुए उपचुनाव में जीत हासिल की और अपनी राज्यसभा सीट से इस्तीफा दे दिया। वे 2004 में फिर से चुने गए। वे मनमोहन सिंह सरकार में केन्द्रीय कोयला मंत्री बने, लेकिन तीस साल पुराने चिरडीह मामले में उनके नाम पर गिरफ्तारी वारंट के बाद उन्हें इस्तीफा देने के लिए कहा गया। वह 69 आरोपियों में से एक मुख्य आरोपी थे, जिन पर 23 जनवरी 1975 को आदिवासियों और मुसलमानों के बीच झड़प में 10 लोगों (9 मुसलमानों सहित) की हत्या का आरोप था। वारंट जारी होने के बाद, वह शुरू में भूमिगत हो गया। उन्होंने 24 जुलाई 2004 को इस्तीफा दे दिया। 8 सितंबर को जमानत पर रिहा होने के बाद, उन्हें केन्द्रीय मंत्रिमंडल में फिर से शामिल किया गया और 27 नवंबर 2004 को कोयला मंत्रालय वापस दे दिया गया। 2 मार्च 2005 को, उन्हें राज्यपाल द्वारा झारखंड में सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया गया। विधानसभा में विश्वास मत प्राप्त करने में विफल रहने के बाद, उन्होंने नौ दिन बाद, 11 मार्च को मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। 2019 के लोकसभा चुनावों में वे दुमका निर्वाचन क्षेत्र से भाजपा के सुनील सोरेन से हार गए।

1984 से 1989 तक पृथ्वी चंद्र किस्कू



पृथ्वी चंद्र किस्कू 1984 से 1989 तक लोकसभा के सदस्य रहे। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य के रूप में लोकसभा में दुमका का प्रतिनिधित्व करने वाले संसद सदस्य थे। उनका जन्म 27 फरवरी 1927 को गोड्डा जिला के अमरपुर गांव में हुआ था। उनकी मृत्यु 18 मई 2011 को गोड्डा में पेतुक्त गांव में हुई थी।

दुमका लोकसभा क्षेत्र से दो बार सांसद चुने गए बाबूलाल मरांडी



1991 के लोकसभा चुनाव में बिनोद बिहारी महतो झारखंड मुक्ति मोर्चा से चुनाव लड़े। इससे पहले बिनोद बिहारी महतो लगातार इस सीट पर निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर चुनाव लड़ रहे थे और दूसरे स्थान पर रहते थे. इस बार झारखंड मुक्ति मोर्चा ने 1991 में बिनोद बिहारी महतो को अपना उम्मीदवार बनाया और उन्हें कुल 47.2 फीसदी वोट मिले. जबकि उनके प्रतिद्वंद्वी भारतीय जनता पार्टी के रामदास सिंह को 31.02 फीसदी मत प्राप्त हुए. वहीं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सरफराज अहमद को 15.9

फीसदी वोट प्राप्त हुए। बाबूलाल मरांडी 1998 से 2002 तक दुमका लोकसभा क्षेत्र से सांसद रहे। वे 2004 से 2014 तक कोडरमा लोकसभा क्षेत्र से सांसद चुने गए। मरांडी 1998 से 2000 तक भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र की राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार में पर्यावरण एवं वन राज्य मंत्री थे। बाबूलाल मरांडी झारखंड के पहले मुख्यमंत्री बने। वे वर्तमान में झारखंड विधानसभा के सदस्य हैं। वह झारखंड विकास मोर्चा (प्रजातांत्रिक) के संस्थापक और राष्ट्रीय अध्यक्ष थे। बाबूलाल मरांडी का जन्म 11 जनवरी 1958 को गिरिडीह जिले के कोदाईबांक गांव में हुआ था। इनके पिता का नाम छोटे लाल मरांडी तथा माता का नाम नीमा मूर्मु हैं। बाबूलाल ने रांची विश्वविद्यालय से भूगोल में स्नातकोत्तर किया। कॉलेज में पढ़ाई के दौरान मरांडी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ गए। संघ से

पूरी तरह जुड़ने से पहले मरांडी ने गांव के स्कूल में कुछ सालों तक कार्य किया। इसके बाद वे संघ परिवार से जुड़ गए। उन्हें झारखंड क्षेत्र के विश्व हिंदू परिषद का संगठन सचिव बनाया गया। 1989 में इनकी शादी ज्ञानि देवी से हुई। एक बेटा भी हुआ अनूप मरांडी, जिसकी 27 अक्टूबर 2007 को झारखंड के गिरिडीह क्षेत्र में हुए नक्सली हमले में मौत हो गई। 1991 में मरांडी भाजपा के टिकट पर दुमका लोकसभा सीट से चुनाव लड़े, लेकिन हार गए। 1996 में वे फिर शिवू सोरेन से पराजित हो गए। इसके बाद भाजपा ने 1998 में उन्हें विधानसभा चुनाव के दौरान झारखंड भाजपा का अध्यक्ष बनाया। पार्टी ने उनके नेतृत्व में झारखंड क्षेत्र की 14 लोकसभा सीटों में से 12 पर कब्जा किया। 1998 के चुनाव में उन्होंने शिवू सोरेन को संताल से हराकर चुनाव जीता था, जिसके बाद एनडीए की सरकार में बिहार के 4

सांसदों को कैबिनेट में जगह दी गई। इनमें से एक बाबूलाल मरांडी थे। बाबूलाल ने झारखंड में एनडीए को विस्तार दिया। वर्ष 2004 के लोकसभा चुनाव में उन्होंने कोडरमा सीट से चुनाव जीता, जबकि भाजपा के अन्य उम्मीदवार हार गए थे। मरांडी ने वर्ष 2006 में कोडरमा सीट सहित भाजपा की सदस्यता से भी इस्तीफा देकर 'झारखंड विकास मोर्चा' नाम से नई पार्टी बनाई। भाजपा के पांच विधायक भी पार्टी छोड़कर बाबूलाल के साथ चले गए। वर्ष 2009 के लोकसभा चुनाव में उन्होंने अपनी पार्टी की ओर से कोडरमा सीट से चुनाव लड़कर बड़ी जीत हासिल की। वर्ष 2019 में धनवार विधानसभा क्षेत्र से झारखंड विकास मोर्चा (जेवीएम) से चुनाव लड़ा और बड़ी जीत हासिल की। इसके बाद बाबूलाल मरांडी ने अपनी जेवीएम पार्टी को भारतीय जनता पार्टी में विलय कर भाजपा में घर वापसी कर ली।



झामुमो प्रमुख शिवू सोरेन को हराया था। सोरेन दुमका जिले के जामा विधानसभा क्षेत्र से वर्ष 2005 से 2009 तक झारखंड विधानसभा के सदस्य भी रहे हैं। सुनील सोरेन का जन्म जामा प्रखंड के तरबंथा गांव में 6 अप्रैल 1972 को हुआ था। उनका जन्म अत्यंत साधारण परिवार में हुआ था। उनके पिता स्व. सुफल सोरेन स्वास्थ्य विभाग में काम करते थे। इनकी मां का नाम पाकू मरांडी है।

झामुमो प्रत्याशी नलिन सोरेन ने सीता सोरेन को हराया



दुमका। दुमका लोकसभा सीट से झामुमो प्रत्याशी नलिन सोरेन ने जीत दर्ज की है। उन्होंने अपने निकटत प्रतिद्वंद्वी भारतीय जनता पार्टी की प्रत्याशी सीता सोरेन को 20 हजार से अधिक मतों से हरा दिया। जीत दर्ज करने के बाद नलिन सोरेन ने खुशी जताते हुए कहा कि यह दुमका लोकसभा क्षेत्र की जनता और कार्यकर्ताओं की जीत है। जीत के बाद नलिन सोरेन ने कहा कि वे जनता के सुख-दुख में हमेशा उनके साथ रहेंगे। कहा, मैं जनता के सुख-दुख में हमेशा से साथ रहा हूं, और आगे भी उनके साथ ही रहूंगा। ज्ञात हो कि नलिन सोरेन दुमका जिले के शिकारीपाड़ा विधानसभा क्षेत्र से लगातार सात बार के विधायक हैं। इस बार पार्टी ने उन्हें एमपी का टिकट दिया और उन्होंने जीत हासिल कर सबित किया कि फैसला सही था। नलिन सोरेन ने दुमका लोकसभा सीट से चुनाव में जीत दर्ज करने के बाद कहा कि युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराना और किसानों के लिए सिंचाई की बेहतर व्यवस्था करना उनकी प्राथमिकता होगी। उन्होंने कहा, मैं शिकारीपाड़ा से लगातार सात बार विधायक रहा हूं। जनता हमेशा मेरे साथ रही और मैं जनता के साथ रहा। यह सिलसिला आगे भी जारी रहेगा।

खुशी से झूमने लगे कार्यकर्ता

इंडी गठबंधन से झामुमो प्रत्याशी नलिन सोरेन की जीत के बाद गठबंधन और झामुमो कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर दौड़ गई। मतगणना केंद्र पर जीत की घोषणा होते ही जेएमएम कार्यकर्ता खुशी से झूमने लगे। उन्होंने एक-दूसरे को अबीर-गुलाल लगाकर और मिठाई खिलाकर खुशी का इजहार किया। साथ ही, जीत के अवसर पर आतिशबाजी भी की गई।



धनबाद



देश की कोयला राजधानी और काले हिर्रे का गढ़ धनबाद हमेशा से राजनीति का केंद्र रहा है। आर्थिक रूप से समृद्ध और राजनीतिक विवादों को काफी हद तक जगह देने वाला धनबाद अपने अजोखे काले सोने के रंग के लिए जाना जाता है। जानिए इस सीट पर 1957 से अब तक कौन जीता कौन हारा। देश में पहला आम चुनाव 1952 में हुआ था। लेकिन तब धनबाद लोकसभा सीट अस्तित्व में नहीं था। धनबाद लोकसभा सीट का गठन 1957 में हुआ था। धनबाद की राजनीति काफी हद तक दो राजनीतिक दलों तक ही सीमित रही है। यहां 16 बार लोकसभा चुनाव हुए, जिनमें अब तक 10 सांसद चुने जा चुके हैं। धनबाद की जनता ने कई बार अपने सांसद पर भरोसा जताया है।

धनबाद लोकसभा सीट का सफरनामा

धनबाद लोकसभा सीट				
1957-1980				
जीते		1957	हारे	
डीसी मलिक			कनाई लाल पाल	
पीआर चक्रवर्ती		1962	सच्चिदानंद त्रिगुणार्त	निर्दलीय
निर्दलीय	ललिता राज लक्ष्मी	1967	एपी शर्मा	
आरएन शर्मा		1971	विनोद बिहारी महतो	
निर्दलीय	एके रॉय	1977	आरएन शर्मा	
निर्दलीय	एके रॉय	1980	योगेश्वर प्रसाद	

धनबाद लोकसभा सीट				
1984-1999				
जीते		1984	हारे	
शंकर दयाल सिंह			ए के रॉय	निर्दलीय
ए के रॉय		1989	समरेश सिंह	
रीता वर्मा		1991	ए के रॉय	
रीता वर्मा		1996	समरेश सिंह	
रीता वर्मा		1998	ए के रॉय	
रीता वर्मा		1999	ए के रॉय	

बंटवारे के बाद धनबाद लोकसभा सीट				
जीते		हारे		
चंद्रशेखर दुबे		रीता वर्मा		
पशुपति नाथ सिंह		चंद्रशेखर दुबे		
पशुपति नाथ सिंह		अजय कुमार दुबे		
पशुपति नाथ सिंह		कीर्ति आजाद		

1991 में पहली बार जीती बीजेपी



रीता वर्मा
भाजपा

1991 में हुए चुनाव में यहां से भारतीय जनता पार्टी की रीता वर्मा ने जीत हासिल की थी। रीता वर्मा को 43.4 फीसदी वोट मिले जबकि मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के एके रॉय को 29 फीसदी वोट मिले। झारखंड मुक्ति मोर्चा को 10.3 फीसदी वोट मिले थे।
1996 में बीजेपी ने फिर हासिल की जीत : 1996 के चुनाव में भी भारतीय जनता पार्टी की रीता वर्मा ने यहां से जीत हासिल की थी जबकि समरेश सिंह ने जनता दल से चुनाव लड़ा था। उन्हें 30.2 फीसदी वोट मिले थे।
1998 में तीसरी बार जीती बीजेपी : 1998 के चुनाव में

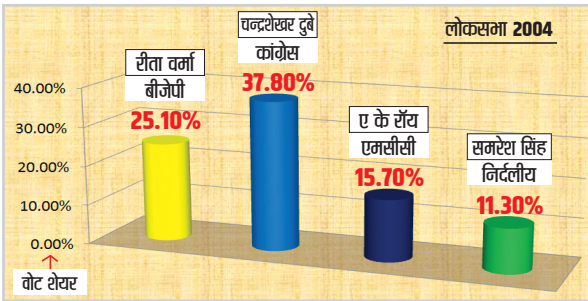
भारतीय जनता पार्टी ने फिर से इस सीट पर जीत हासिल की। भारतीय जनता पार्टी की रीता वर्मा को कुल 49.9 फीसदी वोट मिले थे। वहीं मोस्ट कोऑर्डिनेशन से एके रॉय चुनाव लड़े थे, जिन्हें कुल 29.8 फीसदी वोट मिले थे। राष्ट्रीय जनता दल को 16.6 फीसदी वोट मिले।
1999 में बीजेपी ने लगातार जीत का चौथा : 1999 के लोकसभा चुनाव की बात करें तो भारतीय जनता पार्टी की रीता वर्मा ने फिर से जीत हासिल की। उन्हें 47.5 फीसदी वोट मिले। मिस्ट कोऑर्डिनेशन के एके रॉय को 45.6 फीसदी वोट मिले, जबकि झारखंड मुक्ति मोर्चा को सिर्फ 2.4 फीसदी वोट मिले।

बंटवारे के बाद हारी भाजपा



चंद्रशेखर दुबे
कांग्रेस

झारखंड विभाजन के बाद 2004 में हुए पहले चुनाव में लगातार तीन बार से जीतती आ रही बीजेपी को अपनी सीट रंगानी पड़ी और यहां से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के टिकट पर चन्द्रशेखर दुबे ने जीत हासिल की। कांग्रेस को 37.8 फीसदी वोट मिले जबकि भारतीय जनता पार्टी की रीता वर्मा को 25.5 फीसदी वोट मिले।



1957 में हुआ था पहली बार चुनाव



प्रभात चंद्र बोस
कांग्रेस

1957 में धनबाद सीट पर हुए पहले लोकसभा चुनाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उम्मीदवार प्रभात चंद्र बोस ने इस सीट से जीत हासिल की थी। उन्हें कुल 48.5 फीसदी वोट मिले, जबकि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी को 20.4 फीसदी वोट, प्रजा सोशलिस्ट पार्टी को 19.4 फीसदी जबकि झारखंड पार्टी को 12.2 फीसदी वोट मिले।

1962 में भी कांग्रेस को जीत मिली



पीआर चक्रवर्ती
कांग्रेस

1962 के चुनाव की बात करें तो 1962 में भी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने यहां जीत हासिल की, लेकिन इस बार इस सीट पर कांग्रेस ने अपना उम्मीदवार बदल दिया और पीआर चक्रवर्ती को टिकट दिया, जिन्होंने 36.3 प्रतिशत वोटों के साथ जीत हासिल की।

1967 में जन क्रांति दल जीता



ललिता राज लक्ष्मी
जन क्रांति दल

1967 के चुनाव में जन क्रांति दल ने यहां से चुनाव जीता था और उसके उम्मीदवार एलआर लक्ष्मी कुल 34.1 फीसदी वोट पाकर धनबाद के सांसद बने, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 24.5 फीसदी वोट मिले थे। हालांकि, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने भी यहां से अपना उम्मीदवार बदला था और आनंद प्रकाश शर्मा को यहां से मैदान में उतारा गया था।

1971 में कांग्रेस पार्टी जीती



रामनारायण शर्मा
कांग्रेस

1971 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने फिर से इस सीट पर जीत हासिल की। रामनारायण शर्मा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उम्मीदवार थे और उन्होंने 45 प्रतिशत वोट पाकर इस सीट पर कब्जा जमाया था। जबकि मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के विनोद बिहारी महतो को 15.3 फीसदी वोट मिले थे।

1977 में निर्दलीय प्रत्याशी जीते



एके रॉय
निर्दलीय

35.6 फीसदी वोट मिले। हालांकि, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने एक बार फिर यहां अपना उम्मीदवार बदला और योगेश्वर प्रसाद योगेश को अपना उम्मीदवार बनाया। उन्हें 29.8 फीसदी वोट मिले। जबकि जनता पार्टी को 19.3 फीसदी वोट मिले थे।
1980 में फिर निर्दलीय उम्मीदवार की जीत : 1980 के चुनाव में एक बार फिर यहां से निर्दलीय उम्मीदवार एके रॉय ने जीत हासिल की। इस बार उन्हें 35.6 फीसदी वोट मिले। हालांकि, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने एक बार फिर यहां अपना उम्मीदवार बदला और योगेश्वर प्रसाद योगेश को अपना उम्मीदवार बनाया। उन्हें 29.8 फीसदी वोट मिले। जबकि जनता पार्टी को 19.3 फीसदी वोट मिले थे।
1989 में सीपीआई की जीत : 1989 के लोकसभा चुनाव में मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी की ओर से एके रॉय को उम्मीदवार बनाया गया और उन्होंने 38 फीसदी वोट पाकर जीत हासिल की। इस बार भारतीय जनता पार्टी दूसरे स्थान पर रही। इस बार समरेश सिंह को भारतीय जनता पार्टी ने टिकट दिया था। जिन्हें 35.9 फीसदी वोट मिले। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 18.3 फीसदी वोट मिले थे।

1984 में कांग्रेस जीती



शंकर दयाल सिंह
कांग्रेस

1984 के चुनाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने एक बार फिर इस सीट पर वापस जीत हासिल की। उसके उम्मीदवार शंकर दयाल सिंह ने इस सीट पर जीत हासिल की। इस बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 40.5 फीसदी वोट मिले। जबकि निर्दलीय उम्मीदवार एके रॉय को 28.5 वोट मिले थे। भारतीय जनता पार्टी को 14 फीसदी वोट मिले थे।

तमाम विरोधों के बाद भी ढुल्लू ने दर्ज की शानदार जीत



धनबाद लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी ढुल्लू महतो ने 313501 मतों से जीत हासिल की। भाजपा प्रत्याशी ने कांग्रेस प्रत्याशी अनुपमा सिंह को 3,13,501 मतों के अंतर से हराया। जीत के बाद ढुल्लू महतो को निवाची पदाधिकारी सह उपायुक्त माधवी मिश्रा ने प्रमाण पत्र सौंपा। ढुल्लू महतो पहली बार सांसद निर्वाचित घोषित किए गए हैं। वे अभी बाघमारा विधानसभा से भाजपा के विधायक हैं। भाजपा ने धनबाद के सीटिंग सांसद पीएन सिंह का टिकट काट कर उन्हें मैदान में उतारा था। जबकि कांग्रेस ने बेरमो विधायक अनूप सिंह की पत्नी अनुपमा सिंह को टिकट दिया था। ढुल्लू महतो पर दर्जनों अपराधिक मुकदमों होने के कारण टिकट दिए जाने को लेकर काफी विवाद भी बढ़ा था। जमशेदपुर पूर्वी के विधायक सरयू राय ने ढुल्लू महतो के खिलाफ जम कर मोर्चा खोला, लेकिन सभी विरोधों के बावजूद ढुल्लू महतो तीन लाख से भी अधिक मतों से जीत दर्ज कर विरोधियों को आइना दिखाया।



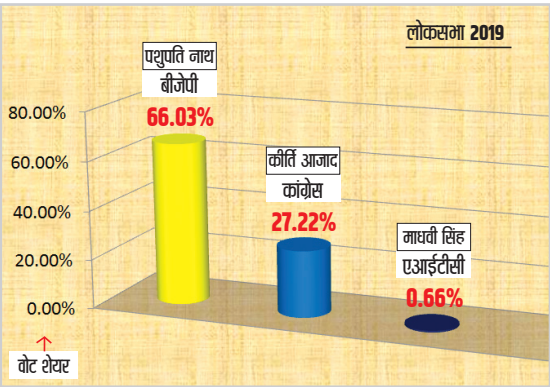
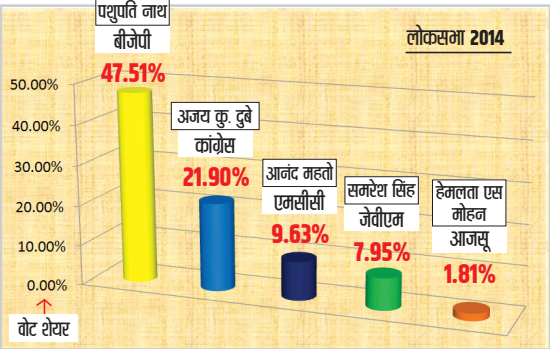
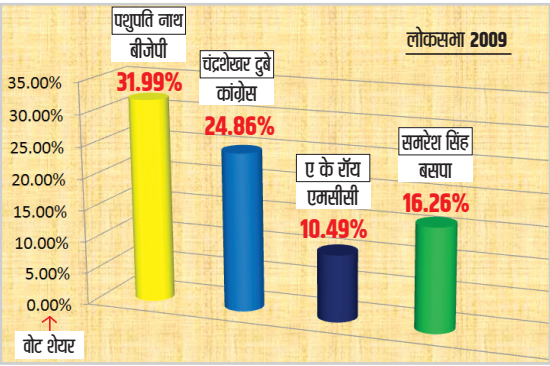
2009 में पीएन सिंह ने दर्ज की थी जीत



भाजपा

2009 के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने अपना उम्मीदवार बदला और यहां से पशुपतिनाथ सिंह को टिकट दिया। भारतीय जनता पार्टी को यहां कुल 32 प्रतिशत वोट मिले और उसके उम्मीदवार विजयी हुए। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के चन्द्रशेखर दुबे को 24.9 फीसदी वोट मिले थे, 16.3 फीसदी वोट पाकर बहुजन समाज पार्टी यहां मजबूती से उभरी थी।

2014 में फिर जीती बीजेपी : 2014 के लोकसभा चुनाव में भी भारतीय जनता पार्टी ने इस सीट पर जीत हासिल की। भारतीय जनता पार्टी के पशुपतिनाथ सिंह ने फिर से सीट जीत ली। भारतीय जनता पार्टी को कुल 47.5 फीसदी वोट मिले। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अजय कुमार दुबे को 21.9 प्रतिशत वोट मिले थे।
2019 में बीजेपी से पीएन सिंह ने लगाई जीत की हैटिक : 2019 के लोकसभा चुनाव में पशुपतिनाथ सिंह यहां से तीसरी बार चुनाव जीते और उन्हें कुल 66 फीसदी वोट मिले, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कीर्ति आजाद को 27.2 फीसदी वोट मिले। कीर्ति आजाद बीजेपी में थे, जिन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपनी पार्टी में शामिल कर उन्हें अपने टिकट पर धनबाद से मैदान में उतारा था। एक बार फिर 2024 के लिए चुनावी समर की तैयारी हो रही है। अब देखना यह है कि क्या मोदी के काम, मोदी की लहर, मोदी के असर का प्रभाव धनबाद में दिखता है या फिर धनबाद की जनता चुनाव को कुछ बदलाव का रंग देती है।



चतरा



देश में 1952 में हुए पहले लोकसभा चुनाव में चतरा लोकसभा सीट अस्तित्व में नहीं थी। चतरा 1957 में लोकसभा क्षेत्र बना। 1977 तक गया, हजारीबाग और पालमू जिलों के कुछ हिस्सों के साथ चतरा एक विशाल संसदीय क्षेत्र था। फिलहाल इस संसदीय क्षेत्र में चतरा, पलामू और लातेहार जिले के विधानसभा सम्मिलित हैं। इसमें सभी विधानसभा क्षेत्र अर्थात चतरा, सिमरिया, लातेहार और मणिका आरक्षित सीटें हैं, जबकि चतरा अनास्थित संसदीय निर्वाचन क्षेत्र है। इस लोकसभा क्षेत्र की सबसे खास बात यह है कि यह जब से अस्तित्व में आया, तब से अब तक यहां से कोई भी स्थानीय नेता संसद नहीं पहुंच पाया है। चतरा लोकसभा सीट पर हमेशा बाहरी नेता ही सांसद चुने गए हैं।

चतरा लोकसभा सीट का सफरनामा

चतरा लोकसभा सीट

1957-1980

जीते	हारे
सीएसपी/जेपी विजया राजे	1957 चपलेंदु भट्टाचार्य
★ विजया राजे	1962 त्रिभुवननाथ
निर्दलीय विजया राजे	1967 एसपी मदानजी
शंकर दयाल सिंह	1971 विजया राजे
सुखदेव प्रसाद वर्मा	1977 शंकर दयाल सिंह
रंजीत सिंह	1980 सुखदेव प्रसाद वर्मा

1971 में कांग्रेस ने जीती सीट

शंकर दयाल सिंह
कांग्रेस

1971 की लोकसभा चुनाव में चतरा लोकसभा सीट पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने जीत दर्ज की जिस पर शंकर दयाल सिंह को 42.5 फीसदी वोट मिले थे, जबकि जनता पार्टी के विजय राजे को 35.8 फीसदी रिपोर्ट प्राप्त हुए थे। वहीं 1971 में छतरपुर के लिए हुए लोकसभा चुनाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ही विजयी हुई थी। इसमें जगन्नाथ राव को 58 फीसदी वोट मिले थे जबकि उत्कल को 24.8 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।

1977 के चुनाव में जीती जनता पार्टी

सुखदेव प्रसाद वर्मा
जनता पार्टी

1977 में चतरा लोकसभा अकेली की सीट बन गई और यहां से 1977 के लोकसभा चुनाव में जनता पार्टी ने जीत दर्ज की। सुखदेव प्रसाद वर्मा को 73.2 फीसदी वोट मिले थे जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के शंकर दयाल सिंह को 21.7 फीसदी रिपोर्ट प्राप्त हुए थे।

1980 में फिर जीती कांग्रेस

रंजीत सिंह
कांग्रेस

1980 के लोकसभा चुनाव में यहां से फिर कांग्रेस पार्टी ने जीत दर्ज की। हालांकि इस बार कांग्रेस पार्टी ने अपने उम्मीदवार को बदला और रंजीत सिंह को टिकट दिया था। कांग्रेस पार्टी को 1980 के लोकसभा चुनाव में कुल 38.2 फीसदी वोट मिले थे, जबकि जनता पार्टी के सुखदेव प्रसाद वर्मा को 22.8 और जनता पार्टी सेकुलर को 16.9 फीसदी रिपोर्ट प्राप्त हुए थे।

1984 में कांग्रेस ने बचाई सीट

योगेश्वर प्रसाद योगेश
कांग्रेस

1984 के लोकसभा चुनाव में यहां से फिर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जीती। लेकिन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने इस बार भी अपने उम्मीदवार का बदलाव करते हुए योगेश्वर प्रसाद योगेश को अपना उम्मीदवार बनाया था। इन्हें 55.02 फीसदी रिपोर्ट मिले थे। इस बार इंडियन कांग्रेस से सुखदेव प्रसाद वर्मा ने चुनाव लड़ा था और उन्हें 14.2 फीसदी वोट मिले थे। इंदर सिंह नामधारी भाजपा के टिकट पर यहां से चुनाव लड़े थे उन्हें 14.1 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे।

1989 में जनता दल का हुआ कब्जा

उपेंद्र नाथ वर्मा
जनता दल

1989 की लोकसभा चुनाव में चतरा लोकसभा सीट पर जनता दल का कब्जा हुआ। जनता दल के उम्मीदवार उपेंद्र नाथ वर्मा को 48.6 फीसदी वोट मिले। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की योगेश प्रसाद योगेश को 31.9 फीसदी वोट प्राप्त हुए।
1991 में जनता दल ने फिर हासिल की जीत : 1991 की लोकसभा चुनाव में भी यहां जनता दल ने जीत हासिल की। उनके उम्मीदवार उपेंद्र नाथ वर्मा को 34.7 फीसदी वोट मिले। हालांकि भारतीय जनता पार्टी ने अपने उम्मीदवार का बदलाव किया था और धीरेंद्र अग्रवाल को अपना उम्मीदवार बनाया था। भारतीय जनता पार्टी को 25.3 फीसदी वोट मिले थे।

1996 में पहली बार जीती भाजपा

धीरेंद्र अग्रवाल
भाजपा

1996 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने चतरा लोकसभा सीट पर पहली बार जीत दर्ज की। यहां से धीरेंद्र अग्रवाल विजयी हुए। भारतीय जनता पार्टी को कुल 42 फीसदी मत प्राप्त हुए थे, जबकि जनता दल को 31.5 फीसदी वोट मिले थे।
1998 में फिर जीती बीजेपी : 1998 की लोकसभा चुनाव में भी भारतीय जनता पार्टी फिर से जीत दर्ज की। यहां से धीरेंद्र अग्रवाल को 43.9 फीसदी जबकि राष्ट्रीय जनता दल के नागमणि को 37.4 फीसदी वोट मिले।
झारखंड बंटवारे के बाद हुआ बदलाव : झारखंड बंटवारे के बाद 2004 में बड़ा राजनीतिक बदलाव हुआ। धीरेंद्र अग्रवाल ने भारतीय जनता पार्टी छोड़कर के राष्ट्रीय जनता दल का दामन थाम लिया, तो वहीं राष्ट्रीय जनता दल छोड़कर कर नागमणि भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गए।

2004 में राजद ने जीती सीट : 2004 के हुए लोकसभा चुनाव में राष्ट्रीय जनता दल चतरा सीट पर कब्जा किया और धीरेंद्र अग्रवाल यहां से विजयी हुए। धीरेंद्र अग्रवाल को कुल 27.9 फीसदी वोट मिले थे जबकि जनता दल यूनाइटेड के इंदर सिंह नामधारी को 23.6 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे। वहीं भारतीय जनता पार्टी के नागमणि को 22.9 फीसदी रिपोर्ट 2004 के लोकसभा चुनाव में मिले थे।

1999 में राजद ने मारी बाजी

नागमणि
राजद

1999 के लिए हुए लोकसभा चुनाव में यहां से राष्ट्रीय जनता दल ने बाजी मारी और उनके उम्मीदवार नागमणि ने चतरा लोकसभा सीट पर जीत दर्ज की। राष्ट्रीय जनता दल को कुली 51.6 फीसदी वोट मिले थे, जबकि भारतीय जनता पार्टी को 38.6 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे।

इंदर सिंह नामधारी
निर्दलीय

2009 के लोकसभा चुनाव में निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर चुनाव लड़े इंदर सिंह नामधारी यहां से विजयी हुए। इंदर सिंह नामधारी को कुल 22.9 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे। जबकि धीरज प्रसाद साहू जिन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से चुनाव लड़ा था इन्हें कुल 19.4 फीसदी वोट मिले। नागमणि ने फिर एक बार पार्टी बदलते हुए राष्ट्रीय जनता दल के टिकट पर चुनाव लड़ा, लेकिन उन्हें कुल 14.5 फीसदी वोट ही मिले।

तीसरी बार बीजेपी ने चतरा लोस में जीत दर्ज की, प्रत्याशी रहे नए



दो लाख से अधिक मतों से बीजेपी प्रत्याशी कालीचरण सिंह ने चतरा से जीत दर्ज की

नवीन मेल संवाददाता

चतरा। लोकसभा चुनाव 2024 में चतरा लोकसभा सीट से मतगणना के दौरान भाजपा के निर्णायक बढत के बाद कार्यकर्ताओं द्वारा जश्न मनाने का दौर जारी है। वहीं इंडिया गठबंधन से कांग्रेस प्रत्याशी केएन त्रिपाठी मतगणना केंद्र में पत्रकारों से बात करते हुए ईवीएम के सील खुले होने आदि का आरोप लगाते हुए कहा कि अभी मतगणना जारी है, जीत जाएं उसके बाद नियम पूर्वक जश्न मनाएं, लेकिन बीजेपी की बढत पर ही पार्टी कार्यकर्ता जश्न मनाने के साथ फायरिंग की है। जो अच्छा संकेत नहीं है आने वाले समय के लिए। श्री त्रिपाठी ने कहा की इस मामले की शिकायत उपायुक्त से की गयी है।

सिंह ने जीत का श्रेय जनता एवं कार्यकर्ताओं को दिया

मंगलवार को चतरा लोकसभा से भाजपा त्याशी कालीचरण सिंह ने दो लाख से अधिक मतों से जीत दर्ज की। चतरा लोकसभा के सांसद बनने के बाद श्री सिंह ने अपने हाथों से भाजपा कार्यकर्ताओं के बीच जीत के लड्डू का वितरण किया। इस दौरान सिंह ने पत्रकारों से कहा कि यह जीत चतरा लोकसभा के जनता व पार्टी कार्यकर्ताओं की है, मैं तो केवल निमित्त मात्र हूं। उन्होंने मतदाताओं के प्रति आभार जताया। कालीचरण सिंह ने दो लाख 25 हजार 494 वोटों से इंडिया गठबंधन के कांग्रेस प्रत्याशी केएन त्रिपाठी को करारी शिकस्त दी। बीजेपी प्रत्याशी को 05 लाख 66 हजार 658 मत व कांग्रेस प्रत्याशी को 03 लाख 41 हजार 164 वोट मिले।

कालीचरण सिंह के जीत पर खूब उड़े गुलाल, जमकर हुई आतिशबाजी

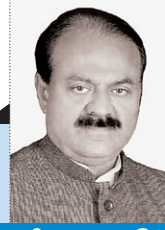
बरवाडीह। देश में तीसरी बार नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा के निर्णायक बढत और चतरा संसदीय क्षेत्र से भाजपा के कालीचरण सिंह का लगातार निर्णायक बढत मिलने और जीत की और अग्रसर होने की खबर आने की साथ ही प्रखंड भाजपा मंडल के मंडल अध्यक्ष हर्षवर्धन सिंह के नेतृत्व में प्रखंड भाजपा सदस्यों द्वारा जमकर आतिशबाजी छोड़ी गई और एक दूसरे को मिठाई खिलाकर, अबीर गुलाल लगाते एक दूसरे को बधाई दी गई। भाजपा मंडल अध्यक्ष हर्षवर्धन सिंह द्वारा इस अवसर पर बस स्टैंड में सभी दुकानदारों को मिठाई खिला कर जीत की अग्रिम बधाई दिया। इसके साथी भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा जमकर आतिशबाजी छोड़ी गई। मौके पर मनोज यादव, मनोज प्रसाद, ईश्वरी सिंह, हेमंत करश्यप, दिलीप यादव, नंददेव सिंह, रवि गुप्ता, अमृत ब्रजेश सिंह, दीपक तिवारी, कन्हैया प्रसाद, पारस जवाबवाल, विनय चंदेल, उपेंद्र प्रसाद समेत काफी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता साथ थे।



2009 में इंदर सिंह नामधारी हुए विजयी

2009 के लोकसभा चुनाव में निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर चुनाव लड़े इंदर सिंह नामधारी यहां से विजयी हुए। इंदर सिंह नामधारी को कुल 22.9 फीसदी वोट प्राप्त हुए थे। जबकि धीरज प्रसाद साहू जिन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से चुनाव लड़ा था इन्हें कुल 19.4 फीसदी वोट मिले। नागमणि ने फिर एक बार पार्टी बदलते हुए राष्ट्रीय जनता दल के टिकट पर चुनाव लड़ा, लेकिन उन्हें कुल 14.5 फीसदी वोट ही मिले।

2014 में मोदी लहर का दिखा असर

सुनील कुमार सिंह
भाजपा

2014 के लोकसभा चुनाव में चतरा लोकसभा सीट पर भारतीय जनता पार्टी के सुनील कुमार सिंह ने जीत दर्ज की। 2014 में भारतीय जनता पार्टी को कुल 41.5 फीसदी वोट मिले थे, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 16.5 फीसदी वोट प्राप्त हुए। झारखंड विकास मोर्चा प्रजातांत्रिक को 14.6 फीसदी मत प्राप्त हुए थे।
2019 में फिर दिखा मोदी मैजिक : 2019 के लोकसभा चुनाव में फिर से भारतीय जनता पार्टी ने इस सीट पर जीत दर्ज की। भाजपा के सुनील कुमार सिंह ने 57 फीसदी मत हासिल किए। वहीं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मनोज कुमार यादव को 16.02 फीसदी वोट मिले। राजद के सुभाष प्रसाद यादव को 9 फीसदी वोट मिले।

1957 में बना चतरा लोकसभा क्षेत्र

विजया राजे
स्वतंत्र उम्मीदवार

चतरा जिला संयुक्त बिहार में 1957 में पहली बार लोकसभा क्षेत्र बना। 1957 में चतरा लोकसभा क्षेत्र से छोटा नागपुर संथाल परगना जनता पार्टी की उम्मीदवार विजया राजे विजयी हुईं थे। इन्हें कुल 66 फीसदी वोट मिले थे, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के चपलेंदु भट्टाचार्य को 34 फीसदी वोट प्राप्त हुए। 1962 में हुए चुनाव में चतरा जिले में दो लोकसभा क्षेत्र थे। पहला छतरपुर लोकसभा सीट जो उड़ीसा के हिस्से को भी जोड़ती थी। यहां से शर्मा अनंत त्रिपाठी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के विजयी हुए थे। जिन्हें कुल 58 फीसदी को प्राप्त हुए थे।
1967 के चुनाव : 1967 के चुनाव में भी चतरा लोकसभा और छतरपुर लोकसभा के लिए चुनाव हुए थे, चतरा लोकसभा चुनाव में स्वतंत्र उम्मीदवार विजया राजे विजयी हुए थे, जिन्हें 32.9 फीसदी वोट मिले थे। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के एसपी भवानी को 22 फीसदी वोट मिले थे। वहीं 1962 में छतरपुर चतरा के लिए हुए लोकसभा चुनाव में जेआर रचाकोन्सा ने जीत दर्ज की थी वे कांग्रेस पार्टी के उम्मीदवार थे, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को कुल 50.5 फीसदी थी।

लोहरदगा

रांची से अलग होकर 1957 में लोहरदगा संसदीय क्षेत्र सामने आया। इस लोकसभा सीट को अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित किया गया। इस सीट पर 90 के दौरे से ही कांग्रेस और भाजपा में काटे की टक्कर रही है। इसलिए यह सीट काफी दिलचस्प है। लोहरदगा सीट से जीतकर स्व. कार्तिक उरांव, सुदर्शन भगत और रामेश्वर उरांव केंद्र सरकार में मंत्री भी बने, जबकि ललित उरांव जैसे महत्वपूर्ण आदिवासी नेता ने भी से जीत हासिल की। जानते हैं 1957 से 2019 तक इस सीट पर हार-जीत की कहानी।

लोहरदगा लोकसभा सीट का सफरनामा

लोहरदगा लोकसभा सीट				
1957-1980				
जीते			हारे	
 इग्नेस बेक	1957		जतम खेरवार	
 डेविड मुंजनी	1962		कार्तिक उरांव	
 कार्तिक उरांव	1967		एस बड़ाईक	
 कार्तिक उरांव	1971		रोपना उरांव	
 लालू उरांव	1977		कार्तिक उरांव	
 कार्तिक उरांव	1980		कर्मा उरांव	

लोहरदगा लोकसभा सीट				
1984-1999				
जीते			हारे	
 सुमति उरांव	1984		ललित उरांव	
 सुमति उरांव	1989		ललित उरांव	
 ललित उरांव	1991		सुमति उरांव	
 ललित उरांव	1996		बंदी उरांव	
 इंद्रनाथ भगत	1998		ललित उरांव	
 दुखा भगत	1999		इंद्रनाथ भगत	

बंटवारे के बाद लोहरदगा				
लोकसभा सीट				
जीते			हारे	
रामेश्वर उरांव			दुखा भगत	
	2004			
सुदर्शन भगत			चमरा लिंडा	
	2009		निर्दलीय	
सुदर्शन भगत			रामेश्वर उरांव	
	2014			
सुदर्शन भगत			सुखदेव भगत	
	2019			

1998 में जीती कांग्रेस	
	इंद्रनाथ भगत कांग्रेस

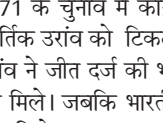
1999 में भाजपा ने हासिल की जीत	
	दुखा भगत भाजपा

1957 में पहली बार लोकसभा चुनाव हुए, इग्नेस बेक ने जीत दर्ज की

	इग्नेस बेक झारखंड पार्टी
---	-----------------------------

1962 में जीते डेविड मुंजनी	
	डेविड मुंजनी निर्दलीय

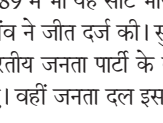
1967 में कांग्रेस ने हासिल की जीत	
	कार्तिक उरांव कांग्रेस

1971 में फिर जीती कांग्रेस	
	कार्तिक उरांव कांग्रेस

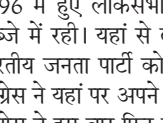
	लालू उरांव भारतीय लोकदल
---	----------------------------

1980 में फिर से कार्तिक उरांव जीते	
	कार्तिक उरांव कांग्रेस

1984 में भी जीती कांग्रेस	
	सुमति उरांव कांग्रेस

1989 में भी कांग्रेस की सुमति उरांव जीती	
	सुमति उरांव कांग्रेस

1991 में पहली बार भाजपा ने दर्ज की जीत	
	ललित उरांव भाजपा

1996 में भाजपा ने दोहराई कामयाबी	
	ललित उरांव भाजपा

बंटवारे के बाद कांग्रेस को मिली जीत	
	रामेश्वर उरांव कांग्रेस

15 साल बाद कांग्रेस ने लहराया जीत का परचम

कांग्रेस के सुखदेव ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी समीर उरांव को एक लाख से अधिक मतों से किया पराजित

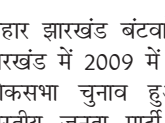
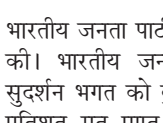
नवीन मेल संवाददाता
गुमला। 15 साल से जीत के लिए तरस रही कांग्रेस ने इस बार लोहरदगा संसदीय निर्वाचन क्षेत्र में शानदार जीत हासिल की। कांग्रेस के सुखदेव भगत ने भाजपा प्रत्याशी समीर उरांव को एक लाख से अधिक वोटों से पराजित किया। इस चुनाव में झामुमो से बगावत कर चुनाव लड़ने वाले चर्चित निर्दलीय उम्मीदवार चमरा लिंडा का प्रदर्शन कमजोर रहा। यद्यपि वे तीसरे नंबर रहे। चुनावी परिणाम की घोषणा देर रात तक होने की संभावना है। मतदाताओं ने अन्य 12 प्रत्याशियों यथा गिरजानंदन उरांव, बिहारी भगत, मनी मुंडा, महेंद्र उरांव, रामचंद्र भगत, अर्जुन टोप्पो, अप्पण देव भगत, पवन तिग्गा, मरियानुस तिग्गा, रंजीत भगत व सनिया उरांव को यथासंभव अपना आशीर्वाद दिया है। कांग्रेस प्रत्याशी सुखदेव भगत की जीत सुनिश्चित देख कांग्रेसी खुशी से झूम उठे। कार्यकर्ताओं ने एक दूसरे का मुंह मीठा करा कर व आतिशबाजी कर अपनी खुशी का इजहार किया। मतगणना परिणाम जानने के लिए भाजपा और कांग्रेस कार्यकर्ता बड़ी संख्या में अपने अपने पंडाल में उपस्थित थे। जैसे जैसे तस्वीर साफ होती गई, कांग्रेस खेमें में भीड़ बढ़ती गई। वहीं, भाजपा समर्थक में काफी मायूसी देखी गई। वे निराश होकर निकलते चले गए।

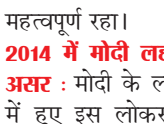
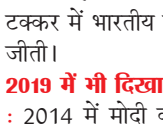
जनता बनाम मोदी सरकार के बीच थी लड़ाई : सुखदेव भगत

कांग्रेस प्रत्याशी सुखदेव भगत अपनी जीत देख अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि इस चुनाव में आदिवासी अस्मिता, जल, जंगल और जमीन का मुद्दा था। यहां लड़ाई जनता बनाम मोदी सरकार के बीच थी। लोकतंत्र में जनता ही सर्वोपरि है। इसलिए परिणाम भी सुखद निकला।

	गुमला जिला प्रशासन ने की थी व्यापक तैयारी
--	---

लोहरदगा में भी भाजपा को लगा झटका	
	भाजपा को तीसरा बड़ा झटका लोहरदगा सीट पर लगा है। पार्टी ने सीटिंग सांसद सुदर्शन भगत का टिकट काटकर समीर उरांव को प्रत्याशी बनाया था। इस चुनाव से पहले वह राज्यसभा सांसद भी थे। यही नहीं वह वर्तमान में भाजपा अनुसूचित जनजाति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी हैं। इसके बावजूद उन्हें इंडिया गठबंधन के कांग्रेस प्रत्याशी सुखदेव भगत से मात खानी पड़ी

2009 से 2019 तक सुदर्शन भगत भाजपा से रहे सांसद		
	बिहार झारखंड बंटवारे के बाद झारखंड में 2009 में दूसरी बार लोकसभा चुनाव हुआ। इसमें भारतीय जनता पार्टी ने अपने उम्मीदवार को बदला। इस बार भारतीय जनता पार्टी ने सुदर्शन भगत को अपना उम्मीदवार बनाया। सुदर्शन भगत ने इस सीट पर कुल 27.7 फीसदी वोट हासिल करते हुए जीत हासिल की। यहां निर्दलीय उम्मीदवार चमरा लिंडा ने 26.11 फीसदी वोट प्राप्त किए। वहीं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के रामेश्वर उरांव को 24.8 की प्रतिशत मत प्राप्त हुए। 2009 का लोकसभा चुनाव इस सीट के लिए काफी	
	सुदर्शन भगत भाजपा	

	महत्वपूर्ण रहा। 2014 में मोदी लहर का दिखा असर : मोदी के लहर में 2014 में हुए इस लोकसभा सीट पर	
---	--	---

निष्पक्ष मतगणना के लिए गुमला जिला प्रशासन की ओर से व्यापक तैयारी की गई थी। लोहरदगा संसदीय सीट पर भारतीय जनता पार्टी, कांग्रेस पार्टी और निर्दलीय प्रत्याशी चमरा लिंडा समेत कुल 15 प्रत्याशियों के भाग का फैसला होने वाला था। इस सीट पर शुरू से ही भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस के बीच कड़ी टक्कर की उम्मीद की जा रही थी। इन सबके बीच निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर चमरा लिंडा के मैदान में उतरने से स्थिति त्रिकोणीय हो गई थी। लेकिन, कांग्रेस प्रत्याशी सुखदेव भगत ने बाजी मार ली।

2019 में मोदी के काम के आसार पर चुनाव तो हुआ हालांकि इस सीट पर भाजपा के सुदर्शन भगत ने जीत को दर्ज की। लेकिन जीत का अंतर बहुत ज्यादा पर पार्टी ने भारतीय जनता पार्टी को 2019 के लोकसभा चुनाव में 45.5 फीसदी मत इस लोकसभा क्षेत्र में मिले थे। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपनी उम्मीदवार का बदलाव करते हुए सुखदेव भगत को अपना उम्मीदवार बनाया था। जिन्हें 44.20 रिपोर्ट यहां प्राप्त हुए थे। काफी कांटे की टक्कर में 2019 की सीट बीजेपी के कब्जे में आई थी।



पलामू

पलामू लोकसभा सीट पर अभी बीजेपी का कब्जा है। लेकिन इस सीट पर 6 बार से ज्यादा कांग्रेस जीत दर्ज कर चुकी है। जानिए इस सीट पर 1952 से अब तक किसका कब्जा रहा है। झारखंड की पलामू लोकसभा सीट का इतिहास काफी पुराना है। आजाद भारत के पहले आम चुनाव के बाद से ही पलामू राजनीति की केंद्र में रहा है। पलामू सीट पर पहले कांग्रेस का कब्जा रहा, फिर राजद और अब यह सीट बीजेपी के पाले में है। 1952 से अब तक हुए चुनावों में यहां सबसे ज्यादा छह बार कांग्रेस पार्टी ने चुनाव जीते हैं। वहीं भाजपा ने पांच बार इस सीट पर कब्जा किया है।

पलामू लोकसभा सीट का सफरनामा

पलामू लोकसभा सीट			
1952-1977			
जीते		हारे	
जेटन सिंह खरवार	1952	एलिस कुजुर	
गजेन्द्र प्रसाद सिन्हा	1952	झावन सिंह	
गजेन्द्र प्रसाद सिन्हा	1957	रामावतार शर्मा	छोटानागपुर संसदीय क्षेत्र पलामू जनता पार्टी
शशांक मंजरी	1962	गजेन्द्र प्रसाद सिन्हा	
कमला कुमारी	1967	जे. राम	
कमला कुमारी	1971	रामदेव राम	
रामदेवी राम	1977	कमला कुमारी	

पलामू लोकसभा सीट			
1980-1999			
जीते		हारे	
कमला कुमारी	1980	रामदेवी राम	
कमला कुमारी	1984	रामसुंदर दास	
जोरावर राम	1989	रामदेव राम	
रामदेव राम	1991	जोरावर राम	
ब्रजमोहन राम	1996	उदय नारायण चौधरी	
ब्रजमोहन राम	1998	उदय नारायण चौधरी	
ब्रजमोहन राम	1999	जोरावर राम	

झारखंड बनने के बाद पलामू लोकसभा सीट			
जीते		हारे	
मनोज कुमार भुईयां	2004	ब्रजमोहन राम	
घूरन राम	2007	कामेश्वर बैठा	
कामेश्वर बैठा	2009	घूरन राम	
विष्णु दयाल राम	2014	मनोज कुमार	
विष्णु दयाल राम	2019	घूरन राम	

1957 चुनाव में जीते गजेन्द्र प्रसाद



गजेन्द्र प्रसाद सिंह
कांग्रेस

1952 के बाद 1957 में फिर से चुनाव हुए। इस लोकसभा चुनाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गजेन्द्र प्रसाद सिंह फिर से यहां से विजयी हुए। इस चुनाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को कुल 40.8 प्रतिशत वोट मिले। छोटा नागपुर संथाल परगना जनता पार्टी के उम्मीदवार राम अवतार शर्मा को 24.8 फीसदी वोट मिले, जबकि झारखंड पार्टी को 15.1 फीसदी वोट मिले।

1962 लोकसभा चुनाव



शशांक मंजरी
स्वतंत्र पार्टी

1962 के चुनाव में स्वतंत्र पार्टी के उम्मीदवार शशांक मंजरी पलामू के सांसद बने। उन्हें कुल 56.1 फीसदी वोट मिले। जबकि पहली और दूसरी लोकसभा चुनाव में विजयी रहे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सांसद गजेन्द्र प्रसाद सिंह को हार का सामना करना पड़ा, उन्हें कुल 25.6 फीसदी वोट मिले।

1967 से चार बार जीतीं कमला कुमारी



कमला कुमारी
कांग्रेस

1967 के लोकसभा चुनाव में पलामू सीट पर फिर से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने कब्जा जमाया। हालांकि इस बार कांग्रेस ने अपना उम्मीदवार बदल दिया था और कमला कुमारी को मैदान में उतारा था। कांग्रेस उम्मीदवार को कुल 41.2 फीसदी वोट मिले, जबकि संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी को 22.6 फीसदी वोट मिले।

1971 लोकसभा चुनाव : 1971 के लोकसभा चुनाव में यहां एक बार फिर से कांग्रेस की जीत हुई और उसकी उम्मीदवार कमला कुमारी को पूरे 50 फीसदी वोट मिले। दूसरे स्थान पर भारतीय जनसंघ रहा, जिसके उम्मीदवार रामदेव राम को 30 फीसदी वोट मिले।

1980 लोकसभा चुनाव : 1980 के चुनाव में कांग्रेस ने एक बार फिर अपनी खोई हुई सीट पर कब्जा कर लिया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी) की कमला कुमारी को 47 प्रतिशत वोट मिले, जबकि रामधनी राम को 30.5 फीसदी वोट मिले। उन्होंने पार्टी बदल ली थी और जनता पार्टी से चुनाव लड़ा था।

1984 लोकसभा चुनाव : 1984 के चुनाव में कांग्रेस दोबारा जीतकर आई। कांग्रेस की कमला कुमारी को 71.2 फीसदी वोट मिले। जबकि जनता पार्टी के रामसुंदर दास यहां से चुनाव मैदान में थे और उन्हें 19.5 फीसदी वोट मिले।

1977 में रामदेवी राम जीते



रामदेवी राम
भारतीय लोक दल

1977 के लोकसभा चुनाव में पलामू में बदलाव हुआ और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की लगातार दो बार विजयी रहीं कमला कुमारी को इस बार हार का सामना करना पड़ा। पलामू सीट पर भारतीय लोकदल के उम्मीदवार रामदेवी राम ने जीत हासिल की। उन्हें कुल 76.01 फीसदी वोट मिले। जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की कमला कुमारी को सिर्फ 14.7 फीसदी वोट मिले।

1989 में जीते जोरावर राम



जोरावर राम
जनता दल

1989 के लोकसभा चुनाव में पलामू में एक बार फिर परिवर्तन हुआ और यह सीट जनता दल के खाते में चली गयी। जनता दल के जोरावर राम ने सीट पर कब्जा जमाया। जिन्हें कुल 36.5 फीसदी वोट मिले। जबकि भाजपा के रामदेव राम को 27.9 फीसदी वोट मिले। जबकि कांग्रेस आई की कमला कुमारी को 22.8 फीसदी वोट मिले।

1991 में रामदेव राम ने कमल खिलारा



रामदेव राम
भाजपा

90 के दशक में पलामू सीट पर एक बार फिर परिवर्तन हुआ और 1991 के लोकसभा चुनाव में यह सीट भाजपा के खाते में गयी। भाजपा के रामदेव राम को कुल 37.3 फीसदी वोट मिले। दूसरे स्थान पर जनता दल के जोरावर राम रहे, जिन्हें कुल 31.6 फीसदी वोट मिले। जबकि इंडियन नेशनल कांग्रेस की कमला कुमारी को 13.4 फीसदी वोट मिले।

1996 में जीते बृजमोहन राम



बृजमोहन राम
भाजपा

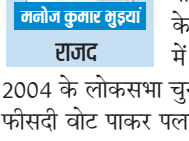
इस चुनाव में भाजपा ने 42.4 फीसदी वोट पाकर इस सीट पर फिर कब्जा कर लिया, हालांकि भाजपा ने यहां से अपना उम्मीदवार बदल दिया था। 1991 में भाजपा के सांसद रामदेव राम की जगह बृजमोहन राम को टिकट दिया गया। जबकि दूसरे स्थान पर जनता दल से उदय नारायण चौधरी चुनाव लड़े थे और उन्हें कुल 31.20 वोट मिले थे।

जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के राधा कृष्ण किशोर को केवल 10.5% वोट ही मिल सके।

1998 लोकसभा चुनाव : 98 के चुनाव में भाजपा ने पलामू सीट पर जीत हासिल की। भाजपा के बृजमोहन राम को कुल 52.6 फीसदी वोट मिले। जबकि राजद के उदय नारायण चौधरी को कुल 39.20 वोट मिले थे।

1999 लोकसभा चुनाव : 99 के चुनाव में पलामू सीट भाजपा के कब्जे में ही रही। यहां से भाजपा के बृजमोहन राम को 52.6 फीसदी वोट मिले। वहीं इस बार राजद ने अपना उम्मीदवार बदल कर जवाहर राम को टिकट दिया था, जवाहर राम को यहां कुल 36.01 फीसदी वोट मिले।

झारखंड बनने के बाद जीते मनोज

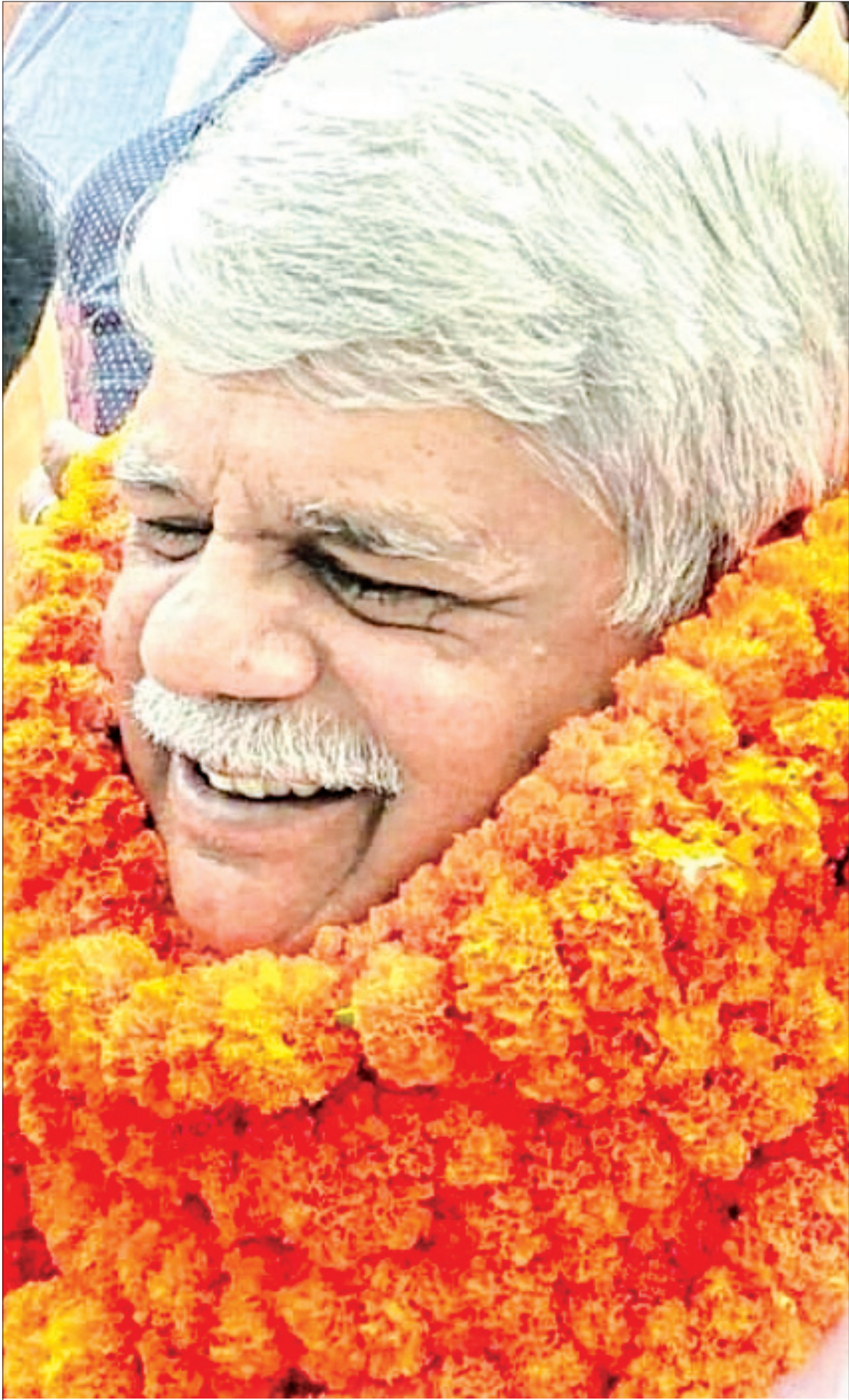


मनोज कुमार भुईयां
राजद

झारखंड विभाजन से पहले भाजपा पलामू सीट पर लगातार चार लोकसभा चुनावों में विजयी रही थी। 1991, 1996, 1998 और 1999 में हुए लोकसभा चुनाव में पलामू सीट भाजपा के पास रही। लेकिन बिहार-झारखंड के बंटवारे के बाद 2004 में हुए पहले लोकसभा चुनाव में पलामू सीट राजद के खाते में चली गयी।

2004 के लोकसभा चुनाव में राजद के मनोज कुमार भुइयां ने 32.2 फीसदी वोट पाकर पलामू सीट से जीत हासिल की थी।

वीडी राम की हैट्रिक, ममता को 288807 मतों से हराया



नवीन मेल संवाददाता। पलामू पलामू (अनुसूचित जाति) लोकसभा निर्वाचन को लेकर जीएलए कॉलेज में मतों की गिनती हुई। मतगणना के पश्चात जो रिजल्ट आए, उसकी उम्मीद धंधुली सी पहले से ही थी, लेकिन मतों की गिनती के बाद पूरी तरह साफ हो गयी। वीडी राम हैट्रिक जमा गए। 288807 मतों से चुनाव जीते। विष्णुदयाल राम को 770362 मत मिले, जबकि राजद की ममता भुइयां को 481555 वोट प्राप्त हुए। इस प्रकार वीडी राम को 288807 मतों से जीत हासिल हुई। पहली बार चुनाव लड़ रही राजद उम्मीदवार ममता भुइयां का प्रयास बेहतर रहा। 2019 के लोकसभा चुनाव में राजद से चुनाव लड़े घुरन राम के मुकाबले काफी अधिक मत लाकर ममता ने लोगों को चौका दिया। हार से निराश नहीं होकर कमियों को ठीक करने में ममता जुट गयी है। वीडी राम 2014 के बाद 2019 में इन्होंने इस सीट से जीत हासिल की थी। संभावना था कि 2019 में आए वोट

के रिकार्ड को इस बार के चुनाव में तोड़ देंगे। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। वे अपने रिकार्ड को तोड़ने से चूक गए। बता दें कि 2019 के चुनाव में वीडी राम ने रिकार्ड 4 लाख 77 हजार से अधिक मत से चुनाव जीते थे। सुबह में मतों की गिनती शुरू होने के साथ ही वीडी राम ने बढ़त बना ली थी। यह सिलसिला अंतिम यानि 22वें राउंड तक चली। पहले राउंड में वीडी राम 5848 वोट से आगे थे। ममता भुइयां को 2675, जबकि वीडी राम को 8523 मत मिले थे। इस सिलसिले को वीडी राम अंत तक बरकरार रखें और राउंडवार बढ़त बनाये रखें। मतों की गिनती शुरू होने के बाद से ही भाजपा उम्मीदवार वीडी राम बढ़त बनाए हुए हैं। यह सिलसिला लगातार चल रहा है।

नौ उम्मीदवार चुनाव मैदान में थे : पलामू लोकसभा सीट के लिए नौ उम्मीदवार चुनाव मैदान में थे। मुख्य मुकाबला भाजपा के उम्मीदवार वीडी राम एवं राजद कैडिडेट

ममता भुइयां के बीच ही था। नक्सली कमांडर रहे पूर्व सांसद एवं बसपा उम्मीदवार कामेश्वर बैठा चुनाव मैदान में थे, हालांकि प्रतिष्ठा के अनुसार उन्हें वोट नसीब नहीं मिला। 34093 वोट से संतोष करना पड़ा। पलामू लोकसभा के सामान्य प्रेक्षक रेम्या मोहन, जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त शशि रंजन की देखरेख में मतगणना हुई। एसपी रीष्मा रमेशन खुद सुरक्षा व्यवस्था संभाल रखी थी। एक एक करके स्ट्रांग रूम से ईवीएम कार्ट्रिंग हॉल में लाए जा रहे थे। गिनती पूरी होने के बाद उसे दूसरी जगह शिफ्ट किये जा रहे थे।

पलामू लोकसभा में कुल छह विधानसभा सीटें : ज्ञातव्य है कि पलामू लोकसभा अंतर्गत कुल छह विधानसभा क्षेत्र डालटनगंज, विश्रामपुर, हुसैनाबाद, छतरपुर, गढवा एवं भवनाथपुर आते हैं। मतों की गणना हेतु 124 टेबल बनाये गये थे। वहीं पोस्टल बैलट के माध्यम से प्राप्त मतों की गणना 28 टेबल पर किए गए।

2009 में जीते कामेश्वर बैठा

2009 के लोकसभा चुनाव में राजद पलामू से हार गई। यहां राजद ने अपना उम्मीदवार बदल दिया था, राजद ने घूरन राम को अपना उम्मीदवार बनाया था। इस चुनाव में पलामू लोकसभा सीट से झारखंड मुक्ति मोर्चा के

कामेश्वर बैठा ने जीत हासिल की, जिन्हें कुल 25.8 फीसदी वोट मिले, जबकि राजद को 22.02 फीसदी, झारखंड विकास मोर्चा को 13.99 फीसदी और जनता दल यूनाइटेड को 10 फीसदी वोट मिले।



कामेश्वर बैठा
झारखंड मुक्ति मोर्चा

2014 से पलामू सीट पर काबिज हैं वीडी राम



विष्णु दयाल राम
भाजपा

भारतीय राजनीति में मोदी लहर का चुनाव माना जाता है। इसका असर पलामू में भी देखा गया। पलामू से भाजपा के विष्णु दयाल राम, जो भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी भी थे। उन्होंने पलामू सीट से जीत हासिल की। उन्हें कुल 48.8 फीसदी वोट मिले। जबकि राष्ट्रीय जनता दल के मनोज कुमार को 21.8 फीसदी और झारखंड विकास मोर्चा के घूरन राम

को 16 फीसदी वोट मिले।

2019 लोकसभा चुनाव : 2019 के चुनाव में भी पलामू सीट भाजपा के खाते में गई थी। 2014 चुनाव के विजयी उम्मीदवार विष्णु दयाल राम को भारतीय जनता पार्टी ने फिर अपना उम्मीदवार बनाया और भाजपा को कुल 62.5 वोट प्राप्त हुआ। दूसरे स्थान पर राजद के घूरन राम रहे, जिन्हें 23 फीसदी वोट मिले।



कार्यकर्ताओं ने मनाया जश्न